कल्पभाष्य ॥

अर्थात्

भाषा कल्पसूत्र ॥

———ooo———

श्रील श्रीयुत राजा डालचन्दजीकी आज्ञानुसार कवि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र राजा शिव-प्रसाद सितारे हिन्द

की आज्ञानुसार छापागया ॥

———ooo———

"धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु प्रपूरय धर्म्म शंखम् प्रसारय धर्म्म ध्वजाम् प्रताडय धर्म्म दुन्दुभिम्,, ॥

"घड़ी न लब्भै अग्गली । इंदह अरकै वीर ॥ इम जाणी जिउ धर्म्म कारि । जां लग वहइ सरीर,, ॥

———ooo———

KALPASÚTRA

Translated into Bháshá by Kávi Raychand under the patrongage

OF RÁJÁ DÁLCHAND.

Printed and published for his great grandson

RÁJÁ SIVAPRASÁD C. S. I.

———ooo———

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखानेमें छपा

दिसम्बर सन् १८८७ ई०

(जिसको चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशीनवलकिशोर से मंगाले)

कल्पभाष्य

अर्थात्

भाषा कल्पसूत्र

———ooo———

श्रील श्रीयुत राजाडालचन्दजी की आज्ञानुसार
कबि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र
राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द

की आज्ञानुसार छापा गया ॥

———ooo———

"धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु प्रपूरय धर्म्म शंखम् प्रसारय धर्म्म ध्वजाम् प्रताडय धर्म्मं दुन्दुभिम्" ॥

"घड़ी न लब्भै अग्गली। इंदह अरकै बीर ॥ इम जाणी जिउ धर्म्म करि। जां लग वहइ सरीर," ॥

———

KALPASÚTRA

Translated into Bháshá by Kavi Raychand under the patronage

OF RÁJÁ D. ÁLCHAND.

Printed and published for his great grandson

RÁJÁ SIVAPRASÁD. C. S. I.

———ooo———

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

दिसम्बरसन् १८८१ ईसवी

(जिसको चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशीनवलकिशोर से मंगाले)

कुछ बयान अपने खानदान का और कारण इस ग्रंथ के छपने का॥

पुराने कागज़ों से मालूम होता है कि जयपुर की अमलदारी में रणथंभौर के बीच जो एक बड़ा मशहूर क़िला है संवत् १०४५ के दर्मियान परमार वंशी श्रीखेश्वरी श्रेष्ठि धांधल हुआ। उसके कोई लड़का न था जैन धर्म पालक पूज्य श्रीजय प्रभु सूरिगुरु के प्रतिबोध से अछुप्ता देवी की आराधना की देवी ने स्वप्न में वरदिया देवीके हस्तपुट में पत्र पुष्प और गोखरु था इसी से जब लड़का हुआ उसका नाम गोखरु रक्खा और उसी से गोखरुगोत्र चला। सम्वत् १०६१ में देहरा बनाया जयप्रभु सूरिने प्रतिष्ठा कराई श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकाला। उस का लड़का धर्मण उसका कर्मण उसका पुहपा उसका भग्गा उसका अक्का उसका तोला उसका मेहका उसकाहीरा उसका मेघा उसका भाणा। जबसंवत् १३३५ में सुलतानअलाउद्दीन ख़िलजी ने रणथंभौर का क़िला तोड़ा भाणा अपने लड़के नायक समेत बादशाह के साथ चंपानेरचला आया। नायकका बेटा खीमा उसका जयवन्त उसका बीरा उसका गोरा संवत् १४८५में अहमदाबाद में आ बसा उसका बेटा अभयड़ उसका बासा उसका बस्ता उसका बहला उसका शिवसी उसका कर्मसी उसका रांका उसका श्रीवन्त उसका पदमसी। सम्वत् १६८४ में पदमसी साह खंभात में आबसा। वहां उसने श्री कल्याणसागर सूरि से श्रीपार्श्वनाथ स्वामी का स्फटिकमयबिम्ब प्रतिष्ठित कराया पांच सोने की कल्प सूत्र और चार मोतीके पूठे भेट किये श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकालापुस्तक भंडारभरा। उसके दो बेटे थे श्रीपति और अमरदत्त। अमरदत्त ने शाह जहांबादशाह को एक ऐसा हीरा नज़र दिया कि बादशाह ने प्रसन्न होकर राइ की पदवी बख़्शी और दिल्ली ले गया। उसके दो लड़के हुएराइउदयचन्द औरकेसरी सिंह। राइउदय चन्दके चार लड़के राइजगत् मित्रसेन सभाचन्द फ़तहचन्द औरराय सिंह। फ़तहचन्दने क़हतसाली में ग़ल्लासस्ता करनेकेकारण मुहम्मदशाह से जगतसेठ की पदवी पाई लेकिन अपनीबहूबेटेसमेत मुर्शिदाबाद में अपने मामू सेठमाणिकचन्द नागौर वाले हीरानन्दसाहके बेटे की गोदजाबैठे। हीरानन्द साहकी बेटी धनबाई राइ उदय चन्दको ब्याही थी। राइसभाचन्दके राइअमरचंद औरराइअमर चंदकेराइमुहकम सिंह और राजा डालचन्द। नादिरशाही में घरके दो आदमी क़तल होनेके कारण राइ मुहकमसिंह और राजा डालचन्द दिल्लीछोड़कर मुर्शिदाबाद आबसे। निदान

शाहजहांसे लेकर मुहम्मद शाहतक बल्कि नामको शाहआलम और नव्वाबवज़ीर आसिफुद्दौला तक बादशाही जवाहिरख़ाने की मुक़ीमी तोशख़ानदानी उहदा रहा लेकिन और भी बहुतसे काम भाई बेटे भतीजोंके सपुर्द थे कोई मंसबदार था कोई सूबों की साइरका इजारदार था कोठियां जाबजा जारी थीं ख़ज़ाने हाथमेंथे चैनसे गुज़रती थी धनदौलत रखने की मानो जगह बाक़ी न रही थी। इस अर्से में बंगाले के सूबेदार नव्वाब नाज़िम क़ासिमअलीख़ांने जुल्मपर कमरबांधी अत्यन्त तंगआई ज़नाने में हरदम ख़ौफ़ लगा रहता था कि नव्वाब बेइज़्ज़त न कर डाले नाचार अंगरेज़ोंसे जा मिले रुपये की मददकी नव्वाब पर चढ़ा लाये नव्वाबको ख़बर होगई राइ मुहकम सिंहका परलोक होचुकाथा राजा डालचन्द और जगतसेठ फ़तहचन्दके पोते जगत सेठ महताबरायको पकड़ मंगाया और क़ैद किया। घरमें सलाह हुई कि राजा डालचन्द अपने बापके अकेलेहैं और जगतसेठ फ़तहचन्दकी औलाद बहुत पस पहरे वालों को मिलाकर राजा डालचन्दके बदले जगतसेठ महताबरायके चचेरे भाई स्वरूपचन्द तोक़ैदख़ानेमें चले आये (क्या समय था) और राजा डालचन्द वहांसे भाग कर बनारस में नव्वाब वज़ीर सूबेदार अवध की हिमायत में आबसे। क़ासिमअली ख़ां इतनाही जानताथा की दो भाई जगत सेठ क़ैद हैं जब भागा तो दोनों को साथ लेलिया मुंगेर पहुंचकर तीरों से मारडाला। चुन्नी नाम एक ख़िदमतगार साथ था जुदा होने को बहुत समझाया न माना जब नव्वाब तीर मारता था सामने आ खड़ा होताथा मानो दोनों भाइयों की ढाल बनताथा जब चुन्नी मरकर गिर लियाहै तब दोनों भाइयोंके तीर लगाहै (कैसे नौकर थे!) हमारी दादी कहतीथीं कि उस काल ज़नाने में सबलोग बारूत बिछाकर बैठेथे कि जो नव्वाब के आदमी बेइज़्ज़त करने को आवें आग लगाकर उड़जावें परन्तु भगवान की कृपा से जल्दही शहरमें अंगरेज़ों की डौंड़ी पिटी लोगों के जी में जी आया सुखाधान फिर लहलहाया यह राजा डालचन्द हमारे घराने के मानो भूषण होगये अजब पुरुष थे तत्वज्ञान और योगाभ्यास के प्रभाव से कहते हैं कि उनके पांवके नीचे चींटी नहीं मरती थी खेचरी सिद्ध हुईथी जिह्वा भृकुटीके मध्य तक पहुंचतीथी आसनादिक और धोती नेती बज्रोलीकी क्या बातहै सब सिद्धथी और खेचरीही मुद्रा करके देहत्याग किया संस्कृत पारसी अरबी बङ्गला बृजभाषा अच्छी तरह जानतेथे ज्योतिष और बैद्यक में भी निपुणथे बहुतेरे ग्रन्थ नयेरचे बहुतेरे तर्जुमा अर्थात् भाषान्तर हुये हाथी घोड़े की सवारी लकड़ी बांक पटा तीरंदाज़ी गाना बजाना तैरना सब में पूरे थे घड़ीसाज़ की क्रिया बढ़ई की सुनार की लुहार की जड़िये की पटुए की बेगड़ी की दर्ज़ी की ज़र्दोज़ की मुलम्मेसाज़ की मुसव्विर की सारी क्रिया अपने हाथसे कर सकते थे और फिर वैसेही उदार और शूरभीथे जिस समय राजा चेतसिंह और वारन् हेस्टिंग्ज़का बखेड़ा हुआ नव्वाब इबराहीम अलीख़ां ने कहला भेजा कि हम

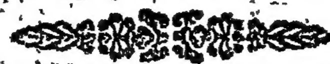
बरन् हेसिंगज़् की रिफाकत के बाइस नाहकमारेजातेहैं उसी दम ज़नाना डाला भेजकर चुपचाप बुलवा लिया और अपने मकान में छुपा रक्खा ऐसे समय में कौन किस के साथ दोस्ती निभाताहै और साहस करके अपनी जान ख़तरे में डालता है। उनके बेटे राजा उत्तमचन्दने जिन्होंने लखनऊ वाले राजा बछराज की बेटी ब्याही थी पुत्रही न होने के कारण अपनी बहिन बीबी रत्न कुंअर के बेटे बाबूगोपी चन्दको गोद लिया और उन्हीं के बेटे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३)ने अपने दोनों पुत्र कुंवर सच्चित्प्रसाद और कुंवर आनन्द प्रसाद की बहुएं और अपनी बहिन बीबी गोबिन्द कुंवर के ख़ातिर जोजैनधर्म की निरन्तर अबलम्बी हैं इस ग्रन्थको कि जबसे राजा डालचन्द ने भाषा में बनवाया था एकही प्रति घर में रहा था उद्धार करके अर्थात् छपवाके अमर किया जो पढ़ें सुनें दया करके असीस दें कि धर्म में रतिरहे परलोक सुधरे और कुबुद्धि कभी पास न फटकने पावे शुभंभूयात् ॥

इति

—०○०—

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

अथ कल्पभाष्य लिख्यते ॥



चौपाई ॥

जै जै जैन धर्म्म हितकारी । संघचतुर्विधिजिहिअधिकारी ॥
साध्वी साधु श्राविका श्रावक । यहीचतुर्विधि संघ प्रभावक ॥
नराकार सो धर्म बखाना । जाके बारह अंग प्रधाना ॥
बदन पंच प्रानरु द्वै हाथा । बुधिचित आतमद्वैपदसाथा ॥

दो० रत्नत्रय जासौं कहैं । ज्ञान दरस चारित्र ॥
धर्म भूप नररूप कौ । कहिये बदन पवित्र ॥
हिंसा मिथ्यावाद अरु । चोरी मैथुन वाध ॥
औरपरिग्रह कौ तजन । पंच महाव्रत साध ॥
ये कहिये ता पुरुषके । पांचौ प्राण प्रमान ॥
दान सील तप भावना । दोनौं हाथ बखान ॥
दान दया तीजौदमन । ये जे तीन दकार ॥
बुद्धि चित्त आतम लहौ । ता नर कौ आधार ॥
विनयविवेकविचारजुत । अरु निश्चयबिवहार ॥
येई ता नर धरम के । चरनबरन सुखसार ॥
धर्मसिरोमनिसुभसमय । पर्व पजूसन जान ॥
ताकीमिति विस्तारसौं । भाखौं सुनौं सुजान ॥
चारिमास चौमास के । दिवस एकसौ बीस ॥
उत्तम मध्यम सत्तररु । अधमपचास बुधीस ॥
अधिक मासजो होयतौ । ताकी गिनती नाहिं ॥
आसाढ़ी पून्यो हिलें । दिनगिनगिनतीमाहिं ॥

सुथलस्वच्छपंकिलरहित । शंढ स्त्री बिनुहोय ॥
सूछम जीव न ऊपजै । निर्जन थंढिल सोय ॥
औरसुराजसुभिच्छजहं । भिच्छा सुलभा होय ॥
बैदभलौ औखद सुलभ । जहां पाइये सोय ॥
गृहपतिसधनसअन्नजहं । सुजन समागमजान ॥
स्वाध्यायगोरस सुलभ । और रहित अपमान ॥
ऐसे तेरह गुन सहित । औगुन रहितसुदेस ॥
भूमि पाय सुख बासह्वै । बसै साध धर्मेस ॥
भादौअसित तिरोदसी । आदि आठदिनजोय ॥
सुदी पंचमी अंत दिन । पर्व पजूसन सोय ॥
इनआठों दिन मैं जती । जिनजनसनमुखहोय ॥
कल्पसूत्र कौ अर्थ सब । बरनि बखानै सोय ॥
आठदिवसबिस्तारकरि । येई अरथ निदान ॥
सुभइतिहाससमेतअरु । संह दृष्टांत बखान ॥
आठ दिना मैं पंच कृत । करैं करावैं संत ॥
जैन चतुर्विधि संघ के । परंपरा कौ तंत ॥
मनकेथिरपर नामकरि । दानसील तप भाव ॥
अष्टम तपआचरनकरि । यथाशक्ति चितचाव ॥
अठयें दिनके अंत मैं । कल्प सूत्र सिद्धांत ॥
बारहसैसोरह सहित । हितकरिसुनैनितांत ॥
सुनिवरसीपडकमनकरि । आपुसमैं सब लोक ॥
खिमैं खिमावैं परसपर । वरसदोष तजिसोक ॥
जैसे पूरब काल मैं । नाग केत इतिहास ॥
ब्रतप्रभावतै जिनलह्यो । अचलपरम पदबास ॥

अथ नागकेत कथा ॥

चौपाई ॥

चन्द्रकांति नगरी इक राजै । बिजयसेनजहंनृपति बिराजै ॥

शांत दांत श्रीकांत सेठ जहं । धर्मसील गुनवंत बसे तहं ॥
ज़ाकी सुभश्री सखी सिठानी । गुन वय रूप सीलमनमानी ॥
ताके गर्भ अर्भ इक भयो । पूरब पुन्य आय फल दयो ॥
आनद मुदमय सेठ सिठानी । पर्व पजूसन नियरो जानी ॥
आपुस में मिलि भाखन लागे । पूरब पुन्य जगत के जागे ॥
हमहूं अब अष्टम तप धारें । जनममरन को दुखनिरवारें ॥
यहधुनिसुनिशिशुहूंचितधारयो ।जातिस्मरितपकरनबिचारयो ॥
पर्व पजूसन दिन आयो जब । सेठ सिठानी व्रत कीनो तब ॥
तज्यो मायको पय बालकहूं । लखिदुखपायोपितुपालकहूं ॥
सिसुमृदुतनतपताप न सहिके । मुरछिपरयोधरनीपर गिरिके ॥
सेठ बिकल ह्वै बैद बुलायो । चेत्यो नहिं उपचार करायो ॥
तब निरास ह्वै बालहिछाड्यो । पितादुखित ह्वै मरनोमाड्यो ॥
सोनिपुत्र घर भयो जानिनृप । अर्थ लैनको छांडि दई कृप ॥
क्रूर दूत धन लैन पठाये । ते सब सेठ द्वार पर आये ॥
सिसु तपबल इन्द्रासनचाल्यो । अवधिज्ञान तबइन्द्रसभाल्यो ॥
सिसु पूरबभव को सब जानो । सभा प्रमुखसो सबै बखानो ॥
बनिक पुत्र हो यह पूरब भव । अपर मात के दुःख दह्योदव ॥
सोदुखतिन निजमित्रसुहृदसों । कह्योसह्योनहिंतिन भाखो यों ॥
पूरब सुकृत न संचित तातें । यह दुख लहत अपरमातातें ॥
यहसुनितिनतपकरनबिचारयो। अतिसुभ ध्यानहियमें धारयो ॥
पर्व पजूसन नियरें आयो । ताकोंव्रत करिहों मनभायो ॥
धारिध्यान नृप गृह में सोयो । द्वेष दृष्टि तिहि माता जोयो ॥
दीपक बारन के मिस आई । तालन गृह में आगि लगाई ॥
सो जरि मरि श्रीकांत सेठ घर।पुत्र होय जनम्यो सो नरबर ॥
यह कहिसुरपति निजजन प्रेरे । राजदूत तिन किये अनेरे ॥
सुरपति हूं नरपति ढिग आये । आय कही क्यों दूत पठाये ॥
राजनीति की नृप दै साखो । सुरपतिसों यह भाखर भाखी ॥

जागृहस्थ को जियै न बालक। ताकेधन कौ राजा मालक॥
सुनि सुरपतिसिसु कथा सुनाई। पूरव भवकी सब बतलाई॥
यों कहि ता बालकहिं जिवायो। नागकेत तिहिनाम बतायो॥
पुनि सुरपति निज धामसिधारे। नृप हू अपने जन निरवारे॥
उत्तर क्रिय पितुकी सुतकीनी। धरममरनविधिसिरधरिलीनी॥
आठैं चौदस ब्रत प्रति मासा। षट ब्रत चातुर मास निवासा॥
पंच महा ब्रत पालन लाग्यो। धर्म प्रभाव तासु जसजाग्यो॥
इक दिन राजा इक जनमारयो। सिर कलंक चोरीकौ धारयो॥
सो दुर्गति लहि ब्यंतर भयो। अपनौ बैर नृपति सैं लयो॥
दीठ अगोचर तिन निस चारी। लात एक राजा कौं मारी।
रुधिर वमन करिनृप भू गिरयो। सभासदनलखिअचरजकरयो।
पुनि तिन ब्यंतर सिला संवारी। नगरमान लांबी बिस्तारी।
ताहि हाथलै नभदिसि भाग्यो। नगर लोगपर पटकनलाग्यो।
नागकेत अंगुरी पर लीनी। तपबलदूरिफेंकितिहि दीनी।
दूरि दुःख नृपहूं कौ कीनौ। ब्यंतरभाजि भयो बल हीनौ।
यह प्रताप सबतप कौ लहियै। निश्चयकरितपकौपथगहियै।

दो० यह संबत्सर पंचमी। अन्य मती हू लोक॥
ऋषिपंचमकहिब्रतकरत। जगमें होय असोक॥
आसाढ़ी पून्यौंहितैं। दिन पचासवों जोय॥
बढ़ै न तामैं एक दिन। घटै तु घटती होय॥

अथ ऋषि पंचमी कथा॥

दो० धम्मिलसुतद्विजएकबर। पुष्पवती थल पाय॥
रहनलग्यौसुखसौंसमय। पाय तात अरु माय॥
मरिजनमें सुत सदन मैं। एक सुनी एक बैल॥
बरस भयो पूरन सुमन। गही श्राद्धकी गैल॥
ब्रह्म भोजके हित सुसुत। स्वच्छ बनाई खीर॥
ताहिसंधिअहिबिषबमन। करिसरक्यौधरिधीर॥

सोनिहारि तिहिकूकरी। विपुलअनर्थबिचारि ॥
दौरिजुठाई खीर सो। लखिद्विजदीनीमारि ॥
मारि तोरिताकी कमर। गोसाला मैं बांधि ॥
विप्रजिवाये प्रीतिकरि। खीर दूसरी रांधि ॥
ताही दिन तावैल कौं। तिहि द्विज तेली ऐन ॥
वहन हेत भाड़े दयो। सबदिनतिहिदुखदैन ॥
मुख मैं छींका बांधिकै। फेरयो कोल्हू साथ ॥
सांझ भये आयोसदन। वदन मलीन अनाथ ॥
आपुसमैंमिलिवृषशुनो। निजनिजविथासुनाय ॥
कथासकलदुखकीकही। वेदन विपुल बलाय ॥
कटिटूटन की उनकही। सहन भूखइनप्यास ॥
लहि निरासता अन्नतैं। दोऊ भये उदास ॥
सुन्योसकल संबाद यह। ताद्विजने धरि कान ॥
जान आपने मातपितु। अतिपछ्ताय निदान ॥
भोजनदै तिनदुहुनकौं। ऋषिनपासद्विजजाय ॥
कह्योसकलवृत्तान्तजो। सुन्योसुअनसमुझाय ॥
अरुपूछीकरजोरिप्रभु। जेहिबिधिकुमतिनसाय ॥
मातपितासदगतिलहैं। सो भाषिये उपाय ॥
सुनिवेदनरिषिगनसकल। अनुकंपे लखिदीन ॥
दयादीठ दृगभरि कहे। वचनसुधा रसलीन ॥
पूरवभवइनदुहुनमिलि। कीनी केलि अकाल ॥
तातेपायो जनम इन। वृषभ शुनीको हाल ॥
अबभादौं सुदि पंचमी। ऋषिपंचमिजिहिनाम ॥
तादिनसंयम सनेम है। व्रतकरि आठौं जाम ॥
अनखेडी हलकी धरा। तामैं अन्न जु होय ॥
आपहिं तें उपजै बिपन। तादिन खैये सोय ॥
[illegible]न किगतिमिटि। संगतिलहिहै जान ॥

सुनि द्विज ज्यों हीं करि पितर । पठ ऐ सुरगनि दान ॥
ऐसैं या सुभ दिवस मैं । औरौ मति के लोक ॥
तपकरि जगत्रयतापहरि । मुकत लहत तजि सोक ॥
यातें जे जिन धरमरत । साधु साधवी जोय ॥
हितकरि श्रावक श्राविका । व्रतकरि निरमल होय ॥
कल्पसूत्र कौ पाठ अरु । अर्थ समझि सुनि कान ॥
सरम धरम को पाय पद । परम लहे निरवान ॥

दृष्टांत कथा ॥

दो० तृतिय रसायन गुन सकल । कल्पसूत्र त्यौं जान ॥
ताहू कौ विस्तार सौं । कहौं कथा सुनि कान ॥
भयो लाख अभिलाख कर्रि । इक नृपकें सुत आय ॥
चही तासु आरोग्रता । नृप त्रय बैद बुलाय ॥
तिनमैं तें इक बैद नैं । निज औषध गुन भाखि ॥
कह्यौ मातरा एक मैं । हरैं रोग यह साखि ॥
पै अरोग नर जो भखै । यह भेषज तिहिकाल ॥
नखसिखतैं सो नर सकल । होय रोग मैं हाल ॥
सुनि राजा ता बैद कौं । तुरत कियो बिदाय ॥
सोयो सिंह जगावनो । भलो न यह है राय ॥
बैद दूसरौ पुनि कह्यौ । निज औषध गुन आय ॥
रोग हरै रोगीनु कौ । बिनरुज कछु न बसाय ॥
ताहू कौ कीनौ बिदा । वृथा समझि नरराय ॥
अग्नि मांहि हवि होमि क्यौं । करनौ भसम सुभाय ॥
तब पूछ्यो नृप निज निकट । तीजौ बैद बुलाय ॥
तिन निज औषध कौ सुगुन । ऐसैं दियौ बताय ॥
रोग हरै आरोग कौं । अधिक पुष्ट करि देय ॥
रीझि नृपति बहु धन दियो । बैद हि औषध लेय ॥
जैसी औषधि तीसरी । कल्पसूत्र त्यौं मानि ॥

पाप हरै दुखछय करै । पुन्य बढ़ावै जानि ॥
तीरथ शत्रुञ्जय सकल । तीरथ मैं ज्यों सार ॥
अभय दान ज्यों दान मैं । मंत्रन मैं नवकार ॥
ब्रह्मचर्य ज्यों ब्रतनमैं । बिनयगुननके माहिं ॥
नियमन मैं संतोष तप । छमा सरीखो नाहिं ॥
तत्वन मैं सम्यक्त त्यों । पर्ब्ब पजूसन जान ॥
चिन्तामणिसुरधेनुज्यों । धेनु रत्न मैं मान ॥
सीतासतियनमाहिंअरु । गीताग्यानन माहिं ॥
छायाधर तरुमांहि ज्यों । कल्पवृक्ष की छाहिं ॥
त्योंहीं सब सिद्धांत मैं । कल्प सूत्र सिद्धांत ॥
सब आगमके सारकौं । सार निहारि नितांत ॥
महा बीर निरवानतें । छठैं पाठ सुख सार ॥
भए बाहुस्वामी सुखद । चौदह पूरब धार ॥
नवमैं पूरव माहिं तैं । कीनों यह उद्धार ॥
वरअठयों अध्यैन सुभ । दस श्रुतकंध मझार ॥

अथ दस कल्प वर्णन ॥

दो० कल्प अर्थ आचारहै । सो दसविधिकोजान ॥
प्रथम अचैलउदेस हू । सय्या तर त्रय मान ॥
राजपिण्डकृतिकर्म्मब्रत । जेष्ट प्रति क्रम आठ ॥
मास कल्प पजूशना । यहै कल्प दस पाठ ॥
आदि अंत जिनसाधकों । दसौं नियत ये कल्प ॥
चारिनियतजिनमध्यकौं । छह अनियत वैकल्प ॥
ते छह कहे अचेलअरु । प्रति क्रमन उद्देश ॥
राज पिंड पजूसना । मासकल्प तजि शेश ॥
शय्यातरब्रत आचरन । ज्येष्टत्व कृति कर्म्म ॥
बाइस जिनके साधको । चारिनियत यह धर्म्म ॥

(अचेल ॥)

दो० देव दूप पटइन्द्रजो । जिन कांधैंधरि देय ॥
सो गिरि परै अचैलतव । वस्त्र रहितकहि तेय ॥
यातैं जीरन चैल लहि । आदिअंतजिनसाध ॥
सेत वस्त्रलौं तनधरैं । होऊ साध अवाध ॥

अथ उद्देश का ॥

दो० साधु हेतु उद्देश करि । करै गृही आहार ॥
आदि अंत जिनसाधकौं । उचितनसोनिरधार ॥
एकै साध विशेष हित । जो उद्देश अहार ॥
सो न लेय सब साधुलैं । बाइस जिनविवहार ॥

अथ शय्या तर ॥

दो० जो श्रावक चौमासमैं । साधु रहनहितवास ॥
देय ताहि आगम कहै । शय्यातर परकाश ॥
ताशय्या तर सदनको । लेय न साधु अहार ॥
त्रितियकल्पआचारयह । चौबिसजिन बिवहार ॥

अथ राज पिण्ड ॥

दो० नृप देशाधिप सदन कौं । लेय न साध अहार ॥
आदिअंतजिन साधकौं । अतिअनुचितनिरधार ॥

अथ कृति कर्म ॥

दो० गुरु वंदनअरुपडिकमन । नित्य कर्म यहहोय ॥
गुरु लघुतासबसाधुकी । दिक्षा क्रमतैं जोय ॥
करैं परस्पर वंदना । गुरुकौंलघुसबसाध ॥
गुरुलघु साधहिंसाधवी । यह कृतकर्म अवाध ॥

अथ व्रत ॥

दो० पंच महाव्रत आचरन । आदि अंतजिनसाध ॥
मध्य जिने सरसाध के । चारै भेद अवाध ॥
मानत मैथुनकौं सकल । ते परिग्रह के मांह ॥

चारै ब्रतहीमैं गिनत । ते मैथुन की छांह ॥

अथ ज्येष्ट ॥

दो० आदि अंत जिन नाथके । साध सदिक्षा होय ॥
मासखिमन करिपंचव्रत । पालैं जानौसोय ॥
मध्य जिनेसर साध सब । दीच्छाहीलै फेर ॥
पंच महा वृत आचरैं। जैनागम विधिहेर ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

दो० आदिनाथ जिन वीरके । साधसांझ अरुभोर ॥
दुहूंकालपडिकमनकरि । ध्यावैं आतम ओर ॥
मध्य जिने सरसाधकौं। जब कछु लागे दोष ॥
ताकौं संभव जानि कैं। करैं पडिकमन पोष ॥

पर्ज्यू शण ॥

दसवौं पर्व पजुसना । प्रथम कह्यौबिस्तार ॥
कल्प सूत्र जामैं पढ़ै । सुनै सकल सुख सार ॥
आदि अंत जिननाथके । साध यथा विधियाहि ॥
करैंतथाविधि आजलौं । साधआचरन ताहि ॥
आदि अंत जिननाथके । साध दोयविधिजान ॥
सरलमूढ़ अरुबक्र जड़ । होय सुभाव निदान ॥
बाकी जे बाईस जिन । तिन के साध सुछंद ॥
सरल प्रग्यते होयसब । तिन कौं ज्ञानअमंद ॥

अथसरल मूढ़ दृष्टांत ॥

तहां प्रथम दृष्टांत सुनि । सरल मूढ़ कौं एह ॥
समझिन सरलसुभावतैं । तिनकौं बिनुसंदेह ॥
कौकण देशी साध इक । काउसग्ग तपलीन ॥
गुरुपूछीतिहिबिमल कौ । बोल्योसाध अधीन ॥
दया चिन्तवन करत हो । जबहोगृहको बास ॥
सब कारज हौंकरत हो । अबतौ भयोनिरास ॥

कृषिकरितबहौं भरतहौं। सब कुटुम्बकोपेट॥
अबकैसे कै जियत है। मोमन बड़ोखखेट॥
गुरुतब बोले साधु सों। यहचिंतौनअयोग॥
गृही कर्म कौ चिन्तवन। साधु जनन कौरोग॥
मिथ्या दुष्कृत दीजिये। कीजे शुभ परनाम॥
तहत मानि तैसैं कियो। पायो मन बिश्राम॥
सरल मूढ़ अरु बक्रजड़। दोउन कौ दृष्टान्त॥
अब भाषौं बिस्तारकरि। तिनकौभेदनितान्त॥

अथ सरल मूढ़ जड़ वक्रदृष्टांत॥

सरल मूढ़ जड़ बक्र द्वै। साध गोचरी हेत॥
गये बिहरि फिरि राहमें। बिरमिगयेनिजखेत॥
गुरुपूछी जब बिलम की। कही राह में आज॥
नट नाटक देखत भयो। एतो बिलमसमाज॥
गुरु सुनि भाषी साध को। जोगनलखिबोनाच॥
सरल मूढ़सुनि श्रवन यह। ह्वैहै बोल्योसांच॥
पै भाषी जड़ बक्र यों। यह तौ गुरुकीचूक॥
नटनर्तन पहिलै नक्यों। तुम बर्ज्यो करि कूक॥
फेर नटी के नाच मैं। इक दिनरह्योलुभाय॥
गुरु सुनिदोष तब लगे। भाषन अपनी राय॥
सरल मूढ़ बोल्यो तबै। सकुचि जोरि द्वै हाथ॥
फेर चूक हम तैं भई। कीजै नाथ सनाथ॥
दूजै बोल्यो बक्र जड़। अपनी लखत न चूक॥
नट नाटक बर्ज्यो हमैं। नटी कही कब कूक॥

अथ जड़ बक्र दृष्टान्त॥

पुनि केवल जड़ बक्रपर। औरौ इक संवाद॥
पिता पुत्र को सीष दे। कह्यो याहिरखि याद॥
बड़े कहैं सो कीजिये। फेर न दीजै ज्वाब॥

बोल्योसुतसुनि समझिकै । योहीं करिहौं बाब ॥
घरतैं निकसत एक दिन । सुतसौं कह्यो सुनाय ॥
तात बंद करि राखियो । द्वार कपाट लगाय ॥
सुनि लगाय दीने तुरत । घरके द्वार किवार ॥
सोय रह्यो सुख सदन में । जब आयो पितुद्वार ॥
रह्योपुकारिपुकारि अति । गरौ फारि हियहार ॥
सुनो तदपि बोल्योन सुत । खोले नाहिं किवार ॥
तबसो पितु चढ़िभीतपर । वढ़ि कुद्यो घरमांह ॥
बैठ्यो लखि सुत क्रोध की । छई दृगनमैं छांह ॥
सुत बोल्यो तुमही न तब । भाषी सन्मुख होय ॥
गुरु कौंज्वाब न दीजिये । रिसक्योंकीजतजोय ॥
चौथे आरे मांहि जे । बाइस जिनके साध ॥
सरल प्रग्यते होत हैं । काल स्वभावअबाधं ॥
समझिकरैं सिगरीक्रिया । ज्ञानवंत ते होय ॥
विनयवन्त बलवन्तसब । धीरज वन्ते सोय ॥
रहैं दिगंबर विनय में । तन में नेक न नेह ॥
आतम सौं तनमैं रहैं । बहैं भार लौं देह ॥

ऋज प्रग्य दृष्टान्त ॥

तिनहूं पै दृष्टान्त यह । नटनाटक को सांच ॥
गुरु मुखतैं जब उन सुनी । जोगन लखिबो नाच ॥
नटनाटकहू तिन तज्यो । नटी नाट्य हू फेर ॥
नाचमात्र सब तजिदयो । गुरुबच सुमिरि सुहेर ॥
उत्तम मध्यम अधम ये । भाव काल बस चक्र ॥
सरल मूढ़ऋजुप्रग्यअरु । तीजो है जड़ बक्र ॥

अथ ग्रन्थानुक्रमणा ॥

सो॰ प्रथम मंत्र नवकार । अर्थ सहित याग्रंथ मैं ॥
ता पाछै अधिकार । महाबीर कल्यान कौ ॥

पुनि श्रीपारस नाथ । नेमनाथअधिकारअरु ॥
कीन्हें ग्रन्थ सनाथ । आदिनाथअधिकारकहि॥
अन्तराल विस्तार । ता पाछैं थविरावली ॥
कही जैन मत सार । साध समाचारी बहुर ॥
कल्प सूत्र सिद्धान्त । ताकी ह्यालैं पीठिका ॥
करन बखान नितान्त । अब निजग्रन्थारंभभनि ॥
इति पीठिका समाप्तः ॥
ॐ नमो रिहं ताणम् ।नमो सिद्धाणम् ॥
नमो आयरियाणम् । नमो उज्झायाणम् ॥
नमोलोएसब्बसाहूणम्। एसो पंच नमुक्कारो ॥
सब्ब पावप्पणासणो । मंगला णंच सब्बेसिं ॥
पढमंहवय मंगलम् ॥
सो० मंगलोक नवकार । चौदह पूरब सार यह ॥
हरन अमंगल भार । बरनमंगला चरनअब ॥
नमो प्रथम अरि हंत । भागवंत भगवंत प्रभु ॥
आठ कर्म्म जय वंत । अष्टादश दूषणरहित ॥
चौंतिस अतिसय साथ । चौंसठसुरपतिसेव्यजो ॥
ऐसे जिन जगनाथ । हाथ जोरिबंदन करौं ॥
दूजे सिद्ध प्रसिद्ध । ज्ञानप्रबुद्ध प्रबोध कर ॥
देत ऋद्धि नव निद्ध । तिनहिं बन्दनाकीजिये ॥
जिनलहि पन्द्रह भेद । और आठ गुनहो बहुरि ॥
आठ करमको खेद । तजि दीनौतिनकौं नमौं ॥
तीजें जे आचार्य्य । त्रिकालग्य अघ तापहर ॥
छत्तिसगुणके कार्य्य । कारण तारण कौ नमौं ॥
चौथैं रहित उपाधि । उपाध्याइ जपतप क्रिया ॥
सकलअसाधहिंसाधि । सावधान तिनकौं नमौं ॥
ग्यारह अंग उपंग । बारह जे सब शास्त्र के ॥

पढ़ैं पढ़ावैं संग । द्वादश अंग अभंग बर ॥
पुनि पंचम नौकार । नमस्कार जासौं कहैं ॥
सकलसाधुसुखसार । जिनकल्पोकल्पीथविर ॥
सत्ताइस गुनवान । जेते ढाई द्वीप मैं ॥
चारित लै सुज्ञान । भये तिन्हैं बंदन करौं ॥
परमेष्ठी नव कार । येई जिन जन शास्त्रके ॥
सकल पाप संघार । होतजाप जाकौ कियैं ॥

अथ पंच कल्याणक ॥

अब पांचौं कल्यान । कहि बरनौ चितदै सुनौ ॥
परम धरमकी खानि । भरम मिटत भवभवनुको ॥
पंच कल्यानक सार । च्यवनजन्नमचारित्र पुनि ॥
ज्ञान मुक्ति आधार । चौबिस तीरथ नाथ कौ ॥
महाबीर तिहि मांह । चरम तिर्थंकरकी अधिक ॥
इक कल्यानक छांह । गर्भाकर्षण इन्द्र कृत ॥

अथ काल प्रमाण ॥

चौपाई छंद ॥

काल बिभाग जैन मत जानो । छह आरे करि भेद बखानो ॥
पहिलौ सुखम सुखमकहिनाम । ताको अवधि सद्ब बिश्राम ॥
कोड़ा कोड़ चारि जे सागर । ताकी उपमा जोग उजागर ॥

अथ सागर प्रमाण ॥

दो० पल्योपम कौ मान अब । पहिलै करौं बखान ॥
लांबोचौड़ो भमि खनि । इक इक जोजन जान ॥
तितनी हीं औंड़ी खनौ । ऐसी खात बनाय ॥
ठांसिभरौतिहिंजुगलिया। बाल बाल कतराय ॥
चक्रवर्त के कटक तैं । दाबैं दबैं न सोय ॥
सरित सलिलतापरबहैं । स्रबैं न जलकणजोय ॥
बालअग्र कोपरम अनु । प्रतिसौबरसनिकाल ॥

होवै रीतौखात जब । सो पल्योपम कमल ॥
पल्य जुकोड़ाकोड़दस । सागर मान बखान ॥
जैनागम परमान कहु । एतौ सागर मान ॥
सागर कोड़ाकोड़ जब । बीस सुनौमिति होय ॥
काल चक्रतब होयसो । परौ जानौ सोय ॥

चौपाई ॥

पहिलै सुखमसुखम आरे के । कहौ सकल गुण ता बारेके ॥
जनैं जुगलियातहं सब नारी । साथहिं इक बारौ इकबारी ॥
यद्यपि एक कूप तैं उपजैं । पै ते दूलह दुलहनि निपजैं ॥
तीन कोसकी तिनकी काया । पल्योपम त्रय आयु बताया ॥
भूख लगै तीजैं दिन तिनकौं । भरै पेट इक अरहर जिनकौं ॥
उनंचास दिन पितु अरु माता । तिनके पालन लालन राता ॥
कल्प वृक्ष फिरि तिनकौं पोषैं । यथा इच्छ तिनकौं संतोषैं ॥
इकसत छप्पन पसुरी तनमैं । पहिलें आरे में यों जन में ॥
दूजौ आरौ सुखमा नाम । कोड़ कोड़ तीन को धाम ॥
सागर ओपम ता सौ भाषैं । तिनके युगलिन की सुनि साषैं ॥
कोस दोय तन द्वै पल्यायू । दोय दिवसु पाछैं ते खाय़ू ॥
बेर मान आहार सभालैं । मात पिता चौसठ दिन पालैं ॥
कल्प वृक्ष पुनि तिनकौंलालैं । तिनकी पसुलीकीसुनि चालैं ॥
इकसत अट्ठाइस ते राखैं । अब तीजौ आरौ सुनि साखैं ॥
सुखमा दुखमा नाम अनूपं । कोड कोड द्वै सागर ओपं ॥
कोसमानतनजासु युगलिया । पल्योपम इक आयु सबलिया ॥
इक दिन अंतर करैं अहारा । मान आंवले के तिहिं आरा ॥
उन्निस दिवस मातु पितु पालैं । कल्प वृक्ष फिर तिनकौं लालैं ॥
चौसठ पसुली तन में जानौं । यों तीजौ आरौ परमानौं ॥
दुखमा सुखमा चौथौ साधौ । काल मान तीजौ को आधौ ॥
पै तामैं इतनौं कम चहिये । सहस बयालिस बरसैं कहिये ॥

जुगल धर्म्म इहि आरे नाहीं । नित्य भूख ब्यापै तिहि माहीं ॥
कल्प वृक्ष देवै ते रहैं । कर्महि तें जीवन निरबहैं ॥
पंचम आरा दुखमा नामा । जामैं नेक न सुख बिश्रामा ॥
सहसइकीस बरसजाकीमिति । बरस एकसौ बीस आयुगति ॥
साढ़े तीन हाथ तन मामा । दिन द्वै बेर भूष दुख नाना ॥
अंत समय इहि आरे माही । जैन धर्म्म थोरो रहि जाही ॥
दुखं सह आचारज गच्छेसा । नाम फाल्गुनी साध्वी बेसा ॥
नागिलस्रावक और स्राविका । नाम सत्यश्रीबरप्रभाविका ॥
चरम काल इहिआरे लहिये । चतुर संघ याही कौं कहिये ॥
छठवां दुखम दुःखमा नामा । सहसइकीसबरसमितिामा ॥
एक हाथ तन मित अरु जामैं । सोरह बरस सरस वय तामैं ॥
लोक कुरूप कुधर्म कुकामी । अगति अलज्जअचैलअदामी ॥
नव बरसी तिय गर्भ प्रकासी । घरबिनजनगिरिगुहानिवासी ॥
मत्स्यासी जनकुत्सित कर्मा । छठवें आरे को यह धर्मा ॥
छठवें पहलै दूजै आरैं । जैन धर्म नहिं तिनकैं वारैं ॥
इकतेंछहलौं क्रम करि चहिये । उत्सर्प्पिनी कालतिहिकहिये ॥
फिरि छहतें इकलौं उलटोक्रम । अब सर्प्पिनीकाल कौआगम ॥
दुहूं काल मिलि बारह आरे । सागर बीसकोड़ को डारे ॥
काल चक्र इक याको कहिये । जैनागम मत ऐसे लहिये ॥
चरम काल तीजे आरे में । अरु चौथे पूरे वारे में ॥
चौबीसौं जिनवर अवतरे । ज्ञान योग तप बपु गुण भरे ॥
कुल इच्छाक गोतकास्मपजे । इकइसजिनबर तामैं निपजे ॥
अरु हरिबंश बंश के माहीं । गौतम गोतमाहितिहि ठाहीं ॥
दोय तिथंकर औरो भये । मुनिश्रीसुव्रत नेम छबि छये ॥
वरस पछत्तर याके जबै । आठ मास साढ़े पुनि सबै ॥
चौथे आरेके जब रहे । तेईसौं जिनवर निरबहे ॥
चरम तिथंकर तब अवतरे । महाबीर स्वामी गुण भरे ॥

इनहीं कौं कछु करि बिस्तारा। प्रथम चवन अब कहौं सुढारा॥

अथश्रीमहावीर स्वामी चवन कल्यानक॥

चौपाई॥

ग्रीषम ऋतु सितमास असाढ़ै। छठतिथि निशिनिशीथनहिंवाढ़ै॥
देवलोक तैं च्यवनबिचारयो। देव योनि तजिबो निरधारयो॥
बीस सागरोपम वय सजिकै। शुभ बिमान पुष्पोत्तर तजिकैं॥
देवस्थित भव पूरण करिकै। मनुष योनिकौंहित चित धरिकैं॥
जम्बूद्वीप भरथ छिति माहीं। ब्राह्मणकुण्ड ग्राम तिहिं ठाहीं॥
ऋषभदत्त द्विजबर की घरनी। देवानंदा सुबरन बरनी॥
मतिश्रुतिअवधिज्ञानसंगलकै। ताके गर्भ चवे सुखदैकै॥
सूक्ष्मचवनसमयनहिंजान्यो। करिकै चवन सबै पहिचान्यो॥
ताही निशि तिनि देवानंदा। चौदह सुपन लखे सुख कंदा॥
अति उदारअति आनदकारी। अद्भुत मंगलीक हित धारी॥
सो लखि लहि अति मोदितभई। आनंद युत ह्वै पति पै गई॥
प्रथम जोरिकर बिनय सुनायो। पुनि अंजुलि सौं सीसकुवायो॥
पाछै सबै बिवस्था कही। जो कछु सुपन मांह उनलही॥
कहि ताको फल पूछन लागी। भागवंत मुहि करो सभागी॥
तबपतिनिजमतिगतिअनुसितकरि। तिनसुपननको आशैचितधरि॥
अति हर्षित आनंदित ह्वै कै। मोद भई ह्वै सुख सरसै कै॥
आशप्रियेकहि तियसौंभाख्यो। दईदयो चितको अभिलाख्यो॥
बड़ो अलभ्य लाभ तुहि ह्वैहै। सुद मंगल आनंद हित पैहै॥
चारयोवेद गनित गुण जेते। जोतिष केसब लहिहै तेते॥
अरु इतिहास पुराण ज्ञानगुन। वेदककाव्यछंद सिद्धान्तन॥
आगमअगम निगम गुणज्ञानी। तेरे गर्भ अर्भ मैं जानी॥
पियप्रियकी तिय जबयों सुनी। मुदित भई इकतैं सतगुनी॥
आस पाय पतिपास न छंड्यो। हास बिलासभोगरतमंड्यो॥

अथ इन्द्र वैभव वर्णन ॥

चौपाई ॥

तेही समय सुखदतिहिकाला। इन्द्र देवतन कौ भूपाला ॥
वज्र जासु को आयुधकहिये। ऐरावत गज बाहन लहिये ॥
जाकी सभा सुधर्मा नामा। लाख बतीस बिमान सुधामा ॥
मुख्य धरम अवतंस बिमाना। तेंतिस सहस देवगण नाना ॥
सात अनीक सैन सैनापति। अप्सरगंध्रपगणअगनित अति ॥
लोक पाल सब आगे ठाढ़े। बैठ्यो राज सिंहासन गाढ़े ॥
कुण्डलमुकुटकटक उरमाला। अंगदादि भूषण मणिजाला ॥
चामर छत्र बीजना राजे। नाटक गीत बाद्य धुनि छाजे ॥
जिहि तपकरियहवैभव पाई। सो मैं तो कौं देहुं बताई ॥

अथ कार्त्तिकसेठकथा ॥

मुनि सुव्रत्ति स्वामी के वारैं। पृथ्वी भूषण नगर मझारैं ॥
प्रजापाल नृप ताको राजा। प्रजा सीसपरसुखद बिराजा ॥
तापस एकतहां चलि आयो। तिन तपबलसबकौ बिरमायो ॥
राजा प्रजा सबै तापस घर। दरस हेतआवैं नित उठ कर ॥
कार्तिक सेठ एक ब्रत धारी। सुबसबसैं तिहि नगर मझारी ॥
सो श्रावक नहिं ताके गयो। ताते तापस द्वेषित भयो ॥
पारनदिन नृपसौं तिन कह्यो। कार्तिकसेठहिहम नहिंलह्यो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी। तौ हम पारन करैं तुम्हारी ॥
सुनि नृप सेठहि बेग बुलायो। कीनौं जो तापस मन भायो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी। गरमा गरम लाय कै धारी ॥
लाग्यो तापस पारन करने। लागी पीठ सेठ की जरने ॥
तापस निज कर नाकहि छेकै। सेठहि सैन नैन की देकै ॥
अति अपमान ठानि मुदठायो। जानि सेठ मनअतिपछितायो ॥
जो पहिले मैं चारित लहतो। तौ इतनो दुखकाहे सहतो ॥
ऐसे बार बार चित माहीं। सोचि सेठजग जानि वृथाहीं ॥

निज अपमान सेठलहि मनमैं । चारितलुरत लियो जिनजनमैं ॥
तिहिसंगसहस अठोतरश्रावक । भयेजती अतिपरम प्रभावक ॥
संथारा लैकै तन तज्यो । सेठ सुधर्म इन्द्रपद भज्यो ॥
मरि तापस ऐरावत भयो । सुरपतिनिजबाहन करिलयो ॥
तब तिन गजद्व मस्तक कीने । इन्द्रौ दोय रूप धरि लीने ॥
ऐसे जेते सिर गज करै । सुरपतिहू तेते वपु धरै ॥
यों गज गर्भ हीनकरि दीनो । विबस होयतब भयो अधीनो ॥
सुईइन्द्र यह वृद्धभव जाकी । सुर नर मुनि भयमानतताकी ॥
अवधिज्ञानकरितिनजवजान्यो । जिनवरच्यवमनुज्ञोनिप्रमान्यो ॥
मुदित होय आनंदअति पायो । आसनते उठितिहि दिसधायो ॥
सात पैञ्चचलिकियो प्रनामा । नमोर्हंत यों कहि सिर नामा ॥

॥ अथ इन्द्रस्तुति ॥

तुमहौ ज्ञान जोग के स्वामी । तप विराग करि पूरन कामी ॥
पुरुष प्रधान लोक हित कारो । दया धर्म समकित परभारी ॥
भुक्ति मुक्ति दायक भगवाना । सरनद अभयदमगदसुजाना ॥

अथ मेघ कुमार कथा ॥

मेघकुमरहि ज्यों जिन स्वामी । सुमग दिखायो पूरन कामी ॥
ताकी कथा कहैं अति प्यारी । जिनजनगन की आनदकारी ॥
श्री जिनवरस्वामी भगवन्ता । एक समय बिहरत बनसन्ता ॥
विचरत स्रेनक सुत सौं भेटे । बोधि ताहि भवदुःख खखेटे ॥
अंत द्वारपर थल तिहि दीनौ । रहन लग्योगुरु वचनअधीनो ॥
तहां साधु बहु आवैं जावें । गमनागम संघट्ट बढ़ावैं ॥
मेघकुमार राज स्रेनक सुत । भयो गमनआगम तैं दुख युत ॥
तब उनअपनी विभव बिचारी । सदनसेज सुखससि सुखनारी ॥
हाव भाव भरभुजभरि भेटनि । सब बिधिकोसुखसारसमेटनि ॥
एतैं सुख तब नींद न आवत । सो अब ह्यां इतनौ दुखपावत ॥
यातैं फिरि अपनो घर लहिये । साधुपनौ दुख असहनसहिये ॥

यहमतिचित धरि गुरु पै आये । गुरु बिन भाखैं मनकी पाये ॥
कह्योवत्सयहदुखनहिं सहिकैं । चहतरह्योफिरिग्रहसुखलहिकैं॥
ऐसी मति कबहूं नहिं कीजे । यह केतौ दुख जाहि न धीजै ॥
पूरब भव जेते दुख सहे । धरम मरम हित जात नकहे ॥
सब बिस्तारि कहैं सुनुमोसैं । पूरब जनम करम गुन तोसैं ॥
गिरि बैताढमाहिं करिवर तूं । भयो हजार करिन कौ बरतूं ॥
छहरदवारौ भव मद वारौ । मेरु मान अति ऊंचौ भारौ ॥
आयो ग्रीषम भीषम काला । वन मैं लगी दवानल ज्वाला ॥
दव डरतैंतब तूं तहं नस्यो । निर्जल सर पंकिल मैं फस्यो ॥
तहांएक अरि करिवर आयो । तिन तुहिकरिआघातदुखायो ॥
सहैनकियो तैं अति दुखताको । सातदिवसनहिंलहि साताकौ ॥
इक सतबोस बरस वयभरिकैं । बिंध्याचल मैं जनम्यो मरिकैं ॥
चारि दांत को हाथी सरज्यो । अरु नबरनजातैगिरिलरज्यो ॥
जाके और सात सै हाथी । अनुचर ह्वैबिचरैंतिहिसाथी ॥
पूरब भव दव दुख जो पायो । जातस्मर तैंसो सुधि आयो ॥
सोबिचारिचित्तधरितिनबरकरि । भूमिएकराखी बिनुतृनकरि ॥
इकदिन बनघनफिरिदवलागो । जन्तु श्रेणि बनक्रोडरि भागो ॥
भागि कहूं जब ठौर न पाई । तिहि अत्रिन भुवजाइसमाई ॥
गजबरहू तिहि थलभजिआयो । ज्योंत्यों करितहंजायसमायो ॥
फस्यो अनेक जीव संघट मैं । हलिचलिसकयोनतासंकटमैं ॥
ता गज कौ जबतन खुजलायो । खुजलावन कौ चरन उठायो ॥
सोपग थल सूनौ नहिं पायो । ससाएकभजितिहि थलआयो ॥
ताहि देखि गजअति अनुकंप्यो । चरन धरन मैं जहै चंप्यो ॥
जीव दया व्रत चितप्रतिपार्‌यो । फेरि नचरनधरनिपै धार्‌यो ॥
ढाई दिन लौं त्योहीं रह्यो । जब लगि सोदावानल दह्यो ॥
दव के शांत जबै सस सरक्यो । पदपीडा तैं गज हिय दरक्यो ॥
भूख प्यास दुख तापर बाढ्यो । गिर्‌योभूमिगजदवदुखडाढ्यो ॥

परन करि सो बरसी आयु । त्यागि दयो तनअतिसतभायु ॥
तिहितप स्त्रेनिकराजसदन में । मेघकुमार आय तुम जनमें ॥
तेही पुन्य साध पद पायो । अब क्योंकातर ह्वै अकुलायो ॥
एकै जीव हेतु तब तैसे । भूख प्यास दुख सहे अनैसे ॥
सो अब जगत पूज्य साधनतैं । दुखोगमन आगम बाधन तैं ॥
ऐसो तोहि बत्स नहिं चहिये । जो तुहिचहत परमपदलहिये ॥
यों गुरु बच सुनि मेघकुमारा । निहचलज्ञान लह्योनिरधारा ॥
हाथ जोरि गुरु पद सिरनायो । प्रभु बूड़त तुम मोहिं बचायो ॥
अब जिहिं माहिंचित्त व्रतमेरो । रहै साधु सेवा में घेरो ॥
दरस परस नित उनको पाऊं । निसिदिन चरनसाधुकेध्याऊं ॥
साधु चरन रज सिर पररावैां । उनके बचन सुधारस चाखैां ॥
ऐसो मति मोहिं देहु दयाला । सुनितोषे गुरु परम कृपाला ॥
एवमस्तु तासों गुरु भाख्यो । तबतें तिन तपव्रत दृढ़राख्यो ॥
तप प्रभाव तन तजितिहिथाना । भयोदेवलहि बिजयविमाना ॥
पुनिबिदेह थलचढ़ि छबिछायो । तप प्रतापतें मुक्ति सिधायो ॥
यौंगुरु कुंवरहि पन्थ दिढ़ायो । कुपथ कूपमैं गिरन न पायो ॥
यातें जीव दया व्रत नीको । पालै सुफल जनमता जीको ॥
ऐसे गुरु जन के हितकारी । तारनतरन मरन भयहारी ॥
काम क्रोध लोभादिक जितने । राग द्वेष ममतादिक तितने ॥
जिन जीते जिन वर तुम सोई । तुम जोई चाहौ सोइ होई ॥
ऐसे कहि फिरि सीस नवायो । अपने मन संकल्प बढ़ायो ॥
भूत भविष्यत अरु अब तबहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं ॥
जो अरहंत और बलदेवा । चक्रवर्त आदिक बसुदेवा ॥
भिच्छुककुल नहिंउपजैंकबहीं । राजादिक कुल मिलैनजबहीं ॥
यातें बड़ो अचम्भो नामी । जोद्विजकुलजनमैं जिनस्वामी ॥
काल चक्र अनगिनत बितीतैं । उत सर्पनि अब सर्पनि बीतें ॥
हंडक नाम काल इक आवै । जो ऐसे अचरज उपजावै ॥

ताही काल माहिं हम हेरे। उपजत ऐसे दसों अछेरे ॥
सो यहि काल आय दरशाने। अति अद्भुत रसकरि सरसाने ॥
आदिनाथ जिन आदि सुदेकें। महावीर स्वामी लौ लेकें ॥
जिन जिन जिन वारे में जो जो। भयो अछेरो बरनौं सोसो ॥

अथ प्रथम अछेरा ॥

एक काल इक छिनमें सोई। बहु जीवन की मुक्ति न होई ॥
होय कपापि तु अचरज जानों। ऋषभ देव के वारें मानों ॥
एक ऊन सत जिनके साधू। आठ भरत सुत रहित उपाधू ॥
आपसहित इकसत अरुआठा। इकछिन मुक्ति गयेसुनिपाठा ॥
प्रथम अछेरो यह जिय जानों। अब दूजे कों सुनों बखानों ॥

अथ दूजो अछेरा ॥

जैन धर्म चौथे आरे में। जब विच्छेदे ता वारेमें ॥
असंजती पूजें तब जन सब। पूछें धर्म विवस्था ते तब ॥
कहें कि सब जिन जनकोंदीजे। अन धन कन्यापूजा कीजे ॥
साध बुद्धि तब उनकी पूजा। होन लगीकोउ और नदूजा ॥
दूजो यह अति अचरज नयो। सुबुधि नाथ के वारें भयो ॥

अथ तीजो अछेरा ॥

नरक न जाइ जुगलिया कबहूं। जाय तु अचरज अबहूं तबहूं ॥
कौसंबी नगरी को राजा। सुमुखनामअतिसुभगबि राजा ॥
बीरा कोली इक तहं बसै। बनमाला ताकी तिय लसै ॥
इक दिन नृप ताकों लखि लई। रूप देखि सब सुधिबुधिगई ॥
काम अन्ध ह्वै कछू न जानी। छलकरिताहि महल मैंआनी॥
भोग बिषय तासौं नृप मंड्यो। बीरा कोली धीरज छंड्यो ॥
ढूंढत जहं तहं दुखित विसाला। हा बनमाला हा बनमाला ॥
बिरहदुखिततिहिंनृपलखिलीनो। बड़ो खेद पछितावो कीनो ॥
दैवजोग नृप अरु तिय ऊपर। गाज परी ताही छिन दूपर ॥
दूजे भव मरि युगली भयो। ते हरिवर्ष खेत सुख छयो ॥

बीरा कष्ट साध मरि भयो । किल्विख नाम देवता भयो ॥
तबतिनयुगलिहिलखिदुखपायो। पूरब जनम बैर सुधि आयो ॥
तिन युगलिहिं ह्वांतैं लै चल्यो । चम्पा नगर प्रजा तैं मिल्यो ॥
नृप हरिभद्र नाम कहि थाप्यो । रानीसहिततहिसुखब्याप्यो ॥
नगर प्रजा कौ तिन सिखरायो । नृपहिंमास मयभोग खवायो ॥
ताही पाप युगलिया मरिकै । नरकगये अचरज जगकरिकै ॥
कुल हरि बंस भयो तिनहीं तैं । हैं प्रसिद्ध जगमें जिन हीतैं ॥
यह ई तीजा भया अछेरा । जिनस्वामी सीतल की बेरा ॥

अथ चौथा अछेरा ॥

चौथो अचरज अबसुनि कहिये । अद्भुत रसताकौ पथ गहिये ॥
तीर्थंकर नहिं तियकै उपजै । जौ उपजे तौ अचरज निपजै ॥
मल्लिनाथ तिय ह्वै औतरे । जिन बरवपु अद्भुत रसभरे ॥
पूरब जनम करम यह बांध्यो । तातैं तिय तनसों जिय साध्यो ॥
तिहि भव महा बिदेह नगरमैं । शतबल नृपके सुखद नगरमैं ॥
कुंवर महाबल नामा जनमैं । मातपिता अति मोदित मनमैं ॥
मित्त किये छह राज कुमारा । वय गुनसील रूप सम सारा ॥
अचल धर्म पूरन अभिचन्दा । वसुवै श्रेम छहनाम नरिन्दा ॥
सातौं बाल मित्र मिलि पूरे । समपदवी प्रापत हित रूरे ॥
लैचारित सब तप कौं लागे । महाबली पै छिपि कछु जागे ॥
छहलै अधिक कपट तप कीना । तिहि प्रभावतैं तियतन लीना ॥
मिथला नगर कुंभ नृपजाकैं । प्रभावती तिय गर्भ सुताकैं ॥
मल्लिकुमारी इहि सुभ नामा । रूप सील गुनपरमललामा ॥
अगहन सुदि एकादस दिना । जनमीजिन वरह्वैतिहिछिना ॥
छहौं मित्रहू जब मरि गये । देसा तर मैं राजा भये ॥
सुनि गुन रूप सील मल्लीकौ । भयेभंवर सुनिगुन बल्लीकौ ॥
आये तजि निज २ रजधानी । मल्लिकुमारीजिहिदिसजानी ॥
मल्ली अवधि ज्ञान करि जाने । परम सनेही मीत पुराने ॥

तिहैं देखि निज रूप लुभाने। बिबसकामबसबिकलपिछाने॥
मल्लि स्वर्न पुतली सज कीनी। तामैं निज छबिसबधरिदीनी॥
रत्न भूषनन भूषित कीनी। कंचन मैं पुतली रस भीनी॥
नित प्रति ताके मुख के माहीं। अन्न कौर इक २ धरि जाहीं॥
सीसड़िअन्नअधिकजबबिगर्‌यो। अतिदुर्गंध भयो घरसिगर्‌यो॥
छहौं जनन तब सो लहिलीनो। अतिबिगन्ध घनतैंघिनकीनो॥
तब मल्ली ते सब समझाये। अन मय तनके भेद बताये॥
अस्थिचर्म नस बस मज्जामय। रुधिररुमांस मूत्रमलआलय॥
ऐसोयह अनतन धन घिनघर। सुनौ सनेह जोग नहिंबरनर॥
बोधि छहन को चारित दीनो। जनममरन दुखतें करिहीनौ॥
चौथौ अचरज यहै बखान्यौ। अतिबिसमयअद्भुतरससान्यौ॥

अथ पंचम अछेरा॥

मिलैं न बासुदेव द्वै जग मैं। जौ पै मिलैं तुअचरजमग मैं॥
खंडधातुको मैं इक नगरी। कंकाअमर नाम गुन अगरी॥
बासुदेव इक कपिल सुनामा। तहा बसै सुभ लच्छन धामा॥
इक दिन किहू हेत गुन मये। कृष्णसुवासु देव तहं गये॥
ताको हेत कहौं सुनि लीजै। एक समय नारद रस भीजै॥
पंचाली के अविनय खीजे। खंड धातुको जाय पतीजे॥
पद्मोत्तर राजा पै गये। रूप द्रोपदी बरनत भये॥
तीन लोक मैं नाहीं ऐसी। सुन्दर तिया द्रोपदी कैसी॥
सुनि गुन राजा मोहित भयो। देव अराधि सिद्धजप कियो॥
तिन सुर जाय द्रोपदी हरी। लाय नृपति के आगे धरी॥
पै द्रोपदी सील ब्रत साधै। निस दिन रहै धर्म आराधै॥
भीर भयो पांडव जब जान्यो। चकितथकि तहं अतिदुखमान्यो॥
ढूंढ हारि जब कछु नबसाई। तब सुधि कीनै यादव राई॥
कुन्ती जाय कृष्ण को लाई। आय कृष्ण सब बिथामिटाई॥
नारद मुनि ताकी सुधि पाई। तब हंसि यों पांडवन सुनाई॥

कहा करी तुम मिलि पांचौपिय। राखि न सके पांच मैं इक तिय ॥
सोरह सहस अठोतर सै तिय। एकाकीराखत हम ज्यों जिय ॥
यौं हंसि रिपु पै करी चढ़ाई। सहपांडव चलि गये कन्हाई ॥
पदमोत्तर राजा सौं लरे। जीति ताहितिय लैकरिफिरे ॥
तब जयसङ्खकृष्णा धुनि कीनौ। कपिल सुबासुदेव सुनि लीनौ ॥
कपिलतहां तब मिलनविचारी। मुनिसुव्रत्ति जिनिबरजेभारी ॥
कह्यो न बासुदेव द्वै मिलैं। मिलैंतुअचरजअतिजगखिलैं ॥
जौलौं कपिल सिंधु तट आये। तौलौं कृष्णा सिंधु मधि पाये ॥
सङ्ख नाद तब दुहुं दिस भये। नादहिं तो मिल निज ग्रहगये ॥
यह पांचवां अचंभौ नयो। नेम नाथ कै वारैं भयो ॥

अथ छठवां अछेरा ॥

चमरेंदर धर्मेन्द्र लोक लो। जाय नहीं जौ जाय अचंभो ॥
पूरन नामा तापस एका। कियो घोर तपवरस अनेका ॥
सब विधि साधि कष्ट मरिगयो। तप वल तें चमरेंदर भयो ॥
अवधि ज्ञान करि जबउनदेखा। धरमेंदर पद निजसिर लेखा ॥
लखिअतिक्रोधअगिनतनजार्‌यो।धरमें दरसौं लरनविचार्‌यो ॥
जोजनलाखबदनबिस्तार्‌यो। सुरन डरावन लाग्यो भार्‌यो ॥
मन में महावीर की सरना। गहिधरि काहू को जो डरना ॥
तब धरमेंदर वज्र चलाया। चमरेन्दर भाजा भय पाया ॥
प्रभुपदतर अनुतन धरि रह्यो। अवधिज्ञानकरिसुरपतिलह्यो ॥
महबीर को सरना लीना। तब धरमेन्द्र छांड़ि सो दीना ॥
कह्योबच्यो जिनवरकी सरना। फेर न ऐसो कबहू करना ॥
दुहूं परस्पर दोष छिमाये। अप अपने थल दुऊ सिधाये ॥
छठौ अछेरौ पूरन भयो। अब आगे सुनि अचरज नयो ॥

अथ सातवां अछेरा ॥

सतवां अचरज जिन देसना। निफल न होय एकपल छिना ॥
अरुजौ होय तु अचरज होई। यह जग में जानै सब कोई ॥

महाबीर भगवंत सुजानी । जबै भये प्रभु केवल ज्ञानी ॥
समो सरन सब सुरन रचायो । महाबीर तब सब्द सुनायो ॥
सो देसना न किनहूं मानी । यह अचरज सतयौं सुनिज्ञानी ॥

अथ अठवाँ अछेरा ॥

भूत भविष्यत अरु अब तवहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं ॥
सो अष्टम उपसर्ग बखाना । गोसालक तैं जो भगवाना ॥
सह्यो कह्यो सो सुनि चितलाई । साबस्ती नगरी सुखदाई ॥
तहां बसै इक खल मन खलसुत । गोसालक तपसी इरषायुत ॥
तिन जिन बरसों बाद मचायो । प्रभु पर तेजो लेस चलायो ॥
सुनखत सरवनुभूत दोय जन । महाबीर के मुख्य सिष्य तन ॥
साधु दोय ते आड़े आये । ते जलेस ते तुरत जलाये ॥
तिनहिं जारि वह तेजो लेसा । गयो जहां महबीर जिनेसा ॥
दै प्रदच्छिना पाछे फिर्यो । गोसालकही तातैं जर्यो ॥
पै जिनवर के तनके माहीं । अरुन चिन्ह इकभयोतहाहीं ॥
काल पाइ सोऊ मिटि गयो । पै जगमें यह अचरज भयो ॥
यह उप सर्ग जिनै नहिं होई । यातैं कह्यो अछेरो सोई ॥

अथ नवां अछेरा ।

रबि ससिनिज बिमानयुतआपै । जाहि न कितहूं कबहूं कापै ॥
जोपै जाहिं तु अचरज होई । बिदित बात जानत सब कोई ॥
कौसंबी नगरी के माहीं । महाबीर स्वामी तिहि ठाहीं ॥
समो सरन देवन तहं रच्यो । एको सुख जातै नहिं बच्यो ॥
तहां सूर ससि अति छबि पाये । निजविमानचढ़ि देखन आये ॥
नवम अछेरौं यहै बखानो । अब दसवों हूं सुनो सुजानो ॥

अथ दसवों अछेरा ॥

अब दसवों अचरजसुनिसोऊ । द्विजकुलजिन जनमैं नहिंकोऊ ॥
देवानन्दा उदर मझारा । श्रीभगवन्त लियो अवतारा ॥
दस अचरज ये सुरपति कहे । सेनाधिपहि बोलि कहि रहे ॥

अरहंतादिक जिनजन सबहूं । भिच्छुककुल नहिं उपजें कबहूं ॥
सो श्री महावीर जिन ईसा । द्विज कुल गर्भ चबे जगदीसा ॥
कुल अभिमान मान मन साध्यो । नीच गोत कुलयातैं बांध्यो ॥
सो सब अब बिस्तार बखानो । पिछले भव जिनवर के जानो ॥
सत्ताइस भव महाबीरके । वरनो सुनि गुन परम धीरके ॥
जाभव तैं समकित मित जागी । मुक्त होनकी थित अनुरागी ॥
ताहि आदि दै महाबीर लौं । सत्ताइस भव भये सु बरनौं ॥
प्रथम भये नयसार थलीसा । जिन अतिथ हितचहे मुनीसा ॥
भोजन सजि मग जोवनलाग्यो । मुनिआयेलखिमुद मनजाग्यो ॥
सादर सनमाने बिहराये । साध बिहरि अति आनंदपाये ॥
मुनितब कृपा पात्र जन जान्यो । ताके सनमुख धर्म बखान्यो ॥
सोसुनि तिन समकितपदपायो । मुकुत जोग ताको भवभायो ॥
यह पहिलो भव दूजो सुरको । तीजो सुनिअब बरनौं धुरको ॥
भरत चक्कवै घर अवतरे । नाम मरीच सकल गुन भरे ॥
इक दिन भरत आदिस्वामीतें । पूछ्यो साथ नाभि नामी तें ॥
अहोजिनेसर अब इहिकाला । समोसरन थल परमबिसाला ॥
यामैं और जीव कोउ तुमसों । तीर्थंकर है कहो सो हमसों ॥
सुनि बोले श्री आदि जिनेसा । समोसरन मैं तो नहिं ऐसा ॥
पै तापस तुव सुअन मरीचा । लहि है पदवी परम अमीचा ॥
चौबिसवौं जिनवर सोह्वै है । महावीर नामा जस पैहै ॥
चक्रवर्ति हूं ह्वै है सोई । नाम मित्र प्रिय ताको होई ॥
महा बिदेह खेत मैं उपजै । मूका नगरी मैं सो निपजै ॥
अरु त्रिपृष्ठ नामा वसुदेवा । भरत खेत मैं ह्वै है एवा ॥
ऐसे वचन भरतसुनि जिन तैं । सुत मरीच पै आये छिनतैं ॥
दै पर दच्छन बन्दनकीन्हा । भागवन्त अपना सुत चीन्हा ॥
पुनि सुत सौं उनऐसे भाख्यो । दै भगवन्त बचन को साख्यो ॥
तेरौ जीव तिथङ्कर ह्वैहै । वासुदेव पद हूं सो पैहै ॥

चक्रवर्ति हूं ह्वै है सोई । कही बात ऐसे मुद मोई ॥
तोहि तिथङ्कर पद समुहायो । यातैं हौं तुहि बन्दन आयो ॥
सुनि मरीच अतिआनंद पाग्यो । बिपुल हर्ष तैं नाचन लाग्यो ॥
कुलको गर्भ भयो अति भारी । मोसों सुकुल न जगत मझारी ॥
तेही गर्भ नीच कुल बांध्यो । तातैं भिच्छुक कुलैं भवसाध्यो ॥
कोड कोड़ सागर बय माहीं । सत्ताइस भव भयो तहाहीं ॥
तामैं तीन प्रथम ये कहे । चौथे भव सुर तन धरि रहे ॥
पुनिग्यारह भवमाहि इकन्तर । इकतपसी इक विबुधनिरन्तर ॥
पन्द्रह भव जब ऐसे गये । राज कुमार सोरहैं भये ॥
सतरवें सुर ठारह माहीं । बासुदेव पुनि भये तहाहीं ॥
भव उनीसवें नरक सिधारे । बीसैं जनम सिंह तन धारे ॥
गये नरक पुनि भव इक ईसैं । धरचो जनम नृप को बाईसैं ॥
चक्रवर्त पुनि ह्वै तेईसैं । फेर देवता ह्वै चौबीसैं ॥
राजा नन्द पचीसैं भये । पुनि छब्बीसवें सुर गुन छये ॥
सत्ताइसवैं भव भगवन्ता । देवा नन्दा उदर बसन्ता ॥
यातैं इन्द्रहि योग सुगर्भ । नृप कुल मैं सरजावे अर्भ ॥
हरि नगमेशिहि ऐसें कहिकैं । फिरबोल्योसुरपतिसुखलहिकैं ॥
अब तुम बेग जाहु तिहिनगरी । देवा नन्दा जहं गुन अगरी ॥
ताके गर्भ बेग चुरावौ । छत्रियकुण्ड ग्राम मैं लावौ ॥
सिद्धारथ राजा जहं राजै । त्रिसला रानी जहं छबि छाजै ॥
ताके गर्भ माहिं है कन्या । ताहि तहां तैं लै गुन धन्या ॥
बदलिदेहु दुहुगर्भ परस्पर । त्रिसलाकूख माहिंजिनवरधर ॥
हरिनगमेसीयहआयुससुनि । करिप्रणामतिहिदिसचाल्योपुनि ॥
करन बइक्री रूप विचार्यो । सब रतननको सार निकार्यो ॥
बहुजोजन मितिदण्डरूपधरि । समुद घात ताकैं पाछै करि ॥
लोकउचित निजरूपबनायो । सुर उत्कृष्टी गति करिधायो ॥
अमिति द्वीप सागरमधि ह्वैकै । जंबूद्वीप मध्य छित छ्वैकै ॥

भरत छेत्र छित पर जब आयो। ब्राह्मनकुंड ग्रामतब पायो॥
ऋषभदत्त द्विज बर सुभ घरनी। देवा नंदा सुवरन बरनी॥
ताहि स्वापनी निद्रा देकै। पुदगल अशुभ सबैहरिलैकै॥

अथ गर्भाकर्षण॥

सुभ पुदगल तहं दये मिलाई। गर्भ उदर तें लियो कढ़ाई॥
छत्रिय कुंड तुरत लैगयो। त्रिसिलाकूख माहिं धरदयो॥
क्वार कृष्ण तेरस ससि बासर। उत्तर फागुनिनखत सुखदबर॥
निसि निसीथ बीतें तिहिबारा। कल्यानक यह गर्भ पहारा॥
देवानंदा उदर सहायक। रहेबयासी निसिजिननायक॥
तिहीं राति तिहि देवानन्दा। फेर सुपन देखे अति मन्दा॥
चौदह सुपन प्रथम जे पाये। ते त्रिसला मनुलये छिनाये॥
ऐसो सुपन देखिकै जागी। अतिसचिन्त मनसोचनलागी॥
तिही राति त्रिसला रानी ने। सिद्धारथ राजा मानी ने॥
सोवत तेई चौदह सुपने। लखे समात वदन मैं अपने॥
सुखद चित्रसाला जहं रानी। सरस सेज में रैन बिहानी॥
ताकौ वरनन कछुक बखानौं। जहां सोय सुख सुपनौ जानौं॥

कबित्त॥

नवल धवल धाम ललित ललाम जिन कीनी छाम छबि छपाकर की जो छाई है। रचित बिचत्र चित्र खचित जरय जाकी जगर मगर होत जोत चहूं धाईहै॥ छौनी पै बिछौना छबि छाये से बिछाये स्वच्छ छात चांदनी की चांदनी सी छटकाई है। कोमल कमल दल रचितवि चित्र सेज कमला सी तापै सोई त्रिसला सुहाईहै॥ १॥ जागत कछुक पल लागत झनक नींद पागतसे दृग मृगछौना से छिपाये हैं। उदितउदार अद्भुत रस भार भर मंगलीक सोभा सार सुखद सुहाये हैं॥ चौदहौं भुवन ताकी रिद्धि औ समृद्धि सिद्धि साधन बिनाही

पाई मोद मन छाये हैं। चौदहों सुपन एक एक तें निपुन ऐसे अनुभव अपने श्री त्रिसला ने पाये हैं ॥ २ ॥

अथ चौदह सुपन——प्रथम गज बरनन ॥

देखि दिग दुरद बिगत मद होत जातें चारि रदवारो ऐसो मत मदवारो है। मंदर सो उच्च मुखकंदर सो जामें सुठसुन्दर अमंद मंद गति अति भारो है ॥ अमल कमल दल बिमल बरन स्वच्छ मानो जिन जस पुञ्जमंजु उजिआरोहै। ऐसो गजराजन कौराजसिरताजआजपहिलै सुपनरानीत्रिसलानिहारयौहै ॥ ३ ॥

द्वितीय वृषवर्नन ॥

उन्नत बिषान छबिखान कों बखानिसकै कंधबंधु विधि को प्रबल बलवारो है। कोमल विमल रोम सोमके बरन तमतोम कौ हरन हार रूप निरधार्यो है ॥ रुष्ट तन पुष्ट जामें एको गुन दुष्ट नाहिं तुष्टता मिलत लखि ललित सुढारयौ है। ऐसो वृषराजन को राज सिरताज आज दूसरे सुपन रानी त्रिसला निहारयौ है ॥ ४ ॥

तृतीय सिंह बर्नन ॥

केसर सिरीख के सरीखेकेसकेसरके कोमलबिमलबर बरन पियारो है। तीछन तिरीछे नख तालू तल जीभ लाल दीपसे दिपत दृग दीह देहवारो है ॥ दंतुरित दंतनि कीं पंति छबि वंत स्वच्छ तुच्छ कटि तटि पुच्छ उन्नत उधार्योहै। ऐसोमृग राजनकों राज सिरताज आज तीसरे सुपनरानी त्रिसला नि-हार्योहै ॥ ५ ॥

चतुर्थ लक्ष्मी बर्नन ॥

हिमगिर मांहिसरसर मैं सरोज बन बनमैंजलज एक परम सुहायोहै। वारिज मैं दिव्य गेह गेहमैं कनक बेल बेलमैंकमक एक एक तैं सुहायो है॥ सोहनै बदन नैन मोहनै चरनकरनाभि उर उरज कमलैं व्यूह छायो है। कोमल कमल मुखी कमला

बिमल देवी ऐसो चौथौ सुपनौ श्री त्रिसला ने पायो है॥ ६ ॥

पञ्चम फूलमाला बर्नन ॥

चंपक चमेली बेल मालती सुमिल मेलि परि मलझेल गुन गुंथी मन भाई है। सेवती गुलाब कुंद केतकी मदनबान जुही सोनजुही पुहीसोहीसुखदाईहै॥ मधु मकरन्दछके तुन्दिलमलिंद वृन्द गुंजिगुंजि रंजमन मंजु मुद छाईहै। फूली फूलमालसोभा सौरभकी जाल बाल त्रिसला को पांचवें सुपन दरसाई है॥७॥

षष्ठम चन्द्र वर्नन ॥

राकापति रैनपति रतिपतिमित्र उडपति औषधी कौ पति मन भायोहै। रोहिणीरमनराट रूपकौ सुमन तीनो ताप कौ समन सुमनन करि ध्यायो है॥ द्विजराजजाकौ पद कोबिद कला कौ भलौ भाईहै रमाकौ मुद कुमुदन छायोहै। पूरन अमंद चन्द आनद को कंद ऐसो छठवां सुपन रानी त्रिसला ने पायो है॥ ८ ॥

सप्तम रबि वर्नन ॥

तेज पुंजरासी सुप्रकासी तमनासी द्वैव बरस छमासी दिन छिन प्रगटायो है। कोमल कमल कलकुल मोदकारी भारी कोक सोकहारी लोक लोचन सुहायो है॥ प्रबल प्रताप पैहरत तीनौं ताप तातैं तीन कालताकौ तीन रूप करि ध्यायो है। मारतंड मंडल अखंडित प्रचंड ऐसोसांतवों सुपन रानी त्रिसला ने पायो है॥ ९ ॥

अष्टम ध्वज वर्नन ॥

उन्नत अकास लों प्रकास दस दिस मांह छांह जाकी जोन्ह जैसी फैली छिति छोर मैं। लहरत पौन फहरात फरहर जामैं चित्रित बिचित्र सिंहचित्र बीच ठौरमैं॥ कंचन रचित दंडखचित अनेक नग जग मग होत जग मांहि जोति जोर में। दिव्यतेज

मई ऐसो ध्वज रानी त्रिसला ने आठवैं सुपन देखि लीनों दृग दौर मैं ॥ १० ॥

नवम कलस वर्नन ॥

कंचन रचित्त मनिमानिक खचित मरकत पुषराग हीरामोती जड़ि धार्‌यो है। फूलन की मालरैं बिसालरैं लपेटीं गेरें भौंर पुंज गुंजन तैं लागै अति प्यार्‌यो है ॥ मंगलीक द्रव्यजग जेते तेते तामैं सब सुखद सुभग मोद भाजन सुढार्‌यो है। ससर सरस परिपूरन कलस ऐसो नवमैं सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है ॥ ११ ॥

दसम सरोवर वर्नन ॥

पूरन सलिल स्वच्छ अच्छपरतच्छ तामैं लच्छ मच्छकच्छन कौ केलिथल प्यारौ है। कंजरुक मोदबन घन जामैं फूलि रहे झूलि रहे भौंर झौंर सोभाभरि ढार्‌योहै ॥ हंसराज हंसकुंज सारस बलाक कोक सोक तजि रमत चहूंघां सुक सार्‌यो है। ऐसो सरवर बर सर मानसर नाहिं दसवां सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है ॥ १२ ॥

ग्यारवैं क्षीरसागर वर्नन ॥

पूरन अपार पारावार जे उदार सिंधु तुच्छ से लगत ऐसो स्वच्छ सोभा भार्‌यो है। तरल तरंग अति तुंग के अभंग भंग भौंरन की भीर तें गंभीर नीर वारो है ॥ तिमि से तिमिंगल से नक्रबक्रदन्त जामैं दीसत दिगंत लौं न अंत पार पार्‌यो है। ऐसो क्षीरसागर उजागर अनन्त वन्त ग्यारवें सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है ॥ १३ ॥

बारवों विमान वर्नन ॥

मध्य दिन दिनमनि गन कौ सो तेज तेज मनि गन चित्र तें बिचित्र चित्र कार्‌यो है। झझरी झरोखा गोख मोखा अगनित जामैं दीपमान दीपमान हूंतें बिस्तार्‌योहै ॥ त्रिविधि विबुध बधू

नाटक निपुन गन गंध्रपन गान तान मन मोद भार्योहै । ऐसो सो बिमान कबिमान कवजानि सकै वारवें सुपन रानीत्रिसला निहार्यो है ॥ १४ ॥

तेरवैं रत्न रास वर्नन ॥

हीरन को हीर मानौ मानिक कौ मन पुषराग कै पराग पानी पन्नन‌कौ गार्यो है । लील की लुनाई लालड़ी की ललिताई चन्द्रकान्ति की चमक लैकैं अतर निकार्यो है ॥ ताही को बनाय ढेर कंचन सुमेर को सो दृगन खुलत तीखे तेज कौ पसार्योहै । ऐसो रत्नरास के उजास कौ प्रकास आज तेरवैं सुपन रानी त्रिसला निहर्यो है ॥ १५ ॥

चौदवैं निर्धूम अग्नि बर्नन ॥

ज्योत की घटासी तेज पुंज को छटासी सीस लटा की जटासी जाकी दीपति उज्यारी है । वनमें दवासी नीर निधिबाड़वासी सुद्ध दाहक हवासी यों अरूप रूपवारीहै । हवि बीज भूमि निकलङ्क निरधूम जाकी तिहूं लोक धूम झूमि रही द्युतिकारी है । उन्नत उदोत ऐसी अमल अगिन जोति चौदहैं सुपन रानी त्रिसला निहारी है ॥ १६ ॥

चौपाई ॥

ऐसैं गज वृष सिंघरु रमा । फूलमाल उड़पति अनुमा ॥
ध्वज घट सरवर छीरनिधाना । बर विमानमनिचयद्युतिवाना ॥
निर्धूमानल चौदह सुपने । लषे जबै त्रिसला दृग अपने॥
ते सब मुख मैं आइ समाने । ऐसे जब त्रिसला ने जाने ॥
जगे भाग सोवत तें जागी । अति आनन्द हरष रस पागी॥
अति उत्साह मोदमय भई । अपने भानि की बलि गई ॥
उतर सेज तें आनंद भारी । गज गतिह्वै पतिपास सिधारी॥
देखि दरस अतिसरस ललामा । जोरिदुहूं करकियो प्रनामा ॥
पियप्रति अधर सुधारस खोले । मधुर बचन अमृत से बोले ॥

पहिले सुपन व्यवस्था कही। फिर पूछो पति भाषौ सही ॥
इन सुपनन कौ फल है कैसो। होय लाभ इनतैं पुनि जैसो ॥
सो प्रभु मोपै बेग बखानौ। अति उतकंठितमोकौजानौ ॥
सुनिपियतियमुखकी प्रियबानी। ह्वै मुदमयचिंतन करि जानी ॥
हरखित ह्वै तियसौं तब कह्यो। यह अति आनंदजातनसह्यो ॥
अलभ लाभ तुमकौं बहु ह्वै है। तीन लोकनहिं सुजससमै है ॥
धर्म्मधानधन तन मनजनसुख। सबमिलिहैमिटिहैसिगरौदुख ॥
अति उत्तम गुन निधि सुतपैहौ। जातैं अति आनंद सुख लैहौ ॥
कुलदीपककुलमौलमुकुटमन।कुलध्वजरबिकुलकमलबिमलबन ॥
अति सुकुमार उदार चारु तन। रूपसील गुनवान बिमलमन ॥
सुन्दर सुघर सुहृद सुखसागर। धर्म्म धैर्य सौ जन्यउजागर ॥
सूर बीर नर वीर धीर गति। दान बीर पर पीर हरनमति ॥
जो तुमभाख्यो अपनो सपनौ। ताकौफल ऐसो सुत निपुनौ ॥
गज सौ धीर बली वृष जैसौ। सिंह प्रताप धनो श्री कैसौ ॥
फूलमाल सो सौरभ साली। ससिसममन सुभसुजसबिसाली ॥
रबि प्रताप परसिद्ध ध्वजासौ। मंगल मंगल कमल प्रभासौ ॥
सुन्दर बिमलकमलसर बरसौ। अति गंभीर छीर सागरसौ ॥
रत्न रासि समगुनगनसाली। अमलअगिनसमतेज बिसाली ॥
यह संछेप सुपन गुन जानो। यातैं सहस सहसगुन मानो ॥
यौं पिय पैं तियजब सुनि पायो। रोमरोम प्रति आनद छायो ॥
अम्ब कदम्ब फूल जिमि फूले। पुलकि रोमतन मुद अनुकूले ॥
प्रनयविनयकरिपियहिनिहोर्यो।प्रकयकरनकौं करसिरजोर्यो ॥
बिदाहोय रंग महल पधारी। गजगामिनिभामिनिपियप्यारी ॥
बैठि कुसुम सुख सेजपियारी। अपने मन तब यहै बिचारी ॥
मति फिर आवै नींद दृगन मैं। मति मनलागै असुभसुपनमैं ॥
यातैं अब जागतही रहियै। गुरु पद देव ध्यानसुखलहियै ॥
ह्यां रानी यौं रैन बिताई। ह्वां नृप अपने मन यौं ठाई ॥

अधिकारी सब बिधि के बोले। तिनसौं मधुरबचन नृपखोले ॥
अथ सभा वर्नन ॥
सभा सदन सद सजकरलीजे। सभासदन कौं सजन कहीजे ॥
प्रथम पुहुमि सब झारिबुहारौ। छौनि बिछौन बिछायसंवारौ ॥
जे अतिमृदुल मनोज्ञमनोहर। मोलअमोल विचित्रविबिधवर॥
दर दर पर दर परदा बांधौ। दिब्यकनकगुनगुनितसुनाधौ ॥
कनक सलाका मीना कारी। प्रतिपरदा चिक लेहु संवारी ॥
छितते छात छाद्य पट रूरौ। मोलन महंगौ मालन पूरौ ॥
जाके चहूं किनार किनारी। चपला ज्यों चमकै जरतारी ॥
ताके चहूं कोर द्युति दमकै। झीनी झुमड़ी झालर झमकै ॥
मनिमय दिब्य सिंहासनलावौ। सभा सदन के मध्य बिछावौ ॥
औरौ आठ स्वच्छ भद्रासन। दिस ईसान धरौ ममसासन ॥
झीने चित्र ओट पट माहीं। एक सिंहासन धरौ तहांहीं ॥
चन्दन अगर मलागिर गारौ। छिरकिछौनि सौरभविस्तारौ ॥
धूप दान भरि सुभगसुरूपौ। बिबिधि सुगंधितधूप नधूपौ ॥
सुरभिसुमन दसदिसनि बिखेरौ। अलिअवली जहंलेहि बसेरौ॥
ऐसें जब राजा फुरमायो। अधिकारिनकैमन सुदछायो ॥
अज्ञा सिरधरि तुरत सिधारे। अप अपने अधिकार सुधारे ॥
नृपजु कहीसो सबबिधिकीनी। बिबिधिबिचित्रसरसरस भीनी ॥
ऐसे मैं निसि निघटी सारी। प्रात पूर्ब पहपौरी पारी ॥
अथ प्रभात बर्नन ॥
पुनि प्रभात की भांतिउज्यारी। फैलिपरी दसदिस द्युतिवारी ॥
फिरि अरुनोदय समय सुहायो। भयोद्विजनमिलिसोरमचायो ॥
कमलखुलेकुमुदिनि कुम्हिलानी। सुरभि समीर मन्दसियरानी ॥
बन्दीजन बरदावन लागे। सुख सज्या तें नृपबर जागे ॥
प्रथम सरौं के सदन सिधारे। श्रमित होय फिर श्रमनिरवारे॥
कोमल अमल कमल करवारन। अंग अभंग करे सुकुमारन ॥

पुनि उष्णोदक मज्जन कीनौ । मज्जनकरितन सज्जनकीनौ ॥
कटितट अरुन वरनपट धार्‌यो । उत्तर पट हुउ कंचन डार्‌यो ॥
चरन कटक कर चूरा रूरे । रहे रतन मय फबि छबि पूरे ॥
हार हमेल कराठ कराठी छबि । वाजूबन्द रहे वाजू फबि ॥
माथैं मुकुट जड़ित मनि राजै । कानन कुण्डल अतिछबिछाजै ॥
सुन्दर मुंदरी अंगुरिन सोहै । पहुंचन पहुंची अति मनमोहै ॥
बसनाभरन दिव्यसुर लायक । तेसब पहर फबे नर नायक ॥
जबै सबै सज सजि नर नाहर । रंगमहलतैं निकसे बाहर ॥
छत्र चमर गहि लये खवासन । बैठे आय जटित सिंघासन ॥
मंत्री सेनाधिप गन नायक । दूत भंडारी सब गुन लायक ॥
गनक चिकित्सक कबिजनरूरे । एकएक तैं सब गुन पूरे ॥
सब कर जोरैं सन्मुख ठाढ़े । सबअति प्रीतभीत भय गाढ़े ॥
तहं नृप सुग्यन अज्ञा दीनी । जेसुपनग्य प्रग्य अति झीनी ॥
लावौ बेगि सुग्य सुनि धाये । आठ चतुर पाये ते लाये ॥
श्रीफल करले नृपसों भेटे । नृप दरसनतें सब दुख मेटे ॥
नृपहूं कीते अति मन माने । सब सप्रीत सादर सनमाने ॥
प्रथम सजे वसुभद्रासन ते । आठौं बैठे नृप सासन ते ॥
त्रिसला दिव्य ओट पद माहीं । बैठि बरासनज्यौं छबि छाहीं ॥
दोऊ कर फल फूलन भरिकै । द्विज सुग्यन कै आगे धरिकै ॥
बिनयप्रनयअतिसयचितधार्‌यो । फिर सिंघासन अंगीकार्‌यो ॥
तब नृप सुपन विवस्था कही । फिर ताकोफल पूछ्यो सही ॥
चिन्तन करितिनसबन परस्पर । यथा शास्त्रबोले सब द्विजवर ॥
सुपनागम द्वासप्तति सुपने । तिनमें तीस कहेअति निपुने ॥
ताहू मैं चौदह जे कहे । जिन माता बिन और न लहे ॥
चक्रवर्त माता हूं पेषै । पै अति मन्द बरन सो देषै ॥
बासुदेव जो गर्भै आवै । सात सुपन तिहिजननी पावै ॥
अरु बलदेव मंडलिक माता । चार एक देखै सुख दाता ॥

तातें यह निहचे हम जाने। जिन वर त्रिसला गर्भ प्रमानें॥
ऐसो सुत नहिं भयो न होई। दई देहगी तुम कौं सोई॥
गर्भ मास नव मास ब्यतीते। साढ़े सात दिवस पुनि बीते॥
अंग उपंग संग गुन पूरो। मान प्रमान सुभग अंग रूरो॥
मन रञ्जन व्यञ्जन लच्छन युत। तुम लहिहौ ऐसो अद्भुत सुत॥
चक्रवर्त्त दस दिस में ह्वै है। अन धन जन अवनीन सम है॥
सुनि राजा रानी अति हर्षे। धन मन गन सुय्यनपर वर्षे॥
बहु बसु बास रासि तिहि दीने। आस पुराय बिदा ते कीने॥
त्रिसलाहूं पति आयसु पाई। मुदमय अपने सदन सिधाई॥
जिन अवतार जानि सुरराई। धन अधिकारी लये बुलाई॥
तिर्यक जृम्भक देव सुनामा। तिनसौं कह्यौ इन्द्र सुखधामा॥
जहं जहं भू में है धन भारो। स्वामी सत्ता रहित उज्यारो॥
सो सब महा निधान लियावो। सिद्धारथ नृप घर पहुंचावो॥
जो अज्ञा सुरपति ने दीनी। उन सिरधार यथाबिधि कीनी॥
अन धन जन अनमादि सबै सिधि। बिबिधि भांति की रिद्धि नवौ निधि॥
गज हय रथ मय सेना भारी। सेनाधिप अगिनित अधिकारी॥
ऐसी सुख सम्पति अधिकाई। दम्पति नृप नृपतिय घर छाई॥
तब पिय तिय ऐसो जिय धारैं। जो अबकैं सुत होय हमारैं॥
वर्द्धमान धरि नाम बुलावैं। लखि अतिमङ्गल आनंद पावैं॥
तब जिनबर मधि उदर बिचारी। मति दुख पावै मात हमारी॥
सब सिसु फरकि देत दुख मातहि। मुहि विशेष चहिय तय हि भांतहि॥
यों चित चिंत अचल ह्वै रहे। सो लहि मात अमित दुख सहे॥
गर्भ फरक जब मात न लह्यो। रोय तबै यों अलिसौं कह्यो॥
दई दई निधि सों कित गई। कहा करौं अब कैसी भई॥
किन हरिलीनो गर्भ हमारो। जीव प्रानकै जीवन प्यारो॥
कौन क्रिया यह आड़ी भई। गर्भ चेतना जिन हरिलई॥
घोर कठोर बिषय रस पागे। कर्म पाछले भवके जागे॥

ऐसें बिलपति तलफति रानी। छिनछिनकलपसमानबितानी॥
अवधिज्ञानकरि श्री जिनजाना। जननी जनममरनसम माना॥
तब भगवान अचलब्रत तजिकै। फरकनलगे मातहित भजिकै॥
जब छह मास गर्भ के भये। पंद्रह दिन ता ऊपर गये॥
जिन मन मैं तब निहचै कीनौ। मात पिता हितदृढ़ब्रतलीनौ॥
गहैं नाहिं गुरु दिच्छा तौलौं। मात पिता जगजीवैं जौलौं॥
गर्भ चेत जब जननी जान्यौ। भयो मोद मंगल मनमान्यो॥
सुख सोवत जागत हित पागी। रक्षा करन गर्भ की लागी॥
विषम अहार विहार जितेका। सब तजि दये एकतें एका॥
जिन जिनबस्तनमनअभिलाषै। ते सब परिपूरन करि राषै॥
इक दिन मनसा उपजी ऐसें। इन्द्रानी श्रुति कुण्डल जैसें॥
दिव्य अलौकिकसुरमन गनसैं। जो पाऊं तो करौं करन मैं॥
सुरपति अवधिज्ञान करिजानो। जिनजननीहित यहमनठानो॥
खत्रियकुण्ड पास सुखदाई। इन्द्रपुरी इक इन्द्र बसाई॥
तहीं वसे सुरपति सम्पति लै। सुरतरु गोमनि परिपूरन कै॥
नृप सिद्धारथ जब यह जान्यो। सैन साजि चढ़िसंगर ठान्यो॥
सुरपति नरपति सों भय माना। दुसह युद्धलहि अथसपराना॥
सब बैभव सेना भट लूटा। सुरपतितिय श्रुतिभूषनछूटा॥
सो त्रिसलाढिग भट लै आये। ताहि पहिरि मनमोद बढ़ाये॥

अथ महाबीर जन्म कल्यानक॥

गर्भ बास बासर जब बीते। सुभ नव मास आय परतीते॥
साढ़ेसात अधिक दिन तापै। चैत सुदी तेरस तिथि आपै॥
नखत उत्तरा सुभ फागुनी। मुद मंगल मैं सुरनर मुनी॥
सातों ग्रह निज उच्चस्थाना। जनमसमयजिहिसुभफलनाना॥
दोष रहित सुभ समयसुहायो। जो जिनजन्म जोगजगजायो॥
जिन श्रीमहावीर भगवाना। जनमलियोगुनरूप निधाना॥
जिहिनिसिमहाबीर जिनजनमे। देवी देव मुदित ह्वै मनमे॥

देव लोक तें भू पर आये । सब देवन के भये बधाये ॥
दसदिसबिमलप्रकासप्रकास्यो । व्योमबिमाननतें तम नास्यो ॥
आनँद मगन सकल सुरवृन्दा । व्यापकक्कहक्कहसबदअमन्दा ॥
धनद निदेसित अनुचर धाये । कनक रजित की रासैं लाये ॥
वसन आभरन रतन अमोले । सुरभिफूलफल अमलअतोले ॥
चन्दन चूर कपूर धूर लै । परिपूर्‌यो नृपनगर वृष्टि कै ॥
सुरभिसुसलिल सुगति बयारी । सरस परस इन्द्रियसुखकारी ॥
थल जलरुह बनउपबन फूले । अलिकुलकलनवरवअनुकूले ॥
कोकिल केकी कूकन लागे । तरुझरभर धर झुकन लागे ॥
चेत अचेतन तन मुद छायो । छिनक नारकिनहू सुखपायो ॥
भूर्‌यो भई भार भय होनी । वसु बसुमती प्रकटकरिदीनी ॥
अध ऊरध दिस बिदिसन बारी । आठ आठ प्रति दिसाकुमारी ॥
अध ऊरधअरुविदिसाको सब । चारिचारिसबमिलिछप्पनतब ॥
दसों दिसा तें मुद मय धाईं । सिद्धारथ नृप आलै आईं ॥
प्रथम प्रनत जिनवरकै पाएँ । अप अपने पुनि कारजलाएँ ॥

अथ छप्पन दिग देवीकृत उत्सव ॥

एकन करिदृग पलक बुहारी । चहुंदिस पुहुमी झारि बुहारी ॥
अतर अरगजा जल भर झारी । एकन सींची पुहुमी सारी ॥
एक स्वच्छ कर दरपन लीने । इक बीजन करमें कर दीने ॥
एक छत्र चामर कर धारी । इक स्नान नीर अधिकारी ॥
एकन चारु दीप कर लीनो । एकन नाल बधारन कीनो ॥
नाल बधारि धारि भुअ भीतर । रत्न रासि राखी ता ऊपर ॥
मोद मान करि गान परस्पर । गईं असीसत अप अपने घर ॥
ऐसो उत्सव मुद मङ्गल मय । छप्पन दिगदेविन कीनौजय ॥

अथ चौंसठ इन्द्र उत्सव ॥

अब चौंसठ इन्द्रन मिलि जैसो । कियो महोच्छो बरनौं तैसो ॥
जिहिछिनजनमेंजिनवर स्वामी । जिन जन गनके पूरन कामी ॥

सुर इन्द्रनक आसन डोले। हरिन गमेसो तुरतैं बोले॥
घोष सुघोष घण्ट कौ कीनौ। बरबिमानसजिसाजनबीनौ॥
जोजन लाष जासु बिस्तारा। तापर सुरपति होय सवारा॥
पटरानी सन्मुख तिअ आठा। दिब्याभरन बसनठठि ठाठा॥
बांये सामानिक सुर नायक। देवी देव दाहिने लायक॥
पाछे सात सेनपति सोहैं। सुर समूह सुदमय मन मोहैं॥
अप्सर गंध्रप किन्नर के गन। नृत्य गानगुन ज्ञान जानजन॥
सिगरे सुर समूह संग सुरपत। खत्रिय कुण्ड नगर पहुंचेतत॥
प्रथम प्रनाम नामि सिरकीना। सबन खाइ जिनवरकरलीना॥
लै सुमेर कौ कियो पयानौ। ततछिन तिहिंथलपहुंचेमानौ॥
देवलोक गृहपति ब्यन्तर के। चौंसठ इन्द्र मिले सुरबर के॥
मिलि रचना कलसनकोकीनी। कनक रजित मनिमैरसभीनी॥
एक कोट इक लाख सवाई। तिनकी संख्या तहां बताई॥
तेसब नीर छीर निधि भरिभर। चौंसठ इन्द्र लिये अपनेकर॥
उद्यत भये स्नान हित सिगरे। हाथनलिये जड़ित मनिगगरे॥
पंचम आरा आगम के गुन। संसय सरज्यौ सुरपति केमन॥
सिसुतनअतिसुकुमार सुभायन। क्योंसहिहैयहभारअभितघन॥
सो सब मनकी जिनवर जानी। श्रुतिमतिअवधिज्ञानकेज्ञानी॥
चरन अंगूठा धरनी चांप्यो। मेरु थेर सह पुहमी कांप्यो॥
जलथलअनलअनिलनभसारौ। हलचलखलभलमच्योपसारौ॥
देवि देव अहिगन गंधर्बा। भये सबै बिसमय मय सर्बा॥
अवधि ज्ञान तब सुरपति देखा। जिन प्रताप अपने मन लेखा॥
निज अग्यान जानि सुरनायक। जिनवर चरनगहे सुखदायक॥
अहो नाथ अपराध छमीजे। मो मिछामदुक्कडू लीजे॥
बार बार बिनये जिन स्वामी। छमाकरो जिन पूरनकामी॥
लियो उठाय अंगूठ अवनि तें। मिट्योक्षुब्योसब कम्पधरनितें॥
पुनि प्रनाम सुरपति तहकीना। स्नानक्रिया सैफिर चितदीना॥

अच्युतेन्द्र पहिलै जल ढारै। आन इन्द्र सुर पुनि पयपारै॥
पुनि ईसान इन्द्र निज कारै। जिनवर कौं बैठाय निहारै॥
चारि वृषभ तनधरि देविन्दा। आठ शृङ्गकरिसुभग तुरिन्दा॥
निरमल जल जिन वरपर ढारैं। करि अभिषेक भरैं सुखभारैं॥
पुनि निरमल कोमल पटप्यारैं। जिनतनपौंछि अंगोछिसुवारैं॥
पुनि कपूर कस्तूरी केसर। चन्दनलै जिन तन लेपन कर॥
नव अंगनि की पूजा साजै। चरन जानु कर कुहनी राजै॥
कंध सीस भालरु हिय कूषैं। येई जिनवर अंग अदूषैं॥
तिनमैं तिलक देइनव वारी। कुसुमांजलिप्रतितिलक सवांरी॥
पुनिवर सुरतरु कुसुम समूहन। पूजैअतिहितकरिजिनवरतन॥
असलकमल कोमलकलदलसे। पट पहराये निरमल जलसे॥
पुनि कल कनकरचितचितचहने। रतन खचित पहराये गहने॥
फूल माल तापर पहिराई। सुरभि धूप धूपैं सुखदाई॥
पुनि नैबेद निबेदन कीनो। घण्ट सङ्ख करि नाद नवीनो॥
अष्ट मङ्गलिक सन्मुख अरचे। स्वस्तिक घट भद्रासनचरचे॥
श्री वत्सोरु नन्द आवर्त्ता। संपुट मत्स युग्म सुख कर्त्ता॥
और आठवां दरपन जानै। अष्टमंगलिक ये परमानै॥
वर मनि मानिक हीरा मोती। जिनकी जगमैं जगमग जोती॥
नवबिधिरतनजतन करितिनके। रचे मंगलिकसन्मुख जिनके॥
श्रीफल पूग आदि फल नीके। सन्मुख धरिश्री जिनवरजीके॥
नृत्य नाट्य गुन गान तरंगा। चंग मृदंग उपंग अभंगा॥
पुनि आरती उतारैं वारै। तापर राई लोन उतारैं॥
मंगल दीप बारि पुनि जिनकी। सत्रह भेदी पूजा तिनकी॥
जिनवर मज्जन सज्जन करिकै। लायेजहं त्रिसलासुखभरिकैं॥
प्रथम स्वापनी निद्रा हरिकै। पुनिप्रनाम जिनजननिहिकरिकै॥
कोरिन कंचन बरषा भरिकै। कोरिअसीस जोरि करकरिकै॥
सुरसुरपति सब सदन सिधारे। मंगल मोद भरेमन भारे॥

अथ नृप सिद्धारथ कृतोत्सव ॥

भोर भये ज्यौंहीं नृप जागे । पुत्र जनम आनंद रस पागे ॥
अधिकारी सब लये बुलाई । तिनसौं नृपति कहे समुझाई ॥
बंदीवान बंद सब छोरौ । मंगत मनुतें मुख मति मोरौ ॥
जेतो जो मांगै तिहि तेतौ । बिन पूछें दीजौ धन वेतौ ॥
खारी पाली गज अरु बटखर । तोल प्रमान सबै बढ़ती कर ॥
बीथी बगर डगर नगरी के । चौपथ चार चौक सिगरीके ॥
चंदन अगर अरगजा घोरौ । सींचि सींचि सब सौंधे बोरौ ॥
धुजा पताका घर घर बांधौ । दर दर मंगल तोरन साधौ ॥
चन्दन चरचित कलस धरावौ । कदली खंभन तैं छवि छावौ ॥
कुसुम समूह माल फूलन की । मत्त मधुप मन अनुकूलनकी ॥
ठौर ठौर सत कौरि बखेरौ । धूप द्रव्य धूपौ सत बेरौ ॥
नरतकनट भट भाड़भगतिया । गनिकादिक जेहैं सुभगतिया ॥
अप अपने गुन गन बिस्तारैं । जिहि लखिकै रीझैंरिझवारैं ॥
तंत्र वितंत्र सुषिरघन आवज । बीन बेनु कठताल परखावज ॥
तालतान गुन गान मान सुन । होहिं मोदमयसबजनपदजन ॥
अज्ञा लहि अधिकारी धाये । सजि सब सौंज खबर लैआये ॥
नृप सुनि जगेभाग लौं अपनें । सफल भये रानी के सपने ॥
सैन ऐन तजि सरैंसदन में । श्रमकरिहरिअति आनंदमनमैं ॥
उबटि अरगजा बासित तेलन । करि अभ्यंग अंगसुख झेलन ॥
न्हायअंगोछिपोंछि तनकोमल । अमलअमोलवसन पहिरेकल ॥
पहिने गहने चहने जियके । मुकता हार चार छवि हियके ॥
मुकटकटककुण्डलकटि मेखल । कण्ठी कण्ठलसत मुकताहल ॥
पहुंची मुंदरी छला विराजै । अंग अंग अतिफबिछबि छाजै ॥
मंत्रि मुसाहिब सेनप साथा । सभा सदन आये नर नाथा ॥
बार भंडारन के सब खोले । दान जाचकन दये अतोले ॥
जातैं प्रथम खबर सुनि पाई । सवालाख तिहिं दई बधाई ॥

मुद मंगल सैं कुल व्यवहारा। जाति कर्म आदिक छविभारा॥
कीने छठी छठें दिन कोनी। अति आनंद रंग रस भीनी॥
पूत भये सूतक दिन बीतें। न्यौते न्यात लोग करि प्रीतें॥
रचि पचिसजो सजन जिवनारा। जेवन लगे नगर जन सारा॥
मधु मेवा पकवान मिठाई। जो जाके मन भाई पाई॥
घेवर बाबर खुरमा खाजा। कहैं परस्पररुचि सों खाजा॥
गुप चुप गझा सेव इमरती। मधुर जलेबी अमरित झरती॥
पूरन पोलि कचौरी पूरी। रूपन रूरी स्वादन पूरी॥
यौं अति अमित अनेकप्रकारा। कवि जन बरनि न पावैं पारा॥
बिबिधि भांति के व्यंजन नीके। षटरस मिले भावते जीके॥
कचरी कैर करौंद बखाना। अदरख नींबू बिबिधि सयाना॥
दूध दहीकी कही न जाई। मृदु माखन अरु मधुर मलाई॥
और कहां लौं अधिक कहीजें। षटरस च्वैचलि पत्र पसीजें॥
ऐसैं सब जिवनार जिवाई। बर बीरा पुनि दये खवाई॥
जामैं लवंग सुपारी एला। केसर चूर कपूर सुमेला॥
छिरके सब गुलाब के पानी। सभाअंतर तर करि सनमानी॥
पुनि पहिरावन दीनी जनकौं। भूषन बसन सुलसन सबनकौं॥
रानीहूं सब तिय सनमानी। दीनी जो जाके मनमानी॥
तास बास बासे मनि गहने। दै सब तिय सौं लागी कहने॥
जबतैं जनम्यौ सुअन हमारे। अनधनजनदिनदिनअधिकारे॥
यातैं सुभ सुत नाम पियारौ। बर्द्धमान हम अबतैं धारौ॥
जैसो नाम आपहू तैसौ। दिन दिन बढ़न लगैदिनजैसौ॥
धाय मायकौं दूधछुट्यो जब। लालन पालन तैं निकसे तब॥
क्रमक्रम करि जबआठ बरसके। भये नये गुन दरस परसके॥
तब सुर एक परिच्छा कारन। सिसुवपु धारि आये अनुहारन॥
खेलन लग्यो कुमारन माहीं। जिन संगजिनबररमतसदाहीं॥
सुरमाया करि अहि बपु धरिकैं लिपट्योइमली तरुसैंअरिकैं॥

सिसु सर्व भय मय भये पराने। अहि गहि फैंक्यौ बीर महानें॥
फिर तन्न सुरहय तन्नधरिलीनौं। तिन पर जिन आरोहन कीनौं॥
जदपि अतुल बलकरिसो बाढ्यो। सहिनसक्यो जिनवरबलगाढ्यो॥
तब परि पद अपराध छमायो। देवलोक कौं तुरत सिधायो॥
नवैं बरस चटसाल बिठाये। जद्यप विद्या निधि जिनराये॥
भूषनअमल अमोल पिन्हाये। उपाध्याय के पाउ लगाये॥
ओंनमः करि सिद्धि प्रथमहीं। सुरब्यंजन बर बरन मरमहीं॥
सकल शास्त्र विद्या जगजेती। स्वयं बुद्धि जिन जानैं तेती॥
आयोसुरपति धरि द्विज देहा। पूंछन लग्यो कठिन संदेहा॥
समाधान जिन ऐसो कीन्हैं। उपाध्याय हूंसक्यो न चीन्हैं॥
तबसुरपतिमुखजिनबरमहिमा। सुनिजान्योनहिंऐसो महिमा॥
जद्यप उपाध्याय गुरु राई। बाल शिष्यके पकरे पाई॥
मात पितासुनिसुतकेउच्छन। अतिआनंद मयभयेबिचच्छन॥
जोबनवय जब भये जिनेसा। ब्याहे राज कुमारि सुदेसा॥
जसुदानाम बाम सुकुमारी। तासोंविषय भोग सुख सारी॥
बर्द्धमान जिहि भाख्योमाता। महाबीर जगसमनबिख्याता॥
सिद्धारथ राजा पितु जाकौ। त्रिसलानाम जासु माताकौ॥
भाई बड़ौ नंद बर्द्धन कहि। सुपारख नामा चाचा लहि॥
जिहि सुदर्सनानाम बहिनकौ। प्रियदरसना सुतादरसनकौ॥
अरु जिन बर पुत्रीकी पुत्री। तासु नाम जसवती दुहित्री॥
ऐसैं अही धर्म अनुसारिकै। बर संपति संतत सुखभरिकै॥
जबअट्ठाइस बरस जिनेसा। भये मातपितु सुर लोकेसा॥
अग्रज भ्राता सौं तबभाख्यो। भई प्रतिज्ञा पूरन साख्यो॥
अबइच्छा दिच्छा की मनतैं। तुमडों परत रहत नहिं तनतैं॥
बेग नाथ अब अज्ञा दीजै। जातैं जनम सफल करिलीजै॥
तबअग्रज भ्राता यौं बोले। मधुर वचन अमृतके तोले॥
सच सोगता तरु माताकौ। जियतैं दुखयहमिट्योनाकतौ॥

केतक दिन अब धीर धरीजे। पाछैं मन भावै सो कीजे॥
मानी अज्ञा जिनवर स्वामी। जिन जनमन के पूरन कामी॥
दोय बरस तब औरों रहे। तीस बरस पूरे निरवहे॥

अथ दीक्षा कल्यानक॥

देवलोक तें देव पधारे। चारित समै जतावन वारे॥
कहन लगे जयजयजिनस्वामी। छत्रिय धर्म नृपन मैं नामी॥
आतम तत्व बोध अब लीजे। जिन जनजीवनकौहित कीजे॥
सुनि संसारिक सुख सब जेते। जनधन अन उपवन घनतेते॥
बाज ताज गजराज राज सब। तजिदीने सुखसाजकाजसब॥
कछु कुटुंब कछु दासन दीने। दान छमछरी मैं जे कीने॥
ते अब कहौं घरी छह माहीं। एक कोटि वसुलाख सवाहीं॥
तीन अरब अरु ब्यासी कोरा। अस्सी लाख दान सब जोरा॥
उत अग्रज भ्राता है राजा। दिक्षा समय महोच्छौ काजा॥
नगर झगरसव बगर सिंगारे। धुज तोरन कलसादि संवारे॥
पुनि जिन कौं अस्नान कराये। सहस अठोतर कलस ढराये॥
भूषन बसन सरस पहिराये। अतरअरगजानिकरि सुरभाये॥
चन्द्रप्रभा पालकि बैठाये। बिबिधि भांतिबाजनबजवाये॥
चौसठ इन्द्रन कंध चढ़ाये। खत्रिय कुंड ग्राम मझि आये॥
नगर लोग सब देखन धाये। यों जब नगर बाहरैं आये॥
उपबन तजि बन घन नियराये। न्यातखगड बन घनजबआये॥
अति आनन्द मोद मन छाये। तरु असोकतर सोक मिटाये॥
पालकि तैं पुहमी पग धारे। तन तैं भूषन बसन उतारे॥
पंचमुष्टिकरि लोच सु करिकैं। द्वै उपबास धीर चित धरिकैं॥
अगहनअसितदसमतिथकेदिन। नखतउत्तराफागुनितिहिछिन॥
तीजैं पहर सुव्रत बर बासर। बिजै मुहूरत मैं ता तरु तर॥
देवदुष्य तहं इक पट धार्‌यो। सबतजिचारित अंगीकार्‌यो॥
मनपर जाय ज्ञान तहं पायो। चौथोज्ञान आनि मन छायो॥

सुर कुल कुल कुटुम्ब जन जेते । जिन पद बंदि बिदा भये तेते ॥
पुनि अग्रज सें अज्ञा लैकें । जिनवर बिहरे बिरहा दैकें ॥
सांझ समय इक गांउकुमारा । तहां जाय पहुंचे सुकुमारा ॥
काउसग्ग करि ठाढ़े रहे । आतम तत्त्व ध्यान धुनि गहे ॥
ग्वाल एक तहं आवत भयो । बैल एक तिहिंथल धरि गयो ॥
बगरि गयोसो चरत बिपिननैं । ग्वाल आय पूछी वर जिनतैं ॥
मौन दसा जब ज्वाब नपायो । जान्योचोर क्रोध अति छायो ॥
बहुताड़न तरजन तिन कीनौ । सहनसीलजिनसबसहिलीनौ ॥
मनुतनु धरि सुरपति तहंआयो । तिनग्वालहिंसमुझाइछुड़ायो ॥
सिद्धारथ नामा इक देवा । छांड़ि करन जिनवरकी सेवा ॥
सुरपति आपु सुधाम सिधाये । द्विजबहुलालय जिनवरआये ॥
पायस पारन कीनौ जिहिं घर । कुसुम वृष्टि कीनी सबसुरबर ॥
ऐसें आठ मास तप धारा । करि सुभसुच्छअहारबिहारा ॥
दोयज्झंत नामा तापस घर । पावस आदि पधारिजिनवर ॥
सुहोमित्र नृप सिद्धारथ को । अति सनमाने जिनतीरथकों ॥
भरि चौमासा रहिवे कारन । बिनयोमान लियोजिन तारन ॥
तहं जिनतप करिध्यानलगायो । सुरन आय चन्दन तन लायो ॥
ताकौ सौरभ दस दिस छायो । अलिकुलचहुंदिसआयलुभायो ॥
पुर तरुनी सौरभ रस पागीं । जिन सैं चन्दन मांगनलागीं ॥
जबजिनवर कछुज्वाबनदीनौ । तियनसुतनजिनतनघसिलीनौ ॥
तिहीं बरस बरसातु नवरस्यौ । तब सब लोगतहां कौतरस्यौ ॥
कह्यो साध यह कितलें आयो । जातें भयो सकल अनभायो ॥
लोक अहिततापसहू मनधरि । भयो बिमनतापसहू जियकरि ॥
सोजियजानिजानि जिननायक । पांच अविग्रह लीने लायक ॥
बिनाप्रीति कहुं रात न रहनौ । काउसग्गतपकरि निरवहनौ ॥
करतल भोजन मौनी रहनौ । नहीं जुहार गृही सैं कहनौ ॥
ऐसी पांच प्रतिज्ञा गहिकैं । दुस्सह लोग अविज्ञा सहिकैं ॥

अरध असाढ़हि तैं थलतज्यो । बिहरिअस्थि नामाथल भज्यो ॥
सूलिपानितहं जक्षकुमतिगति । अस्थिरचितमठमांहिदुष्टअति ॥
रहै तासु पूरब भव कथा । सुनौ ताहि बरनौं मति यथा ॥
धन सारथ बाहू बिहवारो । ताको बैल थक्यो गति हारी ॥
तब तिन साह बैल अपनो लै । ग्रामाधिप को दियौ सौंपिकै ॥
और बहुत धन ताको दीनो । वृषरच्छाहित सो तिन लीनो ॥
पै ता वृष को सार न कीनो । धन सब खाय करीमति हीनो ॥
भूख कष्ट सहि वृष मरिगयो । सोई सूलिपानि जक्ष भयो ॥
पूरब बैर तहां तिन सुधि कर । मरीकरी पसु नरको घरघर ॥
दुपद चारि पद अगिनित मरे । लोक उपद्रव तैं सब डरे ॥
तब इक गनकतहां चलिआयो । नगर लोग सबपूछन धायो ॥
तब तिन एक उपाय बतायो । मरन जितेनर नारि न पायो ॥
तिन सबहन के अस्थि मगावो । वृषाकार इक मठ बनवावो ॥
सकल प्रजा मिलियोंहींकीनो । भयो सुदेस उपद्रव होनो ॥
ता दिन तैं तामठ के माहीं । रह न सकै कोऊ निसिताहीं ॥
तहां बसे निसि जिनवर नामी । जद्यप लोगन बरजे स्वामी ॥
तहं तिन जच्छ बड़ो भयदीनो । गजअहि बीछीबपुधरिलीनो ॥
निफलभयोबलछलकरिथाक्यो । जिनपदपरयोकुमतिमदछाक्यो ॥
जोरि हाथ अपराध छमायो । ताहि प्रबोधिआप अपनायो ॥
चरम रैन कछु रहत सवारे । दस सुपने जिन नाथ निहारे ॥
प्रथम पिसाच दुष्ट इक मारा । सितकोइलपुनिअसितनिहारा ॥
फूलमाल गो बरग सुहायो । पदम सरोवर सिंधु सुहायो ॥
दिनकर मेरु आंत तरु लिपटी । योंदससुपन नींदलखिउचटी ॥
जनपद जन जिन महिमाजानी । सब मिलि बंदे पूरन ज्ञानी ॥
अस्थि ग्राम चौमासा रहे । मौन वृत्त सब असहन सहे ॥
गनकएकजिन सनमुख आयो । तिन बिवादकरि सोरमचायो ॥
मौनि प्रतिज्ञ जानि सिद्धारथ । जिनतन पैठ्योसाध्योरुबारथ ॥

करि बिबाद सो गनक हरायो । हारि दीन ह्वै विनय सुनायो ॥
स्वामी तुम साधन में नामी । जहां रहौ तहं पूरन कामी ॥
पैसोको यह थल तजि दूजे । कोउ न मानै कोउ न पूजै ॥
यहसुनिजिनकछु वरखा रहतें । जानि अप्रीति बिहारे तहतें ॥
सोमदत्त द्विज मित्र पिता को । तहां मिले मारग में ताको ॥
हाल बिहाल निहारि जिनेसा । कृपा दृष्टि चितये सुभ बेसा ॥
तब उन अपनौ दारिदभाख्यो । जातें सुतियमान नहिंराख्यो ॥
तबसुनि सोचे जिनवर स्वामी । हौं निग्रंथ यहअर्थी कामी ॥
इहि थल याहि कहाधौं दीजै । आस निरासी कैसे कोजे ॥
देव दूष पट आधौ फाड्यो । दारिद दरद हिये तें काढ्यो ॥
ताकी कोर सुधारन द्विजबर । बस्त्र गयो लै तांती के घर ॥
तिन तांती ताकौ कहि साधौ । जौ लै आवै दूजौ आधौ ॥
ऐसौ साधि देहुं मैं सो पट । लाख मोल पावैसो नहिंघट ॥
लोभ लागि सोद्विजफिरिधायो । श्रीजिनवर स्वामी समुहायो ॥
पै अति सोच सकोचन पाग्यो । मांगिसकैनहिंलालचलाग्यो ॥
तिहिं छिन कंटक वृच्छनमाहीं । उरझ्यो देवदूष पट ताहीं ॥
जिनवरतिहिंफिरिलखितहत्याग्यौ। तिहिंलीनौद्विजलालचलाग्यो
लोभसबल जिनजान्योदुरघट । क्योंनदियोपहिलैंसिगरोपट ॥
पंचम आरो निकट संभाल्यो । जिहिंकुसमयगुनमोमनचाल्यो॥
यों बिचारि जिनवर जियजाने । आगम काल साध पहिचाने ॥
क्रूर लोभमय होहिं कालबस । मोमनलोभ बस्त्र कण्टक फस ॥
कंटक क्रूर दिब्य पट धार्यो । लोभ परिग्रहकरन बिचर्यो ॥
तेरह मास दिब्य पट सोई । जिनवर तन आच्छादन होई ॥
तदनन्तर भगवन्त जिनेसा । लगे रहन बिन वसन सुबेसा ॥
करतल बन आहार बिहारा । काय नेह तजि आतम धारा ॥
सहैं सहन असहन उपसर्गा । जोकियतिय पसु मनुसुरवर्गा ॥
पुनि जिन बिहरि तहांतैं आगे । कनकबालुका भुव तट लागे ॥

गांउ कनकखलढिगजिनवरजे। पहुंचे तहं के लोगन बरजे॥
आगे रहैं दृष्ट विष विषधर। दीठ विषहिं तैंजो मारतधर॥
चंड कोश ता अहि को नामा। कालकराल क्रोधको धामा॥
याहू को पूरब भव भाबो। भाखैंजिनअहितन उरझाबी॥
इक दिन काहू नगर मझारो। पावसरितुमुनिजिन ब्रतधारी॥
गये गोचरी हेत गृही घर। मरो मेड़को दबि मुनिपगतर॥
शिष्य देखि सोबोल्यो गुरु सों। देहु स्वामि मिच्छामदुक्कड़ो॥
गुरुन मानिजबनिज थलआये। फिर चेला सुइभाव चिताये॥
फिरि संध्या पड़कमन समैहू। गुरुन कहो मिच्छामिदुक्कडू॥
तीन बेर चेला बर गुरुसों। भाखिरह्यो नहिं मानीधुरसों॥
अरु तापरअति क्रोधपसार्यो। मुनि चेला, ओघालै मार्यो॥
बच्यो भाजि चेला गुरु क्रोधी। मरि तीजे भव भयो विरोधी॥
तापस ह्वै इक बाग बनायो। सो फल फूलनतें अधिकायो॥
इकदिन राजकुंअर तिहिंवारो। आय एक फल तोर्यो भारी॥
तापस लखिअति तामसछायो। लै फरसा तिहिं मारन धायो॥
क्रोध छाय दृग अंध सुकर्यो। अंध कूपमें सो गिरि मर्यो॥
मरि इह भव सो तापस तयो। चंड कोश दृग बिषधर भयो॥
अभयद निर्भय ह्वै जिननाथा। ताही पै गये करन सनाथा॥
तहं तप करि जिनवितईनोसा। अहि घरतैंकढ़िजिनतनडसा॥
दूधरुधिर कैं बदलैं निकसा। बदनकमलजिनवरकरविकसा॥
जातस्मर अहिकों जिन दीना। तिनसुनिसमझिचरनगहिलीना॥
प्रान तजे तिन करि संथारा। देव लोक आठवें सिधारा॥
नागसेठ घर पुनि जिननाथा। करिपारनतिहिंकियो सनाथा॥
पुनि भगवंत तहां तैं बिहरे। श्वेतंबिका नगर मैं ठहरे॥
नृपति प्रदेसी नाम तहां तिन। महिमा मानी जानिनाथजिन॥
आगे बिहरि सुरभि पुर पैठे। उतरन गंग नाव पर बैठे॥
बैर भाव सुरनाग कुमारा। लग्यो आय तहंबोरन वारा॥

पूरब भव तिन सिंह संभारा। वासुदेव ह्वै जेहिजिन मारा॥
सम्बल कम्बल देवन ताकौं। वरजि जताईजिन महिमाकौं॥
तिनहूं की पूरब भव करनी। सुनि बरनौं जो आगमबरनी॥
मथुरापुर जिनदास महाजन। तिननिजवृषजोरोइकदिनकुन॥
किहूं मित्र कौं मांगे दीनो। तिन अतिवाहिकरीबलहीनो॥
मरन बार नवकार सुनायो। मरि सुभ ध्यान देवपदपायो॥
संबल कंबल तिनकौं नामा। सब देवन मैं भये ललामा॥
पुनि जिनवर जग विहरनलागे। पांच सुमतिमितिकेरस पागे॥
क्रोध मान ममतादिक त्यागे। स्वच्छइच्छतजिबिहरनलागे॥
निरालंब जैसे आकासा। निस्प्रेही ज्यों पवन विलासा॥
सारदजलकी नांई निरमल। मरजादानतजतजिमिनिधिजल॥
खड्ग बिषान मान एकाकी। ससि सम ताप नजामैं बाकी॥
गुपत सकलइन्द्रिय कछुवालौं। चारित भर बाहक बरदा लौं॥
द्रव्य न देसन भाव न काला। प्रति बन्धेनहिंजिनजनपाला॥
ऐसैं जग बिचरैं जिन स्वामी। जिनजन गन के पूरन कामी॥
पंचरात नगरी मैं बसैं। इकनिसिगांव मांझ बसिनसैं॥
विष चन्द्रनलून मनिसमजाकैं। जीवन मरन समान सुताकैं॥
ऐसैं जिन जन पारंगामी। महाबीर बर भगवत स्वामी॥
विहरैं विचरैं विपन नगरमैं। अमल अचैल अबोल डगरमैं॥

घनाक्षरी॥

मानकौ न मान अपमान अपमानको न राग हू सौं राग न बिरागहै बिराग सौं। सूरजसे सूर पूरे सोमजैसे सौम रूरेधूरेहू अधूरे हैं सहन जाकोजाग सौं॥ धराधर जैसेधीर बीरबलबीर जैसे छीर नीरनिधि से गंभीर चीरत्याग सौं। ऐसैंबिहरत बीत राग महावीर स्वामीजाको यों महातम है आतमकी लागसौं॥

चौपाई॥

तदनंतर दूजे चौमासे। राज ग्रही नगरी मैं थासे॥

तातो मनखल बासा दीना। पारन विजयसेठ घर कीना॥
मनखलसुतगोसालकतिहिंठां।जिनगोहनलाग्योलखिमहिमां॥
जिनबर तबतिहिं छुयोभारो। तिनभाख्यो हो शिष्यतुम्हारो॥
स्वर्न बालुका पुर जिन आये। नंदन द्विज पारन करवाये॥
हो उपनंद तासु को भाई। गोसालक तहं भिच्छा पाई॥
कुत्सितान्न लहि कोप अधीनो। स्राप ताहि ऐसो कहि दीनो॥
जो मो धर्म्माचारज सांचो। तौ तुवघर जारै अगिनाचो॥
स्राप देत ताको घर जर्यो। क्रोध छाय ऐसो वल कर्यो॥
मनखलसुतनिजकृतअभिमानी। भयोछयो मद गरब गुमानी॥
चम्पा वृष्ट गांव मैं आये। चौथी वरषा तहां बिताये॥
जीरन सेठ निमंत्रन दीना। अभिनय के घर पारन कीना॥
लाठ देस मैं पुनि जिन आये। काउसग्ग तप ध्यान लगाये॥
तब तिहिंकाल ग्वालइक आई। जिन पग परधरिखीर रंधाई॥
बरखा रितु जिन तहां गंवाई। पुनि छठई बरखा जब आई॥
पुरी भद्रिका जिन छबि छाई। आठ मास रितु तहांबिताई॥
तहां बहुत उपसर्ग सहे जिन। चातुर मास सातवं पुनितिन॥
आलविका नगरी में आये। गोसालक उपसर्ग बढ़ाये॥
पुनितप समयसाल बनथलतैं। कट पूतना व्यंतरी गन तैं॥
बहु उपसर्ग भये जिनवरकौं। राज ग्रहो पुनिगये नगरकौं॥
बरष आठवां तहां बिताई। नवम अनारज थल मैं छाई॥
तहां भये उपसर्ग अनेका। गांउ कुचूरम देख्यो एका॥
तहं तापस इक अतितपसाधे। भारी जटा सीस पर बांधे॥
तातैं जतु जूय जो गिरै। तापसतिहिं फिरिसिर परधरै॥
गोसालक ता तपसी बरज्यो। सो तपसी ताऊपर तरज्यो॥
तेजोलेश चलाई तापैं। जरन लग्यो गोसालक जातैं॥
सहिनसके जिनपरम दयाला। सीतालेश तजीतिहिं काला।
गोसालक को मरत बचायो। तब गोसाल चेत चित पायो।

सिद्धारथ सौं पूछि तबै उन । साधी सिद्धि तेज लेशा पुन ॥
पुनि सावस्ती नगरी आई । दसईं बरखा तहां बिताई ॥
पुनि पोढाल नगर मैं जिनवर । काउसग्ग तप करि ठाढ़े धर ॥
जिन बल प्रबलप्रसंस प्रसंगा । इन्द्र सभा मैं भयो असंगा ॥
तहं अभव्य संगम सामानिक । चही परिच्छा करन अचानक ॥
तिहिं थल आय एक निसि मैं तिन । बीस किये उपसर्ग सहे जिन ॥
अहि गज सिंह आदि तनु धरि कैं । अमित उपाय किये तिन डरि कैं ॥
डग भर डिगे नहीं जिन स्वामी । भव भय जलनिधि पारंगामी ॥
यों छमास लौं सहि उपसर्गा । चूके नेक नहीं तप बर्गा ॥
तब तिहि इन्द्र आय अति दूरयौ । सो निज दोष मानि मुख सूरयौ ॥
नीत रीत हित तिहिं सुरराई । मेरचूल कौं दियो पठाई ॥
वृद्ध गुवाल तहां इक आयो । व्रत छ मास पारनौ करायो ॥
सुसमापुर पुनि आये जिनबर । चातुरमास ग्यारहैं तहं कर ॥
चमरुत्पात भयो ताही थल । कौसंबी में रहे महाबल ॥
तहां पोस बदि पड़िवा के दिन । जिनवर लियो अविग्रह सो सुन ॥
उड़द बाकला सूप कोन में । इक पग बाहर एक भौन में ॥
राजकुमारी मूंड़ मुड़ायें । पग बेड़ी अरु नांगे पायें ॥
दासी ह्वै रोवत मधि दिन मैं । तीन उपास तासु पारन मैं ॥
जो ऐसैं हमकौं बिहरावै । भाव भगति करि तो मन भावै ॥
ऐसैं कृत प्रतज्ञ ह्वै जिनबर । पारन हित नित बिचरैं घर घर ॥
दैवजोग तैं नृपति सथानिक । दधिबाहन नृप तिन कीनौ दिक ॥
मारि तासु की चंपानगरी । बन्द लूट कीनी सो सिगरी ॥
परी एक भट कर तिहि रानी । गही बिकल ह्वै जात परानी ॥
तिहिं भट तिहि बदन नर निहारयो । काटि जीभ तिन मरन सुधारयो ॥
बची तासु कब चंदन बेटी । चंदमुखी गुन रूप लपेटी ॥
ताहि मूढ़ भटी बेचन लाग्यो । धनासेठ तिहि लखि अनुराग्यो ॥
मुहु मांग्यो ताकौं धन दैकै । बाल चंदना मोल सुलैकै ॥

आयो घरैं लाय तिहिं राखी । हितमित बानी तासौं भाखी ॥
मूल कुमूला सेठ सिठानी । अतिकलहा तिहिंलखिअनखानी॥
कोपि तासु कौं मूंड़ मुड़ायो । पग बेड़ी दै कैद करायो ॥
तीन दिना लौं भूखी प्यासी । कैदैं माहिं रही सो दासी ॥
चौथे दिन तिय अनत सिधाई । सेठ खबर दासी की पाई ॥
काढ़ि बंद तैं बाहिर आनी । आश्वासित करि कहि मृदु बानी ॥
उड़द बाकला प्रस्तुत पाये । सूप कोन मैं ताहि दिवाये ॥
आप लुहारहि बोलन धायो । बेड़ी काटन हित मगवायो ॥
ऐसैं मैं जिनबर तहां आये । दौरि चंदना दरसन पाये ॥
अपनौ भाग्य बिचारि सभागी । उड़द जिनैं बिहरावन लागी ॥
तब जिन निज परतज्ञ बिचारी । सब पाई जो चित मैं धारी ॥
देस काल ज्यौं के त्यौं पाये । रुदन बिना सब भाव सुभाये ॥
यह चित धरि जिन फिरे बिरागी । बाल दुखित ह्वै रोवन लागी ॥
तब फिर फिर जिन पारन लीना । चंदन तियहिं कृतारथ कीना ॥
बेड़ी पगन आपही टूटी । बेनी सिर पर लांबी छूटी ॥
सकल देव गन लहि सुख हरखे । बारह कोटि सोनैया बरखे ॥
सो धन राजा लैन बिचारी । देव गिरा तहं प्रगटी भारी ॥
यह धन तेरे काम न आवै । जब चंदन तिय दिच्छा पावै ॥
ताकौं होय महोच्छव जबही । यह धन खरच होयगो तबही ॥
मृगावती राजा की रानी । सो चंदन की मासी जानी ॥
तिन चंदन कौं लई बुलाई । अपने ढिग राखी सुख पाई ॥
चातुरमास बारवैं जिनवर । चंपानगरी पहुंचि रहे कर ॥
मास तेरवैं बन तप कीना । पूरब भव बैरी तिन चीना ॥
जाके कान माहिं तिहिं भव मैं । तपत धात डारीही दव मैं ॥

अथ कथा ॥

ताकी कथा कहौं बिस्तारी । बासुदेव भव जिन अरिहारी ॥
एक समय नटनाटक सुनतैं । आवन लगी नींद सुख गुनतैं ॥

सेजपाल सौं तब उन भाखौ । इनकौं अब नाटक तैं राखौ ॥
यों कहि सोये नरबर स्वामी । पै बरजे नहिं उन धुनि कामी ॥
नाटक धुनि तैं प्रभु जब जागे । अज्ञालोप लेखि रिस पागे ॥
ताके कान माहिं तिहिं काला । घातु आटि डारी नरपाला ॥
अबकैं तिनतन ग्वालाको धरि । बैर पाछिलौ सुमिर कोपकरि ॥
तीखी मेख काठ की गढ़िकै । जिनतपसमयआयतिनबढ़िकै ॥
कानमाहिं गहि बल करिठोकी । बैर बदलिसबज्योंकी त्योंकी ॥
तिन पापी ऐसो दुख दीनौ । तिन बेदन कीनौ तन छीनौ ॥
तहतैं जिनबर बिहरि सिधाये । बैद खरक नामा घर आये ॥
तिनअतिबल करिकीली काढ़ी । जातैं अधिक बेदना बाढ़ी ॥
काढ़त सबद कियो जिन भारी । गिरि दरके घर घरकी सारी ॥
ह्यांलौं सब उपसर्ग बदे जे । भये संपूरन ते जिनवर के ॥

अथ महाबीर के बलज्ञान कल्पानक ॥

वैसैं बारह बरस पुराये । ता ऊपरछह मास बढ़ाये ॥
पंद्रह दिन ता ऊपर बीते । तीन पहर हूं तहां बितीते ॥
दसमी सुदि बैसाख मास तिन । बिजयमुहूरतसुव्रत नामदिन ॥
उत्तर फागुननखत जोगससि । गांउंज्ञ भकातिहिंवाहरबसि ॥
साल तरु तरैं रिजुसरिता तट । आतम तत्त्व ज्ञान पूरन घट ॥
छ उपास उत्तर तरु हेठे । चौबिहार करि उकडू बैठे ॥
तहं अति उत्तम ज्ञानन माहीं । केवलज्ञान लह्यो तिहिं ठाहीं ॥
ता दिन तें अरिहंत कहाये । सुरमुनिमनुमनजान सुहाये ॥
भीत ओट की नहिं कछु छानी । ऐसे जिनवर केवल ज्ञानी ॥
जीव गतागत भव कायाथित । मनबचकायकरमकीपरिमित ॥
गुपत प्रगट सब जानन हारे । यों विचरैं जिनवरभयडारे ॥

अथ समो सरन वर्णन ॥

जबैं भये जिन केवल ज्ञानी । सब जीवनकी छानी जानी ॥
तब ज्रिंभक नगरी में आये । सब देवन के भये बधाये ॥

चौंसठ इन्द्र चारि विधिके सुर । महिमा लाग करतजानगुर ॥
समोसरन जिनवर हित रच्यो । एको सुख जातैं नहिं बच्यो ॥
आदि जिनेसर हित हूं ऐसैं । सुरन रच्यो हो बरनों तैसैं ॥
बारह जोजन मिति ही ताकी । इक्के कोस ऊन की बाकी ॥
बाईसों जिन लौं या क्रम सों । रचयो समोसरन अनुपमसों ॥
तेईसों पारस जिन तारन । पांच कोस को रचितिनकारन ॥
महावीर स्वामी जिन हेता । चार कोस को कियोनिकेता ॥
सुथल समानस्वच्छ अतिनीको । परिधाकार भावतो जीको ॥
पुनि बैमानिक सुर तहं आये । तिहिं थल परगढ़तीनबनाये ॥
प्रथम रजित दूजो कंचनको । तीजो जोत मई रतननको ॥
रजित दुर्ग मैं मृगकुल जितने । बैर भाव तजि बसैं सु तितने ॥
दूजै कंचन दुर्गमझारी । सुत्रसबसैंखग कुलअविकारी ॥
रतनमयी तीजैं गढ़ माहीं । सुर मुनि नरनारी तिहिठाहीं ॥
बारह बिधि के ते सुभ साखैं । जाहिं परखदा बारह भाखैं ।
आठ जात के सुर सुर नारी । चारि संघ सो सुनि बिस्तारी ॥
बैमानिको भुवन पति व्यंतर । अरुजोतिको चारिविधिसुरवर ॥
चारि जातकी तिनकी नारी । साध साधवी अरु ब्रत धारी ॥
और श्राविकाश्रावकमिलिसब । भई परखदा बारह तहं तब ॥
ते सब रतनकोट के माहीं । अप अपने थल बसैं तहांहीं ॥
इकदिससाधु साधवीसुरतिय । सुरश्रावकश्रावकतियदिसबिय ॥
जोतकि ग्रहपति व्यंतर तीजैं । तिनकी तिय चौथी दिसधीजैं ॥
योंबारहों परखदा सिगरी । मनिमै दुर्ग बसैं गुन अगरी ॥
तिन तीनों गढ़ के सुभ साजा । चारिचारिचहुंदिसि दरवाजा ॥
हीरन की तोरन तहं सोहैं । सुरमुनि मनु गन के मनमोहैं ॥
अनगन नगको जग मगजोती । खचेसदन मनि मानिकमोती ॥
भांतिभांति फूली फुल वारी । पचरंगरंगनिचुरतिसी क्यारी ॥
दसों दिसा सौरभ भरिउमड़ी । चहु दिसितैंअलिअवलीझुमड़ी ॥

बर सरवर तरवर घन मांहीं। ठौरठौर सुठि स्वच्छ तहाहीं॥
चहुं दिसिजाके मनि सोपाना। फूले बिमलकमल कुलनाना॥
भौंरझौंर जिनके रस राते। मधु मकरंद छके मदमाते॥
राजहंस के बस अनेका। कुंज पुंज मंजुल गन भेका॥
अच्छप्रतच्छ स्वच्छजलमाहीं। मच्छकच्छ परतच्छ दिखाहीं॥
निसिदिनदिनमनिगनदुतिचहिकैं। कोकसोकछाड़तसुखलहिकैं॥
यों अनेक जलचर जलपच्छी। बरबलाक सारस छबिअच्छी॥
सुखसमाज कारज जग जेते। नृत्य नाट्य गंध्रप गुन तेते॥
बिबुध बधू अप्सर किन्नरबर। मिलि नाचतगावत मधुरे सुर॥
तंत्र बितंत्र सुषिर घन आवज। बीन बेनु कठताल पखावज॥
इन्हें आदि दै जेजे बाजे। ते अगिनत तहं बाजिबिराजे॥
और कहां लौं कबि जन बरनैं। होयन अमितगुनन कौनिरनैं॥
सुरन रच्यो ऐसो सुखदायक। थल अनूपजिननायकलायक॥
जिन जिनके अतिसै चौंतीसा। सोबरनौं अब बिस्वा बीसा॥
तन बिन सेद बिमल बिनछाया। सुरभि सुरूपसुलच्छनकाया॥
छीर बरन स्रोनितरंग जिनकौ। समचतुरस्रसंस्थ तन तिनकौ॥
अमितवीर्यअतिप्रिय हितबानी। बज्र नराच रिषभ तनमानी॥
छेम सुभिच्छ आठ सैकोसा। गगनगामि जनमित्र अदोसा॥
चतुरानन सबजिय बध बारक। सबउपसर्ग रहितजिनतारक॥
बरबिद्वेश केश नख समता। कवलअहाररहित जिनगमता॥
अनमिखअरध मागधीभाखा। फूलि फलेसब रितु तरुसाखा॥
दर्पनसम भुव जन मुदकारी। बहै सुरभि अनुकूल बयारी॥
भुवकंटक रज कांकर हीनो। सुरभि सलिलबरसनरतभीनो॥
कनककमलरचनाजिनपगतर। नमितसकलअनतरुबरफरभर॥
अमलअकास और दसआसा। सुरगन आकारन गुन खासा॥
धर्म चक्र आगें चलि राजै। अष्ट मंगलिक सन्मुख छाजै॥
चौंतीसौं अतिसय ये जिनके। कहौं अष्ट प्रतिहारज तिनके॥

तरु अशोक त्रय छत्रबिराजनि । भामंडलसुर दुन्दुभि बाजनि ॥
चंवर सिंघासनदिव्यधीरधुनि । कुसुमबृष्टिसुर करत तहांपुनि ॥
येई आठ कहे प्रतिहारज । चारिअनंत सुनौ सुखकारज ॥
ज्ञान अनंत अनंते दरसन । बल अनंत त्योंहीसुखवरसन ॥
ऐसे जिन जिनके हैं ये गुन । तिनकी महिमाबरनौ सोसुन ॥
समोसरन की मध्य मही मैं । जाकी महिमा प्रथम कही मैं ॥
कनकदंड मनिखचित विराजै । जोजन सहस उच्चछबि छाजै ॥
तापर पंचरंग धुजा विराजै । इन्द्रधनुष जाकौ लखि लाजै ॥
तहं अशोक अरु शोक निवारैं । तिहिं तररतन सिंघासन ढारैं ॥
छत्र तीन सिर ऊपर सोहै । वदन प्रभा भामंडल मोहै ॥
ता थल महाबीर जिनस्वामी । बैठें कनक सिंघासन नामी ॥
चारयो दिस करि चार बदनतैं । मेघगिरा गंभीर सबनतैं ॥
धर्म बखान बखानै जासैं । सब समझैं अपनी भाखामैं ॥
पै यह धर्म देसना बानी । सुनी सबन पै किहूं न मानी ॥
सो जग माहिं अचंभो भयो । प्रथम अछेरन मैं सो कह्यो ॥
जिनवर सो थलहीनविचारयो । पापापुरी नाम तिहिं धारयो ॥
तिहीं राततिहं तैं जिन बिहरे । मध्यम पाप सेन बनठहरे ॥
जृम्भक नगरी मैं तिहिं काला । सोमलद्विजक्रतुकियोबिसाला ॥
ग्यारह द्विज वेदज्ञ विचच्छन ।जिनकेशिष्य अनेक सुलच्छन ॥
इन्द्रभूति आदिक तिहिं नामा । बिद्या सागर गुनगन धामा ॥
औरो द्विज अनेक तहं पागे । आप आपने अधिकारन लागे ॥
जज्ञकरन लागे सबद्विजमिल । समोसरेजिनवरतबतिहिंथिल ॥
अष्ट महाप्रतिहार तीन गढ़ । मिली परखदा बारहबर बढ़ ॥
देव दुंदभी बाजन लागे । सुरगन सब आये गुन पागे ॥
सुर आवत लखिद्विजन बिचारी । इहां जज्ञ आवत असुरारी ॥
जब इहतैं सुर अनत सिधारे । द्विजबर कोपभरे अति भारे ॥
इंद्रजालि यह कोऊ भारी । जिन बंचे अनगन असुरारी ॥

यातैं याके तट अब जैये। विद्या वाद बिबाद हरैये ॥
ऐसैं कहि तहं से द्विज नायक। संग पांचसै शिष्य सुलायक ॥
समो सरन थल पहुंचे आई। जहां मिले सब सुर समुदाई ॥
जिनवरमहिमा लखिभयपाये । लखिअभुता अदभुतरसछाये ॥
तबतें द्विज मन यहै बिचारैं। जौं जन मन संदेह निबारैं ॥
तौ हम इनकी महिमा जानैं। जिनवर महाबीर कर मानैं ॥
ऐसैं जब उन हिये बिचारी। जिनवर मन की जानी सारी ॥
पहिलैं स्वागति करि सतकारे। पुनिसन्मानि मान दै भारे ॥
कह्यो तुमारे उर अंतर जो। सो हम सब जानैं सुनियेसो ॥
तीन दकार चहत तुम भाख्यो। अरथ तासुको पूछन राख्यौ ॥
सो हम तुमकौं देहिं बताई। दया दान दम तीनौ भाई ॥
इन्द्रभूति सुन बिस्मित भयो। चकित होय अदभुतरस छयो ॥
जिन महिमा उन निहचै जानी। जैनी दिच्छालै सनमानी ॥
औरौं दसौं बिप्र जे रहे। शिष्यन सहित जैन पथ गहे ॥
भये ग्यारहैं गनधर नामी। सबप्रतिबोधे जिनवर स्वामी ॥
एक मुहूरत माहिं पढ़े सब। द्वादस अंगी चौदस पूरब ॥
तिनमैं इन्द्रभूति जो रहैं। तिनहीकौं गोतम जिन कहैं ॥
सो गोतमस्वामी महिमा सुन। अदभुत रूप उदार चारगुन ॥
जावजीव जिन छठतप कीना। लब्ध अठाइस जिहिं आधीन ॥
आठसिद्धि अरु चार ज्ञानजुत। इक केवल बिन सबगुन संयुत ॥
इकदिन जिनसौं पूछ्यो गोतम । क्योंकरिकेवलमिले महातम ॥
बीतराग भाख्यो गोतम सौं । करौ अष्टपद तीरथ क्रमसौं ॥
तद्भव सिद्धि तुम्हैं तहं मिले। सुनि गोतम अष्टापद चले ॥
अपनी लब्धन के बल बढ़े। पहुंचि तुरत तिहिं ऊपर चढ़े ॥
प्रथम जुहारि सकल थल सोधे। तिर्यकजृम्भक सुर प्रतिबोधे ॥
जब उत तें उतरन चित दीने। पंद्रहसै तापस सिख कीने ॥
जिहिं जिहिंगोतमदिच्छादीनी । तिनतिनसबनज्ञानपथचीन्ही ॥

लऊ न ज्ञान गोतमैं होई। तब जिनवर सौं पूछ्यौसोई ॥
वीत राग गोतम सौं भाख्यौ। तुममोपैअति राग जुराख्यौ ॥
ताहि तजौ तौ उपजै ज्ञाना। बिन त्यागेकछुपरै न जाना ॥
तब गोतम भाख्यौ बरजिनसौं। छुटै न राग तुमारौ मनसौं ॥
सुनि मनमानि कह्यो गोतम से। तुमहू अंत होय हौ हम से ॥
ऐसैं कहि कहि अति हित पोखे। गोतम स्वामीहू संतोखे ॥
चातुरमास जिते जहं जिनवर। रहे सु अब भाखौं इकठेकर ॥
अस्थिगांव पहिलै चौमासे। महाबीर जिनवर तहं थासे ॥
चंपा पृष्ठि चंप चित दीने। तहां तीन चौमासे कीने ॥
बानिज गांव विसालै माहीं। बारह बरखा रहे तहांहीं ॥
राजग्रही नगरी तब आये। चौदह चातुरमास बिताये ॥
मिथिला में छह कीने स्वामी। दोय भद्रिका पुरी सुधामी ॥
आलभिका में एकै बरखा। सावस्ती इक बिताई बरखा ॥
एकै देस अनारज माहीं। चौमासा भरि रहे तहांहीं ॥
हस्तिपाल नृप राज सभासैं। अंतएक बरखा बसि तामैं ॥

अथ महाबीर मोक्षकल्पानक ॥

बयालीस बरसात बितातें। याको पाख सातवां बीतें ॥
तीस बरसग्रह आश्रम गहिकें। साढ़ेबारह चारित लहिकें ॥
रहि छद मस्त पने पुनि पायो। केवल वत्सर तीस बितायो ॥
बरस बहत्तर पूरे भये। उत्सर्प्पनी काल बय मये ॥
सुखम दुखम चौथे आरे के। कोड़ा कोड़ एक बारे के ॥
सहस बयालिस बरसऊन मैं। तीन बरस चौमास दून मैं ॥
ता ऊपर पंद्रह दिन रहतें। पावानगरी माहिं निबहतें ॥
हस्तिपाल नृप थल मंडही मैं। स्वातिनखत संगम ससिहीमैं ॥
कातिक कृष्णा कुहू निस रहतें। चंद्र नाम संबत्सर कहतें ॥
प्रीत वर्द्ध नामा जहं मासा। पाख नंदवर्द्धन कहि खासा ॥
अग्निबेश दिन देवानंदा। तिहीं निसा कौ नाम अमंदा ॥

चौबिहार है वास सुधारे। सूर उदय तें प्रथम सकारे॥
पदमासन सुन आसन ठाने। चंपाबन अध्यैन बखाने॥
सुख बिपाक मंगल फल भाखैं। पंचावन अध्यैन सुसाखैं॥
दुखविपाक ताकौ फल कहते। बत्तिस ध्यैनन पूछे बहते॥
तिहिं छिन ताही काल बसंता। जिनबर महाबीर भगवंता॥
मुक्ति जानकौं सुसमय लह्यौ। तब तहं इन्द्र आन यों कह्यौ॥
जै क्योंहू करि यह छिन बीतै। घरी दोय यह काल बितीतै॥
ना तरु दुष्ट भस्मग्रह छैहै। सकलअसुभफलबल दलसैहै॥
याकौ फल है सहस बरसलौं। साध साधवी जती सतीकौं॥
अधिक मान सनमान न होई। जबलौं बरस न बीतै सोई॥
सुनिबोले सुरपति सौंजिनबर। सुरगिरचालनसकौधरनिपर॥
पै यह समौ न टाल्यो जाई। जोकरमनथिति बांधि बनाई॥
यों कहि सब बंधन तजि दीने। आठौं कर्म तजे स्वाधीने॥
सिद्धिबुद्धि जुत मुक्ति सिधारे। सकलभीम भवभय निरवारे॥
तब सुर चंदनमय चय कीना। अगिनकुमारअगिनरचिदीना॥
बायकुमार अगिन परजारी। मेघ कुमार सींचि चय डारी॥
उत्तर संसकार बरजिन कौं। ऐसैं भयो भयो दुख जन कौं॥
नव मल्ली नव लच्छ आदिदै। मिले अठारह नृपता थलपै॥
तनसब तिहिंनिरबानरैनदिन। पोसाकरिबितयोसोदिनछिन॥
ग्यान जोतजिन सिद्ध सिधारे। फैलिगये जग मैं तम भारे॥
तब सब लोगन दीवा बारे। नाम दिवारी तबतैं पारे॥
पुनि भगवंत मुक्ति तदनंतर। सुच्छम जीवकंथुआ धरपर॥
उपजेतिहिं लखिप्राय साधुजन। त्यागिआपअन त्यागिदयेतन॥
शिष्यन सौं गुरु कहनलगे यौं। अबचारितदुस्साध्यभयोंस्यों॥
मुक्ति समैनिजलहिजिन उत्तम। दिच्छा हित पठये हैगोतम॥
तिन निरबान समै देवन तैं। पूछ्यौ तुम कितजातसदन तैं॥
देवन जिन निरबान सुनायो। सुनि गोतमअतिसैदुखपायो॥

मोह महातम जानि महातम। जिनअनुरागतज्यौजिनगोतम॥
तजत राग उपज्यौ पद केवल। बैठे जिनवर पाट महावल ॥
अबसब तपस्स्या जिनवरको। बरनि बखानिकहौं बरनरको ॥
द्वै छमास तप किये प्रवीने। तासैं एक पांच दिन हीने॥
चौमासी नव दोय तिमासी। ढाइमास द्वै छह द्वै मासी ॥
बारह डेढ़ मासि तप कीना। मास छपन अस्मीवसुहीना ॥
बारह पाष पाष ब्रत धारा। द्वै सै उनतीस अठवारा ॥
प्रतिमा भद्र दोय दिन कीने। महा भद्र दिन चारि प्रवीने ॥
भद्रसर्वतो दिन दस कीने। इकदिनसेंजिहिंदिच्छा लीने ॥
इक दिन ऊन तीनसौ साढ़े। पारन दिन सवगिनलीबाढ़े॥
औरौ बहुत तपस्या दिन भल। साढ़े बारह बरस भयेमिल॥
ये सब दिन्न छदमस्त विताये। तीस बरस केवल पद पाये ॥
तीस बरस गृह आश्रम कीना। आयु बहत्तर सबभरि लीना ॥
अब सव महाबीर परिवारा। कहौं साध दस चारि हजारा ॥
बत्तिस सहस साधवी जानौ। अबजिनजनश्रावक परमानौ॥
इकलख उनसठ सहस सुनाऊं। अनसव जे स्त्राबिकागिनाऊं॥
लाख तीन अरु सहस अठारा। यहसबजिनजनघनपरिवारा॥
तेरह सै जहं अवधि ग्यानधर। केवल ज्ञानि सात सै बरनर ॥
त्रयसठ चौदह पूरव ग्यानी। वयक्रीय सै सात बखानी॥
ऐसे बिमल बुद्धि सौ पांचा। मन मनसा समझैं जे सांचा॥
जे काहू तैं कबहुं न हारैं। ऐसे बर बादी सैचारैं॥
जिन जन जिनतैं दिच्छा लही। मुकत गये सु सातसै सही॥
चौदह सै साधी जिन हाथा। चारित लैकै भईं सनाथा॥
अनउत्तरिय आठ सै भये। जिन परिवार कहे सुख छये॥
भूमि अन्तकृत दुहूं प्रकारा। कहियत जिनवरकै अवतारा॥
इक युगन्त कृत भूमि कहावै। दूजै परिया यान्त बतावै॥
मुकत अनन्तर तीन पाटलौ। चल्यौमुकतपथकहियगांतलौं॥

चारि बरस केवल ग्यानन्तर । चल्यो मुकतमारगतदनन्तर ॥
सु परियांत कृत भूमि कहीजै । दुहूं भूमि जिनवरहि पतीजै ॥
तदनन्तर नौसौ अस्सी सन । भयो बड़ौ दुरभिच्छ भयावन ॥
सबबिच्छेदभयोलखिजिनजन । लिखन लगेपुस्तक तबतेधन ॥
नौसै नवति बरस त्रय बीतें । कई कहैं तब लिखे सप्रीतें ॥
इक बाचन बलभी नगरी है । देवड्गन छम समन करी है ॥
दूजी बाचन मथुरा नगरी । करी कन्दला चारज सिगरी ॥

इति श्री महाबीर स्वामी अधिकारसंपूर्ण ॥

श्रीपारसनाथ अधिकार ॥

दोहा ॥

अब श्रीपारसनाथकेपांचौजे कल्यान । चवन जनम चारित्र अरु परम ग्यान निरबान ॥ जब जब इन पांचौन को भवमें भयो सं- जोग । तब तब नखत बिसाखही मांहि रह्यो ससिजोग ॥ पारस पूरब दस जनम जेजे भये निदान । तिनतिनको बरनन करों कछु संक्षेप वखान ॥ पोतनपुर अरबिन्द नृप विप्रपुरोहित तासु । क- मठ और मरुभूत द्वै पुत्र पुरोहित जासु ॥ मरुसुन्दरी बसुंधरा नाम बाम छबि जाल । तासों कमठकुपूतने करीकुरीतकुचाल ॥ सो सुनि मरु मरु भूमि लौं भयो प्रीति रस हीन । करीकठिन- ताडन भयो मन करि कमठ मलीन ॥ सकुचिसोचि संसारतजि तिन तप कीनोजाय । सहज सरल मन मरुगयो तिहि तट दोष खिमाय ॥ पैतिन तापस कमठ ने मारयो मरु करिक्रोध । यहै बिप्र सुत दुहुन को भयो प्रथम भवबोध ॥ सो मरु मरि हाथी भयो कमठ भयो मरि सर्प । बैर सुमिर ता दुरद को डस्यो सर्प करि दर्प ॥ यह दूजो भव फेर गज मरि सुर भयो सुजान । कमठ जीव अहि मरि भयो नरक निवासि निदान ॥ यह तीजो चौथो भयो मरु विद्याधर रूप । निकसि नरक तैं कमठ फिरि भयो भुजङ्गमभूप ॥ डसिबिद्याधर कौं बहुरनरकनिबास्योसोय ।

बिद्याधर मरि बारवैं सु पुरको सुर होय ॥ भयोपांचवौंभवयहै पुनि मरु मरि नृप होय। बज्र नाभि नामा लियो चारित तिन मल धोय ॥ भयो भील भव कमठ तिन नृपहि मारि मरि भील। नरक गयोभव सातवैं नृप सुर भयो सुसील ॥ चक्रवर्तमरुजीव पुनि भयो भये भव आठ। कमठ जीव ह्वै सिंघ पुनि हत्योताहि सुनि पाठ॥ पुनि मरु सुर ह्वै कमठ लहि नरक नवैं भवफेर। मरु जिय पारसनाथ ह्वै प्रगट्यो दसवैं हेर ॥

अथ श्री पारसनाथस्वामी चवन कल्यानक ॥

जंबु दीप थल भरत मेंपुरी बनारस धाम। अस्वसेन नृप राज घर रानी बामा नाम ॥ तासु कूष में चैतबदि चौथ भयें अध-रात दसम देवता लोकतें मरु जिय च्वै बिख्यात ॥ नृप लिय बामा तिहि समय कछु सोवत कछु जाग। नखत बिसाख जोग ससि सुपन चौदहों लाग ॥ सुरसम्बन्धी आउ तजि तजि अहार बिवहार। गर्भरूप त्रयग्यानजुत भयो गर्भआधार ॥ चवनसमय जान्यो नहीं चवि जान्यो जिन ज्ञान। बामा सोसुभ सुपन फल कह्यो सुजान न आन ॥ बाम सुपन फल सुनि समुझिमोदानन्द बढ़ाय। करन लगी निज गर्भकीरच्छा अति सुख पाय ॥ गर्भबास केमासजब गयेसवानव बीत। पूस असित तिथिदसमि को नखत बिशाखप्रतीत ॥

अथ श्री पारसनाथ जन्म कल्यानक ॥

निस निसीथ बीते बिदित श्रीजिन पारसनाथ। प्रगटि जन्म लै मात की कीनीकूष सनाथ ॥ छप्पन दिसा कुमारि अरु चौसठ इन्द्रन आय। महाबीर जिन लौं कियो जनम महोच्छौ चाय ॥ अश्वसेन नृप हू कियो मङ्गल मोद बढ़ाय। जैसे सिद्धारथ नृपति कियोमहोच्छव चाय ॥ गुनबयबिद्याबिनयबररूपसीलसुघराय। जुत श्रीपारसनाथ जिन प्रगट भयेसुभ भाय॥ तीनग्यान करि सहित जिनश्रुति मति अवधि अधार। हरित बरन नव हाथ

बपु भुक्ति मुक्ति दातार ॥ सिसु पौगंडकुमार बय क्रमक्रम भई
बितीत । तब तरुनाई तरनि की भई उदय परतीत ॥ नगर कु-
शस्थ प्रसेनजित नृपति सुता सुभजासु । प्रभावती इहि नामजिन
पारसब्याहीतासु ॥ दम्पतिसुखसम्पतिभरे करिगृहस्थबिवहार ।
बिषय भोग सुख भोगि सब चारित पर मन धार ॥ इक तापस
पंचाग्नितप साधत लखि जिन जान । ताहिकह्योरे मूढ़ क्योंसा-
धत तप अग्यान ॥ यों कहिगहि ता अगिनतें जरत निकासेदोय ।
सर्प्प सर्प्पिनी अधजरै मरन लगेलखि सोय ॥ आदि पांचनौकार
के पांचौ बरन सहेत । असि आउसा बिचारि चित तुरत उता-
र्ण हेत ॥ दीने तिन्हें सुनायते बोधि देवपद पाय । धरनइन्द्र
अहि मरि भयो पदमावति तिय चाय ॥ सो तापस हो कमठ
जिय लज्जित ह्वै सकुचाय । मेघमालिसुरमरिभयोधारिबैरहिय
भाय ॥ दिच्छा समय चितावने नव लौकान्तकदेव । आयजिने-
सर को करी जैनन्दा कहि सेव ॥

अथ श्री पारसनाथ दिक्षा कल्यानक ॥

तबजिनवर संसार तजि दीने बरसीदान । धन पूरन ह्वैहमीकरी
अर्थी रह्यो न आन ॥ पुनिएकादस पूस बदि दुपहर दिन तजि
राग । दिब्य पालकी चढ़ि पहरि भूषन बसन सभाग ॥ चौंसठ
इन्द्रन आदि दै बिबुध बिबिध की भीर । नर नारी सब नगरके
संगचले धरिधीर ॥ पुरी बनारस बीच ह्वै निकसि बिपिन घन
पाय । उतरि अशोक सुतरु तरैं दीनों सोक मिटाय ॥ चौबिहार
उपवास द्वै सकल सिंगार उतार । पाय बिसाखा जोग ससि
तजि सब सुख संसार ॥ सहित अहित बर तीनसै उत्तम राज-
कुमार । देवदूष पटयुत लियो चारित पद निरधार ॥ रहे फेर
छदमस्त दिन रैन असी अरु तीन । देव मनुष पशु कृत सहेअति
उपसर्ग नवीन ॥ दिच्छाकै दिन दूसरै कियो बिहार अहार ।
पंचद्रब्य बरषा करी देवन महिमा भार ॥ पुनि जिन देस कलिङ्ग

में काउसग्ग तप धार। रहेगुहा गिर की गहैं आतम तत्व बि-
चार ॥ मेरतुङ्ग नामा तहां एक महागजराज। सुगंड सलिलकर
कंजलै पूजे जिन सिरताज ॥ लैअनसन पुनि मरिभयो सुरकुलि
कुंड थलेस। पहिले भव सो गजहुतो वपुबावनौ नरेस ॥ पुनि
जिनवर तहतैं कियो दच्छिन देस बिहार। तापस थल बट वृक्ष
तर सांझ काउसगधार ॥ आय मेघ मालो तहां कमठ जीव
अवतार। करन लग्यो उपसर्ग अति पूरब बैर बिचार ॥ अहि
बिच्छी बैताल गज सिंघरूप धरिदुष्ट। बहु बिधि जिनभगवन्तसों
करी दुष्टता पुष्ट ॥ तौऊ जिन दृढ़ ध्यानकी छुटी न सहज स-
माधि। सो लखि पुनि कोप्यो अधिकबाधनलग्यो असाध॥ प्रलय
मेघ बपु धरि लग्यो बरसन मूसल धार। भयो घनो घनघिरि
घुमरि सूची बेध अंधार ॥ करकन लागी बीजुली तरकनलागी
भूम। घरकन लागे सकल जिय परी भूमि नभ धूम ॥ नदीकूप
सर बावरी भरि उमह्योजलभार। चरनजानु कटिउदर उर कण्ठ
चढ्योबढ़िबार। तऊ अचलआतम सुरस मगन महातम भूप।
तजी न नेकौ लयलगन जिनवर अभय सरूप॥ तबधरेंद्र पद्मा-
वती अवधि ग्यान करिजान। आयतहां जिनराजको कंधचढ़ाय
निदान ॥ सहस फणानको छत्रसिर धरिजिनकै दिनतीन। रहि
ऐसै निदर्‌यो बहुर मेघमालि बलहीन ॥ सो तब हारिबिचारि
चितपरि पारसके पाय। विनय सुनायवचाय जिय लीने दोष
खिमाय ॥ तादिन तें ताभूमिपर नगरी एकसुधाम। सुबसवसी
सोभालसी जिहि अहिछत्रानाम ॥ पुनि जिन गुपत सुतीन अरु
सुमति पांचलै साथ। साधरूप बिरचनलगे जिनजन करेसना-
थ ॥ छदमस्ता वस्थारही असी तीनदिन रैन। चौरासीवीं रात
मैं पायो आतमचैन ॥

अथ श्रीपारसनाथ ग्यान कल्यानक ॥

चैत कृष्णा तिथि चौथ ससि नखत बिसाखापाय। लहिअपरा-

हरु घाहतरु तरें समाधि लगाय ॥ पायो केवल ग्यान पद चौदह राज प्रतच्छ । इन जिनके बोधे भये गनधर आठ सुगच्छ ॥ शुभ अरु घोष बसिष्ठ पुनि ब्रह्मचारि अरु सोम । बीरभद्र श्रीधर सुजस गनधर आठ अजोम ॥ साध सम्पदा सुभ तहां सोलहसहस बखान । सहस आठ जुत तीस अब सुभगसाधवी मान ॥ एक लाख चौंसठ सहस जिनजन श्रावक जान । तीनलाख सुभ श्राविका सहस अठावन मान ॥ पंचासत सत सातयुत चौदह पूरव जान । अवधिग्यान ज्ञानी गने चौदह सै सुज्ञान ॥ केवलग्यानी सहस इक छसै बइक्रीवान । साध मुक्तिगामी सहसदूनो साध्वी जान ॥ बिपुल सुमतिधर आठसै बादीछसै सुजान । सर्व्वारथ सिधिजे गये बारहसै ते मान ॥ दुहुं बिधि भूमी अन्तकृत इक जुगान्तकृत होय । दूजी है परयान्तकृत प्रथम कही सब सोय ॥ तीस बरस ग्रह बास दिन ग्यासी निस छदमस्त । कछुकम सत्तर बरस कुल केवल ग्यान समस्त ॥ सरव आयु सौबरस की पूरन करि जिन जान । लह्योपरमपद मोख को सोअब कहौंनिदान ॥

अथ श्रीपारसनाथ मोक्ष कल्यानक ॥

तिथि सावन सुदि अष्टमी निसि निसीथ जिन नाथ । परबत सिषर समेत पर तेइस साधन साथ ॥ नखत बिसाखा जोग ससिचौबिहारव्रतसाध ॥ काउसग्गतप लयं लगेपायोमुक्तिअबाध ॥

अथश्री नेमनाथ अधिकार ॥

अब बरनौं श्रीनेम के पांचौ वर कल्यान । चवन जनम चारित्र अरु परम ग्यान निरबान ॥ इन पाचौं कल्यान को जब जब भयो सजोग । तबतब चित्रा नखतही माहिं भयो ससि जोग ॥

अथ चवन कल्यानक ॥

कातिक बदि बारस सुतिथ नेमनाथ अरिहन्त । सुरसंबंधी आयु तिथ तजि सो जिय जयवन्त ॥ समुद बिजय यादव नृपति

सोरी पुरके मांह । सिवादेवि ता नृपति की रानी अति छबि छांह॥ निसि निसीथ में चवि कियो गर्भ माहिं तिनबास। क्रमक्रम करि बीते जबै गर्भ सवानव मास ॥ सुपनादिक जैसे प्रथम जिनजननी जे पाय। बरनि वखाने ते सकल त्योंहीं भये सहाय ॥

अथ श्रीनेमनाथ जन्म कल्यानक ॥

सावन सुदि तिथि पंचमी सिवादेवि के कूष । जिन जन्मे श्रीनेम प्रभु सुन्दर सगुन अरूष ॥ छप्पनदिसा कुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय। त्योंहीं मङ्गल मोद मय कियो महोच्छौ चाय ॥ समुद बिजय जयवन्त हूं मोद उछाह बढ़ाय । सिद्धारथ नृप लों कियो जनम महोच्छौ चाय॥ एक समय जिन जोर की महिमा सुरपति गेह । होत सुनो सुर एक तिन करी परिच्छा एह ॥ लखि जिन पौढ़े पालने आय अंक भरि तासु । सवालाख जोजन उड्यो ऊंचो चल्यो अकास ॥ जानिजान जिन ग्यान पथ बल करि मारीमुष्ट । सौ जोजन धरमें धस्यो फस्योदेव सो दुष्ट. सुरपति आय छुड़ाय तिहिं पायन पारि खिमाय । लै अपने सुरपुर गयो भयो मोद मैं जाय॥ समुद बिजय जिनके पिता सोरीपुर केराय । उग्रसेन मथुरानृपति तिनके गोती भाय ॥तिन इकदिन इक तापसी न्योत्यो पारन हेत।न्योति भूलिबैरीकियोसो मरिन्नपतिघरवेत॥गर्भबास बसि मातकी प्रकृत दुष्टकरिदीन।गर्भ जनम लहिमातपित मन अति भये मलीन॥दूषि सुतहि संदूषमें मूंदि मंदरीहाथ । दै यमुना जल बोरि तिहिं दीनोमथुरानाथ ॥ सोबहिसोरी नगरमें पाईबनिकसुभद्र । खोलिदेखिसुन्दर सुअनमान आपको छुद्र ॥ सो सौंप्यो बसुदेव को उग्रसेन सुतकंस । समद बिजय नृप कोअनुज सो बसुदेव प्रसंस ॥ राजग्रहीनगरी तहां तब तिहिं काल अनूप । जरासन्ध यादौप्रबल तानगरीको भूप ॥ सोयादवपति प्रति सहित बासुदेव पदपाय । भयोसुप्रबल प्रताप जुत सब यादव को राय ॥ जीवजसा ताकी सुता

बुधि गुन रूप प्रसंस । ब्याहि दई ताकों पिताउग्रसेन सुतकंस॥ ब्याहि ताहि तिन पायबल करि निज बापहि बन्द । मथुरापति पितु राज पर बैठि भयो स्वच्छन्द ॥तिन देवकन्पकी सुता नाम देवकी जासु । ब्याहिदई बसुदेवको अति हित चितकरि तासु ॥ लघु भ्राता इक कंसको अइमत्तौ इहि नाम । तजि ग्रहबास प्रबास सुख भयो साध अभिराम ॥ तिन इकदिन निज ग्यान करि होन हार की जान । जीवजसा भाभी निकट कही बात यह आन ॥ गर्भ देवकी बहिनको होय सातवौं जोय । सो तेरे भरतारको मारनहारो होय ॥ यह सुनि उनपति पास चलि बिथा सुनाई जाय । सुनि सचिन्त ह्वै कंस तब लै बसुदेव बुलाय ॥ बंचि वचन कहि कपटके बाचा लैदै साखि । सात गरभ तुम आपने देहु हमैं यइभाखि ॥ सत्य संधि बसुदेव तहं वचनबंध ह्वै नीठ । दए गर्भ सातौं नहीं दई बचन को पीठ ॥ जबजब प्रसवी देवकी तबतब लैसो गर्भ । सिला पटकि मारे सकल एक भांति छल अर्भ ॥ भयो सातवेंगर्भ में जब श्रीकृष्ण निवास । सुपन सात लखिदेवकी पूरीआसाथास॥ सिंहसूर ससि अगिन गजधुज बिमानबिख्यात। बासुदेव माता लखत एई सुपने सात ॥ गर्भकाल पूरन भयो भादौं वदि बुध बार । तिथि आठैं अधरात को लियो कृष्णअवतार ॥ सोइ गये सब पाहरू खुलि गये सकल किवार । कृष्णहि लै बसुदेव तबउतरे यमुना पार ॥ नन्द गोप घर तासुकी घरनि जसोदा नाम । जनमी पुत्री तिहि समै ताके अति अभिराम ॥ पहुंचतहां बसुदेव धरि सुतलै सुता उठाय। फिरे उतरि इहिबार पुनि निज घर पहुंचे आय॥ भोर भये पहरू जगे नृपतिसुनाई जाय । नृप सुनि त्योंहीं सोसुता लीनी तुरत मगाय ॥ देखि सुता ताके तबै छेदे नाकरु कान । भयो कंस मुदवन्त अति ह्वै निहिचिन्त निदान ॥ बासुदेवश्रीकृष्ण अबनन्दसदन केमांझ ।

नवससि लौं नितनित निपट बढ़न लगे दिन सांझ ॥ बालचरित अद्भुत करत हरत मात पित चित्त। लखि दृग हिये सिरात अति वारत तन मन वित्त ॥ इक दिन इक सरवग्य को पूछ्यो कंस सुचाहि। कहि कोमेरो शत्रुहै जातें मुहिभय आय॥ उन भाख्यो खरमेख अरु केसी वृषभ अरिष्ट। जो इन सब को मारिहै मारै तोहि सपष्ट॥ सुनि नृप त्यौंहीं तुरत तेइ इकइक दये पठाय। तेसबमारे सहजही बालचरित यदुराय॥ जानि कंस जिय संस वढ़ि भयो सोच मय सोय। अनहोनी होनी नहीं होनी होयसो होय॥ बहन सुभद्रा कंस की ताको रच्यो विवाह। दिस दिस तें आये नृपति जानि स्वयम्बर चाहि॥ सुनि मुदमय श्रीकृष्णहूं मथुराचलेउताल। जद्यपिवलि बरजे बिपुल रहे नाहिं नन्दलाल॥ चलत बाट काली उरग नाथ्यो पुनि गजमारि। मुष्टिकादि चानूर सबमारे मल्लपछारि॥ पुनि गहिकेस पछारिकै मार्‌यो भूपति कंस। सतभामा ताकी सुता ब्याही रूपप्रसंस॥ बरस तीनसै बासबय सोरह बरसी स्याम। तदपि रूप गुनवन्तबर दम्पति अति अभिराम॥ सब यादव मिलि आय तहं पाट बिठाये स्याम। ह्वै सबसेवा धर्मपर अ चर भये सकाम॥ जीव जसा तिय कंसकी तब अति दुखके भार। जरासन्ध पितु गेह चलि गई सहित परिवार॥ ताहिदेखि पितु दुखितह्वै चढ़नचह्यो करिक्रोध। कालकुमारन आयतहं नृपहिसुनायो बोध॥ह्वतें सेवकन उचितनहि कष्टकरहु जोभूप। मारिसत्रु आवैंतुरत तुवअज्ञाअनुरूप॥ यों कहि आयसु पायते सिगरे राजकुमार। चढ़े जुद्धहित राहमें यदुकुल देवि निहार॥ स्त्रापपाय तादेबिको भये सकलजरिछार। मथुरातजि जदुकुल गये सोरठ देस मझार॥ तहां बसाई द्वारिका धनद करो धनवृष्ट। कनक रचित मनिगनमई भई सुपुरी बरिष्ठ॥ तहां बसे परिवारलै श्री जदुनायकवीर। सहस्रपति सन्तत

सतत बाढ़ी आदव भीर ॥ रतन कंबलनको तहां ब्योपारी इक आय । बेच कछुक कछु लैगयो राजग्रहीमें लाय ॥ बेचन लाग्यो लखिलयो जीव जसा ललचाय । मोल पूछि बिसमितभई सवालाख सुनि भाय ॥ उन जो बेचै द्वारिका सो सबकही सु-नाय ।सुनिपूरव दुख जगि उठ्योपितुसोंकह्योदुखाय ॥ सोपितु सब भटकटकलै गजरथ तुरंग पदात । अमित फौजकी मौजसों कोपिचल्यो बिख्यात ॥ उनहूं तें श्रीकृष्णसुनि जदु कुल कटक समेत । चढ़ि पहुंचे मिलि परसपर रच्यो मच्यो नर खेत ॥ सैन रेनु ह्वै एक तहं भुब उड़ि नभ करि बास । आप छोनि छह रहि गई कीने आठ अकास ॥ किधौं सैनखुर रैनु उड़ि भई घोस की रैन । कृष्णचन्द मुखचंद तहं मनिगन उडुगनऐन ॥ किधौं धूरि धूंधर घने घन घुमड़े चहुंवोर । असि लरजन तरजन तड़ित गज गरजन घन घोर॥ सरसपरसपर बान बर बरसन अमित अपार । सोअखण्ड जलधार की झरी भरीभय भार ॥ स्रोनित सरिता कढ़ि बढ़ीसर भरि उमड़ि अपार । रुण्ड मुण्ड मण्डितरुधिर जल जलचर अनुहार ॥ प्रबल बली बलि बीर लखि जरासन्धि करि क्रोध । जरानाम बिद्याप्रबल प्रेरित करी प्रबोध ॥सो बिद्या कारनभई रुधिर बमन कैहेत । कृष्ण अनीक अनेकजनजादवभये अचेत॥नेमनिदेशित कृष्णतबअष्टम तप आराधि । प्रतिमा पाय महेन्द्रतें तिहिं प्रक्षाल जलसाधि ॥ सेचन करि सेना सकल लीनो मरतजिवाय । अतिउछाह करि कृष्ण तब दीनों सङ्ख बजाय॥तहांसङ्ख तीरथभयोप्रतिमा थापी सोय। फेरपरस्पर युद्धहित सजिसन्मुख ह्वै दोय॥ चक्र चलायो जोर करि जरासन्धिहरि ओर । कृष्णबचायसुताहिफिरि अरि मारयोअरजोर॥चारि कोटि जदु नृपसहस बत्तिसमहलसमेत । महाराजश्रीकृष्णयोंबसे द्वारिका खेत ॥ एकसमैजिनअतुलबल चरचासुरपतिलोक । चलोभलीसुर एकसुनिदईपरिच्छाओक ॥

बाम्यो गिर गिरनार ढिगसुर धारापुर एक । करनलग्यो सोबसि तहांअति उतपात अनेक ॥ द्वारवती के द्वारतैंनिकसि बाहरैं जोय। जाय ताहि राखै पकरि जकरिदेवता सोय ॥ एक समैं बलभद्र अरु कृष्णहि राखे घेर। मच्यो कुलाहल नगर मैं बगर बगरभय ढेर ॥ तब रुकमिनि श्रीनेम सौंभाख्यौ सनमुख हेर । कहा भयो कैसो सुन्यो कौन करत यहजोर ॥ तुमसे पुरुख अनंत बल छतैं उपद्रव एह । होय बडो अचरज यहै छुटै न मन संदेह ॥ सुनि श्रीजिन रथ चढि चले पहुचि नगर गढतोरि । जुटे युद्ध तादेव के सनमुख आयुध जोरि। अनिल अनल जल प्रबल सर दुहूं ओर तैंछोरि । अंतमोहसर मारिकैं सुरमोह्यो बरजोर ॥ सुरपति आय पिमाय तब पाय पारि सो देव । बिदा भयो सो बिबुधबर बिबिध भांत करि सेव ॥ तब श्रीजिन भगवंतवर नेमनाथअरि हंत । भये तीनसै बरसके क्रमक्रम वढ़िभगवंत॥तऊन तिनकेजीय मैं इच्छा व्याहनकाज । मातपिता करि सोच तब अति बिनये जिनराज ॥ सत भामा अरु रुकमिनी तिनहूं निपटनिहोरि । कंसबहिनराजी मती तासु सगाई जोरि ॥ सावनसुदिछठ सुभ लगन मंगलमैं ठह राय। चढी जान जादौंसई मथुरा पहुंचीजाय गाजन बाजन साज सब फूलबाग बर ख्याल । कल कौतक नट नाट्य भट चटकीले छबिजाल ॥ तासवास बासे अतर भूषण मनिगन भार । सजन समूहन संगलै उग्रसेन कै बार ॥ तहं घेरे पसु हेरिकैं सारथि पूछ्योनेम । बोल्यौ वह तुम व्याहके गौरवहित यहनेम ॥ गौरव हित पशुपुंजकौ घात तहां जिनहेर तिनकोहिंसा सुमिरि जिय दया आनि मति फेर ॥ मनिभूषण पसुपालकौं दैसब पसुहि छुडाय। तोरन हांतैं फिर फिरे सब आरंभ मिटाय ॥ मोद भई राजीमती शोच चढ़ी यह देष। खाय पछार महीगिरी लहि मूरछा विसेष ॥ अलिन आयकरि बीज-ना छिरकि गुलाब जगाय। करि सचेत झषकेतकी दई आगि

भड़काय ॥ बिरह बिथा बाढ़ी बिपुल बितन बान बिषबाय । रोम रोम सब रसिगई रोय रोय बिललाय ॥ नीरहीन जिमि मीन अति दीन छीन बिललात । तलफि तलफि बिलपति बिपुल नेमप्रेम उतपात ॥ तजिभूषण दूषण दये चीरे चीर अधीर । छुट पटात लोचत लटनि हिये अटत नहिपीर । अलिअवली चहुंओर तें अलि अम्बुज कैभाय । घरिसमुझावत कुअरि कौं क्यों ऐसे अकुलाय ॥ अज्यौं अरंभन ब्याह कौं कवारीकन्या तोहि । कहाभतो दुख दूसरौ दूलहलावैं जोहि ॥ यहसुनिधुनि सिर फिरि कह्यो ऐसेफेर न भाखि । मनबचक्रम मोपतिवहैइहि भव रवि ससि साखि ॥ जो उन छाड़ी मोहि तौ छाडौंकहा बिचार । हौं नहिं तिनको छाड़िहौं मनबचक्रम निरधार ॥ उत श्रीनेम उदासह्वै ज्यों पहुंचे निज गेह । नव लोकान्तक देवता दिच्छा समयो जेह ॥ आये ताहि चितावने मधुर बचनकरि सोय । कहन लगे कल्यान मय जयजयबन्ता होय ॥ सुनत सुमिरसमयोतुरत कीनै बरसीदान।भुव ऊरिन पूरनकरी भरी सकल धन धान ॥

अथ श्रीनेमनाथस्वामी दिक्षाकल्यानक ॥

सावन सुदि छठ तिथि सुदिन दुपहर चढ़ि सुखपाल । चौंसठ सुरपति सुर सकल सहित जिनेस दयाल ॥ पुरीद्वारिक बीचकै निकसि बाहरैंआय । पहुंचे गिरिगिरनार पै रेवत टूक हिंपाय ॥ निकट घनी अंबराइ तहं तरु असोक तर आय । उतरि तहां सुखपाल तें ससि चित्रा में पाय ॥ भूषन बसन उतारि सब पंच मुष्टि करि लोच । चौबिहार उपबास द्वै करि धरि आतम सोच ॥ देवदूषपट राखि इक छांडि सकल ग्रह साज । राजकुमार सहस्त्र संग लिय चारित जिनराज ॥

अथ श्रीनेमनाथ स्वामी ग्यानकल्यानक ॥

चव्वन निसि चारित्र पद पालि पचपनी रात । आसिन

बदि मावसभए निसि निसीथ बिख्यात ॥ बरगिरनार पहार पर बैंत वृक्षतर आय। चित्रा ससि उपवास द्वै चौविहार करिचाय ॥ परम ग्यान कल्यान मैं पायो केवल ग्यान। चौदह राज समान जन मन परनामहिं जान ॥ राजमती हूं आय तहं दिच्छा लै जिनहाथ। तजिसंसार असार सब बृत लै भई सनाथ॥ तब पूछ्यो श्रीकृष्ण यह एकओरकोप्रेम। कैसो सो भाखनलगे श्रीजिननायक नेम ॥ आठजनमकी प्रीतयह अब क्योंछूटै भ्रात। देवलोकमें चारि भव चारि और सुनि बात ॥ नृप धनभूत रु धनवती प्रिय मति अपराजीत। सङ्ख यशोमति चित्रगति रत्न वती समप्रीत ॥ नौसे भव राजीमती नेम नाथ के साथ। जनम जनम को बन्ध क्यों छुटे छुटावै हाथ ॥ अब इनको परिवार सुन गनधर गच्छ अठार। सहस अठरह साधु को सम्पति करि निरधार ॥ चालिस सहस सुसाधवी वरश्रावक इकलाख। तापर उनहत्तर सहस अब श्रावक तिय भाष ॥ तीनलाख उत्तर सहस बत्तिस गनतो जान। चौदह पूरब धरि कहे तै सौचारि बखन ॥ पन्द्रहसै ग्यानी अवधितिते बइस्रोधार। सहस बिपुलमति सातसै बादी बड़े विचार ॥ डेढ़ सहस वर साधु अरु शुभसाध्वी सैं तीन। जिन कर दिच्छा पायके भये मुक्तपद लीन ॥ दुहूं अन्तकृत भूमि ते इक युगान्तकृत जान। अरु दूजी परियान्तकृत नेमनाथ परिमान ॥ आउमान जिननाथ को अब सब करौं बखान। बरस तीनसै नेमजिन रहे कुमार सुजान ॥ छदिन ऊन द्वै मास पुनि रहेनाथ छदमस्त। बरस सातसै तिनसहित केवल ग्यान समस्त ॥

अथ श्रीनेमनाथ मोक्ष कल्यानक ॥

बरस सहस सब आउ के पूरन करिजिनराय। तिथि असाढ़सुदि अष्टमी चित्राजुत ससि पाय ॥ मध्यरात गिरनारपर उद्य तक गिरटूक। चौबिहार उपवास जुत धरिसुभ ध्यान

अचूक ॥ मुकत पधारे नेमप्रभुतदनन्तर तहं जान । सहसअसी अरु चार पर महाबीर निरबान ॥ सहस पचासी बरस पर नवसै बरस बितीत । और असी बीते लिख्यो कल्पसूत्र करि प्रीत ॥ नेम चरित पूरन भयो छठी बाचना मूल । होहु सकल कल्यानजुत जिनजन मन अनुकूल ॥

अथ सातवीं बाचना ॥ (अन्तराल)

चौबिस तीरथ नाथ केमुक्तान्तर को काल । सोवरनौं संछेप करि परम पुन्य को जाल ॥ अरु तिन जिन चौबीस केतातमातको नाउं ॥ चिन्हकाय मित तनवरनउमरजनम थितगाउं ॥ थित पांचौ कल्यान की मुकत थान कुल गोत । चवेजासु सुरलोकतैं ताकों नांव सजोत ॥ साध साधवी सकल अरु गनधर देबी जच्छ । चौवीसैं जिननाथ के कहौं प्रथम परतच्छ ॥ नेमनाथ मुनि सुव्रतको कुल जदुकुल हरिवंस । गोतमगोतसजोतयेप्रगटे कुल अब तंस । अरु सबको इक्ष्वाक कुलकश्यप गोती जान मुक्तथान जिन बीसको सिषर समेत बखान ॥ शेषचारिके मुक्ति थल प्रथक प्रथक सुनि सार । महावीर पावा पुरी नेमनाथ गिरनार ॥ बास पूज चम्पापुरी अष्टापदशुभथान । आदि जिनेसर सार वर रिषभ देव निरवान ॥ अब सबको संछेप करि सुनिये सब विस्तार । बरन चिन्ह परिवार वपु थित थल अन्तर सार ॥ तहां प्रथम बरनौं विदित महाबीर अधिकार । परम पुनीत प्रताप जुत आगम मत अनुसार ॥

अथमहावीरअन्तराला ॥ २५

चरम तिथंकरस्वामिवर महावीरभगवान । बर्द्धमानजिनसौंकह्यो त्रिसला मात निदान ॥ सिद्धारथ जिनके पिता हाथ सात मितिकाय । सुबरन बरन वखान तन लछन सिंह सुनाय ॥ बरस बहत्तर आउ थित तजिकै बिजय विमान । खत्रिकुराड चवि औतरे कश्यपगोत निधान ॥ चवन साढ़ सित छठ आसत

आसिन तेरस सार। देवा नन्दा कूषतें भयो गर्भ अपहार॥ चैत सिता तेरस जनम बर चारित अरु ज्ञान। अगहन बदि वैशाष सुदि दसमी क्रम करि जान॥ कातिक बदि आवस सुदिन दीपमालि जिहिंनाउ। महाबीर निरबान लहि पावा पुरको गांउ॥ बीर साध चौदह सहस सुभगसाधबी सार। सोरह सहसवखानिये जैनागम निरधार॥ देबी जहं सिद्धायका ब्रह्मशांतजहंजच्छ॥ग्यारह गन धर जानिये गौत मादिपरतच्छ॥

अथ श्री पारसनाथ अन्तराला लिख्यते॥

महाबीर निरबान तैं श्रीपारस निरबान। बरस अढ़ाईसै प्रथम भयोसुजानि सुजान॥अस्वसेन पारस पिता बाम्मादेबीमाय। सर्प चिन्ह नवहाथ वपु हरित बरनबरकाय॥ सकल आउ सौवरस थित प्रान तजोसुरलोक। तजि ताको बारा नसी जनम निवास्यो सोक। चौथ चैत बदि चवन अरु ताही तिथ में ग्यान। जनम पौषबदि दसम अरु ग्यारस दिक्ष्याजान॥ आठैं सावन शुक्लको लह्यो मोष निरबान। सुभथल सिषर समेत पर इक्ष्वाकी भगवान॥पारस मुनि सोरह सहस और साधवी सार। कही सहस अड़तीस गनि जैनागम बिस्तार॥ जिनके गनधर दस कहे धरन इन्द्र जहं जच्छ। दीपमान देबी कही पदमावती प्रतच्छ॥

अथ श्रीनेमनाथ स्वामी अन्तराला॥

सहसअसीअरु चारिमें ढाईसै कम जोय। श्री पारसु तैं नेमकी प्रथम मुक्त कहि सोय॥ समुद विजय जिनके पिता शिवा देबि जिहिं माय। सङ्ख लछन दस धनुष बपु नील बरन जिहिं काय॥सहस बरस थित आयुकी देव बिमान जयंत। तजिजनमेंहरिबंस कुलसोरी पुरबर सन्त॥ कातिक वदि बारस चवन जनम सुदिक्षा जासु। सावन सुदि तिथिपंचमी अरु छठक्रमकरि तासु॥ ग्यान अमावस आसनी मोष साढ़ सित आठ। गिरगिरनार सुथान पर ऐसें आगम पाठ॥नेम अठारह सहस मुनि

और साधवी सार। जैन धरम के मरम करि कहि चालीस हजा-र॥ देवी जिनकी अम्बिका गोमेध कहै जच्छ। ग्यारह गनधर नेमके आगम कहे प्रतच्छ॥

अथ श्री नमिनाथ अन्तराला॥ २१

श्रीनमिको जिननेमतें प्रथम परम निरवान। पांच लाख पूरो कह्यो बरआगम परमान॥ बिजय तात नमिनाथ के बिप्रा माता जान। कमल लच्छन पन्द्रह धनुष काया मान बखान॥ कनक वरन दस सहस थित सर्वारथ सिधि थान। तजिकें सुभ मिथिलापुरी छबि औतरे सुजान॥ आसिन पून्यो चव जनम सावन आठैं श्याम। सुभ असाढ़ नवमी असित चारित दिन अभिराम॥ अगहन सित एकादशी भये ग्यान आधार। लह्यो मोख बैसाख बदि दशमी सिखर मझार॥ बीस सहस नमिनाथके साध साधवी फेर। गिनती इकतालिस सहस जयनागम बिधि हेर॥ पगधाई देवी कही जिनकें भृगुटी जच्छ। गनधर श्रीनमिनाथके सतरह कहे प्रतच्छ॥

अथ श्रीमुनिसुब्रतस्वामी अन्तराला॥ २०

श्रीजिनवर नमि तें प्रथम मुनि सुब्रत्त निरवान। बर आगम अनुमित कह्यो छह लख पूरो जान॥ तात सुमित्र सुब्रतके पद्मावती सुमाय। कच्छप लछन स्याम तन बीस धनुष की काय॥ तीस सहस बर उमर तजि प्रान तजो सुरलोक। राजगृही हरि बंस कुल छबि जनमें अनशोक॥ सावन सुदि पून्यो चवन जनम जेठ बदि आठ। फागुनकी है द्वादसी सितासिता क्रम पाठ॥ चारित ग्यान रु जेठ बदि नौमी पायो मोख। कीनों सिखर समेत पर भवभय तजि संतोख॥ जानो मुनि मुनिसुब्रतके तीस सहस बिस्तार। सहस पचासे साधवी यहै जैनमत सार॥ नरदत्ता देवी कही बरुन नाम जह जच्छ। गनधर श्रीमुनिसुब्रतके अट्ठारह परतच्छ।

अथ श्रीमल्लिनाथ अन्तराला॥ १९

तिनहूं तें पहिले मुकति मल्लिनाथ को जान। ताको मिति आगम

भषित चउवन लाख बखान ॥ मल्लिनाथ पितु कुंभनृप प्रभावती तिहिमाय । हरित बरण लच्छन कलस धनु पचीस मिति काय ॥ बरस सहस पचपन सुथिततजि अपराजित लोक । मिथिला पुर चविऔतरे कुल इक्ष्वाक असोक ॥ चवन चौथसित फागुनी जनमचारितरु ग्यान । अगहन सित एकादसी ए तीनों कल्यान ॥ फागुन सितबारस बहुर सिषर समेत सुखेत । लह्यो परम निर्बान पद आतमतत्व समेत ॥ मल्लिनाथके साध सब कहे सहस चालीस । पचपन सहस सुसाधवी जानि लेहु बुधि ईस ॥ धरनप्रया देवीजहां कहि कुबेर बर जच्छ । मल्लिनाथ गनधर कहे अट्ठाइस परतच्छ ॥

अथ श्री अरहनाथ अन्तराला ॥ १८

नवलख कम इक कोटि मिति बरसप्रथम परवान । मल्लिनाथ तें मुक्तिबर अरहनाथ कीजान ॥ अरहनाथ की माय श्री देबि अर्जनाजान । पिता सुदरसनचिन्हजिहिं नन्दावर्त बखान ॥ कनक रंगधनु तीस बपु चौरासी सहसाय । छांड़ि जयंत बिमान निधि गजपुर प्रगटे आय ॥ चवि फागुन सित दूजसित कातिक बारस ग्यान । अगहन सुकला दसमि को जनम और निरबान ॥ ग्यारस अगहन सुकलमेंतज्यो गृहस्थावास । सिषरसमेतमुकत थल कुल इक्ष्वाको तास ॥ अरहनाथ के साधु सुभ कहे पचास हजार । साठ सहस्र जिहिं साधवी जैनागम अनुसार ॥ बरनी देवी धारनी जच्छराज जहं जच्छ । अरहनाथ जिननाथ के गन धरतीस प्रतच्छ ॥

अथ श्रीकुंथनाथ अन्तराला ॥ १९

अरहनाथ तें प्रथम श्रीकुंथनाथनिर्बान । लष इक्यान्नवे बरस कम पाव पल्य में जान ॥ पल्योपम सागर प्रमित पहिले कही बखान । आरन के अधिकार में काल मान परवान ॥ श्रीमति कांता मातके कुंथनाथ सुत जान । सूरसेन जिनके पिता छाग

चिन्ह पहिचान ॥ पैंतिस धनु कंचन बरन तन हजार सत मांह। पांच सहस कम आउथित छांड़ि सर्बसिध छांह ॥ हस्तनपुरचवि औतरे कुल इक्ष्वाक मझार। सावन कृष्णा नवमि तिथ चवन तासुनिरधार॥पहिली वदि बैसाष की पंचमचौदस फेर।क्रमकरि मोष बषान अरु दिच्छा जनम सुहेर ॥ ग्यानचैत सुदि तीजको पायो केवल जान । पांचौ तिथ कल्यानकी येई जान सुजान ॥ साठ सहस मुनि कुंथके और साधवीसार । जानौ साढ़े तीनसै साठरु पांच हजार ॥ बालादेबी भाषिये अरुगंधर्ब सुजच्छ। कुंथनाथ गनधर कहे सुभ पैंतीस प्रतच्छ ॥

अथ श्रीशांतनाथ स्वामी अन्तराला ॥ १६

कुंथनाथ तें प्रथम श्री शांतनाथ निरबान। पल्योपम की अर्द्ध मिति ताही के परमान ॥ बिश्वसेन जिनके पिता अचिरा मात बखान । मृग लंछन चालीस धनु कनक काय पहिचान ॥ लाख बरस थित आउ की तजि सर्बारथ सिद्ध। हस्तनपुर चविऔतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ असित सत्तमी भादवी चवन जेठ बदि फेर। तेरस जनम बखान सुनि मोषौ तामैंहेर ॥ जेठ वदीचौदस लियो चारितताप रग्यान।भयोपोससुदिनवमिकोजासुसिवर निर बान ॥ शांत साध बासठ सहस और साधवी सार। इकसठसहस रुदोयसै जैनागम अनुसार ॥ बानी देबी जासुकी गरुड़ नामबर जच्छ। शांतनाथ गनधर कहे तीसरु छह परतच्छ ॥

अथश्रीधर्मनाथस्वामी अन्तराला ॥ १५

शांतनाथ तें प्रथम श्री धर्मनाथ निरबान। पौन पल्य मिति ऊनकरि सागर तीन बखान ॥ धर्मनाथ श्री भानु पितु जासु सुव्रतासाय। बज्र चिन्ह कंचन बरन पैंतालिस धनु काय ॥ आउ बरस दसलाख थित तजि सर्बारथ सिद्ध। रतनपुरी चविऔतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ सित सातैं बैसाख चवि जनम माघ सुदि तीज। ताही की तेरस रहे सुभ चारित रसभीज ॥ केवल पूयो

पोस सित जेठी पंचम मोख । सुभ समेत गिरि सिखर पै पायो परम संतोख ॥ धर्मसाध चौंसठ सहस और साधवी सार । बासठसहस रुचारिसै जैनागम बिस्तार ॥ जहं देवी कन्दर्पिनी कहिये किन्नर जच्छ । गनधर जासु बखानिये तैंतालीस प्रतच्छ ॥

अथ श्री अनन्तनाथ अन्तराला ॥ १४

धर्म नाथतें प्रथम पुनि जिनअनन्त भगवान् । मुक्तिमान तिनको कह्योसागर चारिबखान ॥ सिंघसेन जिनकेपिता सुजसा जिनकी माय । चिन्ह सिचानरु कनक तन धनु पचास मिति काय ॥ तीस लाख बरसो उमर लोक सोलहों त्याग । अवधि बंस इक्ष्वाक मैं चवि औतरे सभाग ॥ असितासातैंसावनीचवन बदी वैसाख । तेरस चौदसरु ये तीनों क्रम साख ॥ प्रथमजनम दिक्षा बहुरि तीजे केवल ग्यान । बहुरि चैत सित पंचमी सिखर सुथल निरबान ॥ मुनिअनन्त छासठ सहस और साधवी सार । बासठ सहस रुचारिसै जैनागम निरधार ॥ जिनकी देवीचांकुशा पाताला जिहिं जच्छ । गनधर नाथ अनन्तके कहेपचासप्रतच्छ ॥

अथ श्रीविमल नाथअन्तराला १३

जिन अनन्ततैं विमल जिन मुक्त्यन्तर परमान । नवसागर पूरोकह्यो लेहु सुजानि सुजान ॥ विमलपिताकृतबर्म अरु स्यामा जिनकी माय । कनक बरनसूकर लछन साठ धनुष मितिकाय आयु साठलष बरस चवि लोक बारहों त्याग । कंपिलपुर अवतार लै कीने लोक सभाग ॥ बारस सित वैसाख चविपोससुदी छठग्यान । तीज चौथ सित माघ को जनमरु चारित जान ॥ पुनि असाढ़सातैं असित ध्यायपाधसुखध्यान । सुभगिरि सिखर समेत पर पायो पद निरबान ॥ बिमल साध अडसठ सहस और साधबीसार । एक लाख परी कही जैनागम अनुसार ॥ बिदित देवीबरनिये षनसुख जिनके जच्छ । बिमलनाथ गनधर बिमल कहिपचपन परतच्छ ॥

अथ श्रीबासपूजस्वामी अन्तराला ॥ १२

बिमलनाथ तैं प्रथम जिन बासपूज निरवान । अन्तर दोनों मुक्त कौ सागर तीस बखान ॥ बासपूज बसुपूजि पितु जया माय रङ्गलाल। धनु सत्तर तन थित बरस लाख बहत्तर काय ॥ महिष चिन्ह चंपा पुरी छांड़िदसम सुरलोक । जेठ सुकल नौमी चवे हरे जनन के सोक॥ फागुन बदिचौदस जनम मावसदिच्छा लोष । ग्यान माघ सुदि दूज सित साढ़ी चौदस मोष ॥ चंपापुर मैं साध सुभ सत्तर दोय हजार । तीनसहस अरु एकलष सुभग साधवीसार ॥ चन्द्रा देबी बरनिये अरु कुमारजहं जच्छ। बास पूज गनधर कहे बर छासठ परतच्छ ॥

अथ श्रीश्रीयांस अंतराला ॥ ११

बासपूज तैं प्रथम पुनि जिन श्रेयांस सुजान । मुकान्तर इन दुहुन कौ चौव्वनसागर जान ॥ बिष्णुसेन जिनके पिता बिष्णा जिनकी माय। खडग चिन्ह कंचन वरन अस्सी धनु की काय ॥ चौरासीलष वरस थित तजि सुरगांतकलोक । सिंघपुरी चवि औतरे कीने लोक असोक ॥ जेठ वदी छठ चव जनम असिता बारसफाग।ताही की तेरस तहं चारितलह्योसभाग॥माघी माव सुग्यानबदि तीज सावनीमोष । सिषर समेतहि मैं भयो जनम मरनसंतोष॥ कहे साध श्रेयांसके अस्सीचारहजार । छहहजार इकलख कहीसुभगसाधवी सार ॥ बरनो देबी मानबी जच्छ राजजहं जच्छ । सतहत्तर गनधर कहे जिनश्रेयांस प्रतच्छ ॥

अथ श्री सीतलनाथ अंतराला ॥ १०

अब श्रेयांसजिनेसतैंश्रीसीतल निरबान । घटबढ़ करि संख्या कहौं सो सुनिलेहुसुजान ॥ छासठलष छब्बिससहसतीस वरस बसुमास । पन्द्रहदिन गनि जोरि सब दससागरमैं तासु ॥ सब संख्या यह ऊन करि सागरकोटि मझार । सो सीतल श्रेयांसकौ मुत्त्यन्तर निरधार ॥ सीतल के दृढ़रथ पिता नन्दाजिनकीमाय।

श्रीबत्सी लंछन कनकतन धनुनब्बेकाय ॥ एकलाख पूरब उमर तजिसुरगांलक लोक । भद्दलपुर चवि औरतेहरे जननके सोक ॥ चवन बदी बैसाखछठ जनमरुचारित दोय । माघबदी बारसहि कौ सुतिथ एकही सोय ॥ चौदस असिता पोसको दूज बदी बै-साख । ग्यानऔर निरबान तहं क्रम करिराखो साख ॥ एकलख पूरे कहे सीतल साध सुठार। कहिये तिनकी साधवी इकलाख बीसहजार ॥ कही असोका देवि जहं ब्रह्म जिनके जच्छ । श्री सीतल गनधर कहे इक्यासी परतच्छ ॥

अथ श्रीसुबुधनाथस्वामी अंतराला ॥ ८

जिनसीतल निरबानतैं प्रथम सुबुधि निरबान । कहि सागर नवकोटि मिति बर आगम परमान ॥ सुबुधि तात सुग्रीव अरु रामा जिनकी माय । मकर चिन्ह सित बरन तन सौ धनु ऊंचो काय ॥ दोय बरष पूरब सुथित तजि आनत सुरलोक । काकन्दो चवि औतरे हरे सकल जन सोक ॥ फागुन बदि नौमी चवन जनम माघ बदि पांच। ग्रह तजि अगहन छठ बदी लीनो दिक्ष्या सांच ॥ कातिक सुकला तीज सुदि नौमी भादवमास । ग्यान और निरबान पद पायो क्रम करि तासु ॥ लाखदोयमुनि सुबुधि के और साधवी सार । तीनलख पूरी कही जैनागम अनुहार ॥ देवीकही सुतारिका अजित नाम जहं जच्छ । सुबुधिनाथ गन-धरकहे अट्ठासी परतच्छ ॥

अथ श्रीचन्द्रप्रभु अंतराला ॥ ८

सुबुधिनाथको मुक्तितें चन्दाप्रभु निरबान । सागर नब्बेकोटि कहु सुत्तयन्तर परमान ॥ महासेन जिनके पिता और लछमना माय। ससि लंछनसितबरन अरु धनुडेढ़सै काय ॥ दसलषपूरब आउ थित तजि जयन्त सुरलोक । पुरी चन्देरी औतरे हरेजनन केसोक ॥ चवन चैतबदि पंचमी पोसबदी के मांह। बारस तेरस जनम अरु चारित्र की क्रमछांह ॥ फागुन अरु भादौ बदी असित

सत्तमी जोय । ग्यान और निर्वान को क्रम करि तिथि सोहोय ॥
सहस पचासरु दोयलष चन्दाप्रभु के साध । तीनलाख अस्सी
सहस सुभ साधवी अवाध ॥ भृकुटि देवि जिनकी कही बिजय
नाम बरजच्छ । गनधर कहे तिरागवे चन्दाप्रभु परतच्छ ॥

अथ श्रीसुपारसनाथस्वामी अंतराला ॥ ५

चंदाप्रभु की मुक्ति तें प्रथम सुपारसनाथ । सागर नवसैंकोटि मिति मुक्त्यन्तरकोगाथ । सुप्रतिष्ठ जिनकेपिता प्रथ्वीसेनामाय । कनक बरन स्वस्तिक लछन द्वै सैं धनु की काय ॥ बीसलाष पूरब उमर पंचग्रीव तजि लोक । पुरीबनारस औतरे हरे सकल जन सोक ॥ भादौंबदि आठैं चवन जेठबदीके मांह । बारसतेरस जनम अरु दिक्षाकी क्रम छांह ॥ छठसातैं फागुन बदी ग्यानऔर निरवान । यथासंख्य कल्यानकी क्रम करि लीजै जान ॥ साध सुपारसनाथ के तीनलाख मिति जान । तोन सहस अरु चारि लष सुभ साधवी बखान ॥ बरनी देबी शानता अरु मातङ्ग सुजच्छ । बर गनधर पंचानवे जिनके परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीपद्मनाथ स्वामी अंतराला ॥ ६

मुकत सुपारसनाथ तैं पदमनाथ निरबान । नवहजार जेकोटि मित सागर पहले जान ॥ पद्मपिताश्रीधर कहे और सुसीमामाय । अरुन बरन पंकज लछन धनुढाई सैं काय ॥ तीसलाष पूरब उमर अन्तग्रीव तजि लोक । कौसंबी चवि औतरे हरेजनके सोक ॥ माघबदी छठ चवन अरु कातिक बदिके मांह । बारस तेरस जनम अरु दिच्छाकोक्रम छांह ॥ चैतीपून्योग्यान बदि ग्यारसअगहन मोष । सुभगिर सिषरसमेत पर कह्योपद्म जिनतोष ॥ तोस सहस अरु तीनलख पद्म साध निरधार । बीस सहसअरु तीनलष कही साधवीसार ॥ श्यामादेबी बरनियेकुसमनाम जहं जच्छ । गनधर पद्मजिनेसके इकदससत परतच्छ ॥

अथ श्रीसुमतिनाथस्वामी अंतराला ॥

पद्मनाथतैं सुमतिजिन मुक्तिमान परमान । सहसकोटि नब्बे इते सागर पहलैजान ॥ सुमतिनाथ पितु मेघरथ और मंगला माय । क्रौंचचिन्ह कंचनबरन धनुष तीनसै काय ॥ चालिस लख पूरब उम्मर छांड़ि जयंतबिमान । अवधपुरी चवि अवतरे ग्यान अवध भगवान ॥ दूज सुदीसावन चवन सुकलपच्छ बैसाख । आठैं अरु नौमी जनम चारितकी क्रमसाख ॥ ग्यारस नौमी चैत कीशुक्लाक्रमकरि जान । सुमतिनाथ भगवानकौ परमग्यानिर-बान ॥ तीनलाख दससहसकहु सुमतिनाथके साध । तीससहस अरु पांचलख सुभ साधवी अबाध ॥ महाकालिदेवी कही तुम्बर नाम सुजच्छ । सुमतिनाथ गनधरकहे सतदस छह परतच्छ ॥

अथ श्रीअभिनन्दनस्वामी अंतराला ॥

सुमतिनाथतैं प्रथमपद अभिनन्दनआनन्द । सागरनवलख कोटिमिति कह्यो परमनिरदन्द ॥ सुमतिनाथ तैं आदिदै ह्यांलैं अंतरकाल । छह जिननायक कौं कह्यो दसदस गुनकी चाल ॥ संबर अभिनंदन पिता सिद्धारथासुमाय । कनकबरनकपि चिन्ह धनु साठ तीनसै काय ॥ लखपचास पूरब उमर तजिकै बिजय बिमान । पुरी अयोध्या औतरे अभिनंदन भगवान ॥ चवनचौथ बैसाखसुदि माघशुक्लके मांह । दूज और बारस जनम दिच्छा की क्रम छांह ॥ ग्यान पोस चौदस सिता आठैं सित बैसाख । सुभगिर सिखरसमेतपर मोखपरमपदसाख ॥ अभिनन्दन मुनि तीनलख और साधवी सार । कहिछलाख छत्तिससहस जैनागम निरधार ॥ देवीकालीबरनिये जच्छनायकरु जच्छ । अभिनंदन गनधरकहे इकसततीन प्रतच्छ ॥

अथ श्रीसंभवनाथ अंतराला ॥

अभिनंदन तैं प्रथमपद संभव जिनको जान । सागर कोटि सुवीसलख ताकीसंख्यामान ॥ संभवनातजितारिन्रपऔरसुसेना

माय । हय लंछन कंचनबरन धनुष चारिसै काय ॥ साठ लाख पूरब सुथित छांड़ि आदिग्रीवेक । सावसती चवि औतरे राखि धरम की टेक ॥ फागुन सित आठैं चवन अगहन सित के मांह । चौदस पांचै जनम अरु चारितकी क्रमछांह ॥ कातिकबदि अरु चैतसुदि सुतिथपंचमीजोय । लह्यो ग्यान निरबान यह संभव क्रमकरिसोय ॥ जिन संभव मुनि दोयलख और साधवी सार । तीनलाख छत्तिससहस जैनागमनिरधार ॥ बरदेवी दुरितारिका औरत्रिमुखजहंजच्छ । जिनसंभवगनधरकहैंपांचरुसतपरतच्छ ॥

अथ श्रीअजितनाथ स्वामी अंतराला ॥ २

संभवते जिन अजितहूं तिन कौं अंतरकाल । कह्यो तितोई बीसलख कोटि सागरैहाल ॥ अजित तातजितसत्रु अरु बिजया देवीमाय । कनकरंग गज चिन्ह धनु साठ चारिसै काय ॥ लाख बहत्तर पूर्बथित तजिके बिजय बिमान । पुरी अयोध्या औतरे अजितनाथभगबान ॥ तेरस सितवैसाख चव माघसुदीके मांह । आठैं नौमी जनम अरु दिक्षाकी क्रमछांह ॥ ग्यारस सुक्ल पोस सितचैतपंचमीजोय । लह्योग्यान निरबानपद अजितनाथ जिन सोय ॥ अजितनाथ मुनि एकलख और साधवीसार । तीनलाख आगम कहे तापर तीस हजार ॥ देवी बाला अजित जहं और महाजस जच्छ । अजितनाथ गनधरकहे नब्बे परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामीअंतराला ॥ १

अजितनाथ तें प्रथम अब ऋषवदेव जिननाथ । सागरकोटि पचासलख लखिलिखि होहुसनाथ ॥ एई प्रथमजिनेसतें चौविस जिनलौं सार । मुक्त्यंतर भाखे सकल प्रथक प्रथकबिस्तार ॥ चरमतिथंकर लौं कह्यो जो सबको परमान । प्रतिजिन इक इक जोरिकै लेहु सुजानि सुजान ॥ ऐसें जो सब जोरिये अंतरकाल निदान । रिषवदेवमुक्तादितैंमहावीरनिरवान ॥ कोटिकोटिसागर अवधिमांह ऊनकरितासु । सहस बयालिस त्रयबरस अरु साढ़े

वसुमास ॥ तापरनवसै अरुअसी बरस जोरिजों लेहु । कलपसूत्र पुस्तकछब्यो तासुमान कहिदेहु ॥ नाभिराय जिनके पिता अरु मरुदेवी माय । वृषभ चिह्न कंचन बरन धनुष पांचसै काय ॥ लख चौरासी पूर्ब थिति सर्बारथ सिधि लोक । छांडि अयोध्या अवतरे हरे जनन के सोक ॥ असित असाढी चौथ चव जनम रुखारित जोग । चैतबदी आठैं भयो दोनों को संजोग ॥ असिता ग्यारस फागुनी माघी तेरस श्याम । लह्यो ग्यान निरबान क्रम अष्टापद अभिराम ॥ मुनिचौरासीसहसअरु सुभग साधबीसार । तीन लाख पूरी कहो आदिनाथ परिवार ॥ देवी वर चक्के सरी गोमुखनामा जच्छ । आदिनाथ गनधर कहे चौरासी परतच्छ ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामी अधिकार लिख्यते

अब कछु विस्तर कै सुनो एपांचौं कल्यान । तीजे आरे केरहे इते बरस जब आन ॥ लखचौरासी पूर्ब तब भयो रिषभऔतार । जिनके अब बिस्तारकरि कहौं सकल अधिकार ॥ जिनके चारि कल्यान ते उत्तरषाढा मांह । अभिजित मैं पद पांचवें कल्यानक की छांह ॥ असित असाढो चौथ तिथ तजि सुर थित बिवहार । जंबुदीप थल भरथभुव कुलइक्ष्वाक मझार ॥ उत्सर्पनि जोकाल जिहिं तीजो आरो जोय । कोड़कोड़ सागर कह्यौ सुखम दुखमा सोय ॥ पल्योपम अष्टांशमैं नगरअजोध्या जोय । गुरुकुल उपजे सात तहं प्रथमजुगलिया सोय ॥ दूजो चक्षुष्मान पे दोनोंनीति हकार । पुनि तीजो जसमित्र अरु अभिनंदाजे चार ॥ इन दोउन के पाट लौं नीति कही मकार । चारि पाटलौं यह कही नीत मकार हकार ॥पुनि प्रसेनजित पांचवौ अरुछठवौ मरुदेव।नाभ राज जे सातवें इन तीनों के भेव ॥ नीति कही धिक्कारनी धनुष पांचसै देह । सातौं गुरुकुलकी कही सकल बिवस्था एह ॥नाभ नाम गुरुकुल बिषै मरुदेवी की कुष । निसिनिसीथ कैं काल श्री ऋषभदेव अनदूष ॥

अथ श्रीआदिनाथ चवन कल्यानक ॥

सुरसंबंधी आयु तजि अरुअहार बिवहार । छांडिचवे सुरलोक तैं गर्भबास आधार ॥ अब इन जिन श्रीऋषभ के तेरह भव बपु नाम । बरनि बखानौं प्रथमधनसारथबाहुललाम ॥ भये जुगलिया दूसरे तीजे सुरवर फेर । चौथे राजामहाबल फेर पांचवें हेर ॥ भये देवललितांग पुनिबज्जजंघनृप फेर । छठें सातवें जुगलिया पुनिसुर अठयें हेर ॥ जीवनदायक नाम पुनि बैद्य नवें भवसोय । दसवें भववरदेवताजनम होय सुख मोय ॥ चक्रवत्त पुनि ग्यारवें बज्रनाभ इहिं नाम । सर्बारथ सिधि बारवें भये परम अभिराम ॥ जनम तेरवें रिषव प्रभु आदि जिनेसर सार । तिन जिनके अधिकार अब कहौं सकल विस्तार ॥ तीन ग्यानसह चवन जिन कीनों गर्भ निवास । कुंजरादि चौदह सुपनमरुदेवीलखि तासु ॥ ऐसें ही बाईस जिन जननि प्रथम गज देखि । और लखे नहिं ग्रख लषे प्रथम कह्यो या लेखि ॥ रहै नहीं तिहि काल में जे पण्डित सुपनग्य । यातें सुपनबिचारतहंकियो नाभि सरवग्य ॥

अथ श्री आदिनाथ जन्मकल्यानक ॥

गर्भकाल बीत्यो जबै सकल सवानव मास । चैतबदी आठैं नखत उत्तरखाढ प्रकास ॥ मरुदेवीकोकूख तैंजनमें श्रीभगवान । ऋखबदेव भगवंत वर आदि जिनेसर जान ॥ आदितिर्थंकरआदि नृप भिक्षाचर पुनि आदि । आदि केवली ऋखब ए पांचौं नाम अनादि ॥ छप्पनदिसा कुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय । कियो महोच्छौ प्रथमव्रत धन बरखा वरषाय ॥ तोलन तोला सेर मन बाटन गज तिहिं काल । रीति जाति करमादि नहिं और दसूठन चाल ॥ ते सब अब नवरीत करि सब अचार बिवहार । करे हरे दुखदुंद सब श्रीजिनराज कुमार ॥ दीन दुखीदारिद्र जुत हीनन कातिहिं काल । बंदन कोऊ बंदिमैं सब अनन्दसुखहाल ॥ एक बरस के जब भये आदिनाथ भगवान । इन्द्र आय इक

ऊख तहं लायो जिन हित जान ॥ अरु जिन करअंगूठ में अमृत कियो संचार । चारित समयावधि लियोसुरसंबंधि अहार ॥ एक समयनर जुगलियालहि फलतालअघात। मरयो तासु कीजुगल तियलई नाभिनृप तात ॥ लै राखी निजमहलमें ऋखभब्याह कै हेत। अति सुंदरि मरि जरि मनो रति छांडी झखकेत ॥ कोटि लाख सत्तर बरससहस छपनकेमान॥ संख्या पूरबकोकैही इते बरस पहिचान॥ बीसलाख के अंकसौं गुनि यह अंक सुजान। बीस लाख पूरब ऋषभ रहे कुमार सुजान॥ जोबन बय मय समय वर बिषय भाग रस सार। जोग भये जिननाथ जब तिहि बरबय कौमार ॥ इन्द्र इन्द्रतियधारिचित जिनबर ब्याहविचार। आयअवासनिबासहित रचो ब्याह बिस्तार ॥ धुज तोरनमंगल कलस रंभाखंभ वितान। तानिसुबंसमंगायके चौंरी रचीसुजान॥ बंहिन सुनंदा ऋषभ की अरु सुमंगला दोय। जुगलधर्म करि इन्द्र तिहिं जुगल ब्याहि हित सोय ॥ पीठी उबटि न्हवायपुनि सकल सिंगार सिंगारि। कोरोबसन पिन्हाय तिन चौरी माहिं बिठारि ॥ पुनि सुरपति भगवन्तकौं पीठी उबटि नहाय। तास वास बासे अतर वरवागौ पहिराय ॥ सुरसमूह सबसाथलैसजि सव साजि बरात। हयचढ़ाय जिनरायवर मुदवढ़ाय बिख्यात॥ सोर मौर सिरसेहरा चामर छत्र डुलाय। मिल इन्द्रानी इन्द्र जिन मड़डेतरपधराय ॥ सुरतिय मंगलगाय मनि मानिकचौक पुराय। हथलेवामिलिवाय पुनि चारोंफेर फिराय ॥ सकल कर्म करि चाय सौं विधिवत ब्याह कराय। पाय सकल सुख सुर सहित सुरपति भये विदाय ॥ छहलखपूरब अवधि लगि विषय भोग ग्रहबास। बिलसि सुनन्दाकै भयो प्रसव जुगलियाजास॥ भरत बिरामी नाम तिहिं अरु सुमंगला नारि। जनी बाहुबल सुन्दरी प्रथम जुगलिया सार ॥ पुनिजनमी यह जुगलसुत दोइ ऊन पंचास। यह सन्तत भगवंतकी भई ग्रहस्थाबास ॥ तीजे

आरेके रहे जब थोरे दिन आय । कल्पवृच्छ थोरे रहे भुवमैं जुगलि नपाय ॥ लरन लगे ते परसपर इक तरु तर ह्वैबैठि। हक्क मक्क धिक्कार ते तिहूं तोनि मैं पैठि ॥ तिनकेन्याव निबेरहीं नाभि नृपति चितचाहि । चह्यो राजके पाट पर सुतहि बिठावन ताहि ॥ आय इन्द्र सुरलोक तें कियो महोच्छौ चाय। राजपाट अभिषेक की सैंाज समारी आय ॥ पुरी अजोध्या आय कैं धनद करो नृपकाज। राजसाज सुरपति सजे बाजि ताज गजराज ॥ त्रेसठलख पूरबबरस ऋषभदेव करिराज। सकल कला तिनहीं करी प्रगट जगत के काज ॥ लिखनपढ़न अरुगिनन पुनि सुगुन सुपन कौ ग्यान। शस्त्रशास्त्र धनुबानकी विद्या आदि सुजान ॥ गान ग्यान गुन मान मिति तानताल के भेद । नृत्य नाट्य अरु वाद्यके चारौं भेद अखेद ॥ कामकला रसरसगितासोरह सजन सिंगार । वसीकरन मोहन कला आदि अमित परवार ॥ जोतक बैतक अश्व गज रथ आरोहन ग्यान । चित्रचितेरन चतुरई अरु बिचित्रता जान ॥ सकल सिलपकी स्वल्पता सूछम थूल प्रकार। सब सिखराई जनन कौं सजितिनकेहथियार ॥ त्रेसठलख पूरब बरस जब यों भये बितीत। दिक्षासमय चितावने आये सुर करि प्रीति ॥

अथ आदिनाथस्वामी दिक्षाकल्यानक ॥

जैजैनंदा कहि कह्यो जैभद्रा जिन जान। कोउन लैं तिहिंकाल पै दियो समच्छरीदान ॥ चैत बदी आठैं सुदिन पहिरपाछ्लै पाय । बैठि सुदरसन पालकी सुर मनु सह समुदाय ॥ पुरी बिनीता बीच ह्वै निकसि बाहरैंआय । तरुअसोक तर सोकतजि भूषन वसन बढ़ाय ॥ सुरपतिहित इक मूठ तजि चारि मुष्टि करिलोच । चौविहार ह्वै बासजुत तजि संसारी सोच ॥ उत्तर षाढ़ा जोग ससि चारि सहस नरसाथ । देवदूष पटजुतलियो चारित जिन जननाथ ॥ तदनन्तर जिन आदि प्रभु लागे करन

विहार। पै बिहरावनबिधि न कोउ जाने देन अहार॥ फिरै गोचरी करत जिन बीत गये षटमास। भिक्षालाभ न होय कहुंसहैं भूष अरु प्यास॥ साधसंग भगवंत के जे हैं चारि हजार। सहि न सके प्यासरु छुधा पायैं बिना अहार॥ जाय सुरसरी तीर तब बन तरु दल फल फूल। पाय खाय बन छाय कै गह्यो तपस्या मूल॥ एकाकी जिन होय तब तहँतैं कियो विहार। पाछिकसुत ह्वैनमिबिनमि तहां मिले हित धार॥ परे पाय सुद छायपुनिलगे करन जिन सेव। जिन तन मांहि समायतव कह्यो सुरन केदेव॥ बर दै पुनि दीनौ तिन्हैं बैतढ पर्वत राज। गौरि आदि बिद्या दई अड़तालिस सुख साज॥ तातैं विद्याधर भये छबे महा सुख चैन। उत्तर दच्छिन श्रेय के भये धनी धन ऐन॥ पुरमताॅलनगरी गयेतहँतैं श्री भगवान। छुधा पिपासा सहन करि रहे तहांजिन जान॥ मनिमोती रथ गज तुरग कन्यासवकोउ देय। पै अहार बिहरायवौकाहू को नहिं गेय॥ पिछलैं भव इकवरद मुख बारह पहर जिनेस। छींका बांध्यो होसु तिहिं कर्म उदै अवधेस॥ लह्यो न बारह मास लौं ताही देत अहार। अन्त राय पूरैं भये तब अहार बिवहार॥ ऋषभ पौत्रश्रेयांसतहं देखि साधकैं रूप। जिन बरकौं घर लैगयो भिक्षा हितहित भूप॥ अब जब जिन माड़न लगे करि भिक्षा कैंहेव। दहनौवाये सौंलग्यो कहनै भाईचेत॥ हौं पूजाजपजग्यअरु जीमन दानहि जोग। यातैं तूं ही इहसनैंलेहि प्रतिग्रह भोग॥ दहने सौं कहनै लग्यो सुनि बायौ यौंबैन। भलो नहीं यैतो गरब चुप रहिकहै बनैन॥ तूंज्वारी तू चोरतूं करत कुकर्म अनेक। जुद्ध मांहि पीछैं भजै हौंही राखौं टेक। सुनि झगरौ कर दुहुन कौ श्रेयंस बोले बैन। भलोन जिन पारन समैं यह झगरौ दुप ऐन॥ यातैं तुम दोऊ मिलौ मिलि बिहरो आहार। सुनि जिन दोऊ कर मिले सनमुख हुये पसार॥ तब बिहराये ऊखरस श्रेय सरसजिनेस। सुर दुंदुभि

नभ बजिकरी अति धनवृष्टिसुरेस ॥ ताही दिन तैं यहभयो अखय तीज तिहिबार। बिहरावन लागे तबै जिन बरकौं आहार ॥ तक्षसिला नगरी गये बिहरत आदि जिनेस। काउसग्ग तप करि रहे तहां ऋषबग्यानेस ॥ तहां बाहुबल जिनसुवनआयो बंदन हेत। करी थापना प्रीत करि जिनपद की तिहिं खेत ॥ मरुदेबी जिन जननि जब सुमिरै जिनके हाल। भूख प्यास तप कष्ट की सहन होय बेहाल ॥ रोय कहे सुत भरत सौं राजकाज बस तात। क्यौं भलीसुधि तात की भली नहीं यह बात ॥ रोय रोय यौं रैनदिन दीनै नैना खोय। होत जात छिनछीन तन मरु देवी दुखमोय ॥ सहस बरस सहिसहि सकल सुरमनुकृत उप सर्ग। तज्यौ जिनेसर गेह अरु देहनेह सुखबर्ग ॥

अथ श्री आदिनाथस्वामी ग्यानकल्यानक ॥

फागुनबदि एकादशी नखत उत्तरासाढ। तीन बास पानी रहित चौबिहार करि गाढ ॥ दुपहर दिन पुर तैं निकसि वन वसि बटतरु हेठ। पायो केवल ग्यान पद परम सिद्ध मैं पैठ ॥ भरत करी महिमा महत आदिनाथ कीयाय। पुनि मरुदेबीमाय कौं हाथी पर बयठाय ॥ तिन पूछो तब भरत सौं देवबाद्य सुनि कान। भरत सुनायो लाभबर आदिनाथ कौ ग्यान ॥ सुनिअति छायो मोद मन मरुदेबी कै सोय। उघरि गये दृगपटल जे खोये दुख करि रोय ॥ मरुदेबी हू कौं तहां उपज्यो केवल ग्यान। एक मुहूरत मांहि पुनि पायो पद निरबान ॥ सुरन आय तहं समुदमैं दीनी काय बहाय। भरत कियो अतिसोक पुनि हरषेमोदबढ़ाय॥ भरत जाय छह खंड मैं राजनीत दरसाय। चक्रबर्त की रिद्धि लै फिरे अजोध्या आय ॥ भरत भ्रात अट्ठानवै तेऊ बोधहिं पाय। चारित लीनौ तिन सबन ऋषबदेव तैं चाय ॥ सुन्दरियादि कतियनहूंपुनिलीनौचारित्र। एकबाहुबल बिनसकल सेवकभये पबित्र ॥ सुमुख नाम इक दूत तहं भरथ पठायो जाय। तक्ष

सिलापुर बाहुबल निकट संदेस सुनाय ॥ कह्यो बुलायो प्रीति करि तुमहिं भरत भूपाल । मिलन हेत उतकंठ अति औलेरत अरिसाल ॥ सुनि संदेसो बाहुबल कह्योबाहु बल जोर । सब भाइन को राज लै अब आसे इहिं ओर ॥ सोतो ह्यां बनि है नहीं कहो रहैं चुपसाधि। नतो बेग सजि होइ कहुं उठि है वहोउपाधि ॥ दूत विदा ह्वै चलिपहुंचि निजपुर कही सुनाय। सुनि कोप्यो चक्री भरत सहसेना समुदाय ॥ चल्यो बढ्यो चतुरंग लै संग निसान वजाय। उत तैं बहुरु बाहुबल चढ़ि चलि आयो धाय ॥ मिले मध्य मग मैं दुऊ जुरे जुद्धसमुहाय। सुभट भिरेघिरि दिसन मैं तनतैं मोह छुड़ाय ॥ मच्योघोर संग्राम अति जच्यौ जुद्धवरसोध। ऐसेही बीते वरस बारहलच्यौ न कोय॥ लरे मरे दुहु ओर के भट गज तुरंग अनेकापै दोउन भाइन मैं किनहुं तजीनटेक ॥ तव सुरपति तहंआयकैं समुझायेदोउभाय। जीवन को क्यों छै करो लरत न दुहु दल जाय ॥ पांचभेद है द्वंद के एक वचन इक हट्ठ। दस्टि बाहु की जुद्ध पुनि कही पांचवीं मुट्ठ ॥ सुनि मानो मानी दुहुन बल के मद उमदाय। पर पांचों विधि मैं थक्यो भरत अति श्रम पाय ॥ तब मारन हितबाहुबल मुठ उठाई जोर। समझि फेर तिहि समय मन धिकारयो मुह मोर ॥ राजहेत राच्यो कलह धिकधिक जीवन हाय। यों पछताय बिहाय सब द्वैष विरागहिं पाय॥ चारित लीनो तुरत तब तजि सब सुख संसार। भरत आप परि पायपुनि दोष खिमायो हार ॥ पै थोरो सो अहमतो रह्यौ बाहुवल मांह। लघु भाईपग लगन मैं मनमच्छरकी छांह ॥ करन लग्योताते तवैं काउसग्ग तप घोर। पग पर दीमक घर कियो श्रुति मैं पंछी ठौर॥ आदि नाथ कहि ध्यान मग बाहुवली को मान। भेजी ब्राम्ही सुन्दरी बहिन बोध हित जान ॥ गज तैं उतरो तिन कह्यो दुहुं साधवी आय। सुनि विसमय ह्वै तिहिं समै तप तजि सोच्यो चाय॥

बहुदिन बीते गज तजे यहकैसौ गजकौन। मानमतंगसोबूझिये अवलौं समझ्यो हैान॥ हौंया गज पर चढ़ि रह्यौ कै यह मोपै मान। भ्राता पग लागन चल्यौ तजितिहि काल गुमान॥ तिहिं थल केवलग्यान तिहिं उपज्योलहि सुख छांह। आदिनाथपग परसि कै बसे केवलिन मांह॥ अब श्रीआदि जिनेस कौ कहौं सकल परिवार। चौरासी गनधर तिते साध सहस निरधार॥ तीनलाख वर साधवी श्रावक साढ़ेतीन। पांचलाख चव्वनसहस सुभ श्राविका प्रवीन॥ चारि सहस अरु सात मैं साढ़े पूरबजान। अवधिग्यान ग्यानी भये नवहजार परमान॥ वीससहस पदके बली लबध बयक्री वान। बीस सहस छहसै भये वहुर बिपुल-मतिग्यान॥ साढ़े छहसै अरु सहस बारह संग्यासोय। तेतेई वादी भये साध संख्य यह जोय॥ साधमुक्ति पदकौं गये बीस सहस लहि बोध। लह्यौ साधवी हूं मुकत चालिससहस प्रबोध॥ ऐसैं आदि जिनेस कौ साध संपदा मान। दुहुं प्रकार भुवं जिन कहे एक अंतकृत जान॥ अरुदूजी परियांतकृत मुकतराह निरबाह। रह्यौ असंख्या पाटलौं जिनवर पाछे चाह॥ अवसब आउ जिनेस कौ कहैं सुनौ चित लाय॥ बीस लाख पूरब रहे पदकुमार मैंछाय॥ त्रेसठ पूरब लाखपुनि बरसराजपद भोग। ग्यासी पूरब लाख कुल गृह सुख भोग संजोग॥ एक सहस छदमस्त अरु सहस ऊनइकलाख। पूरब केवल ग्यान पद पाय रहे निज साख।

॥ अथ श्रीआदिनाथ स्वामी मोक्ष कल्यानक॥

चौरासी पूरव सकल आयु मान प्रतिपाल। मास आठ साढ़े बरस तीन इतो जबकाल॥ तीजे आरे के रहे माह माहकेमांह। सुभ तिथ असिततिरोदसी अभिजित ससि की छांह॥ अष्टापद परबत तहां दस हजार संगसाध। छह उपास पानीरहित चौवि-हार ब्रतसाध॥ दुपहर दिन पहले लह्यो आदिनाथ निरबान।

कालमान भाख्यो प्रथम महावीर लौं मान ॥ आदिजिनेसर जनम तैं महावीर निरबान । चौरासी पूरब सहित इनकी आयु प्रमान ॥ कोटि कोटि सागर अवधि मैं घट करि यह तासु । सहस बयालिस अयवरस अरु साढ़े वसु मासु ॥ ता पाछे बीते जबै नौसै असीप्रमान । बरस लिख्यौ यह ग्रन्थ तब कल्पसूत्र सो जान ॥

अथ थविरावली ॥

महावीर जिननाथ के ग्यारह गनधर सार । जे चौदह पूरब निपुन द्वादशांग गुनधार ॥ तिनमैं द्वै कै शिष्य नहिं नवही को बिस्तार । नवही गच्छ भये तहां महाबीर के बार ॥ ते सबमासिक बरत करि चौविहार धरि ध्यान । नव तिन मैं जिनवर छतैं लह्यो मुक्त निरबान॥द्वै पाछैं सबके कहैं अवसुनि नामबखान । इन्द्रभूत पहिलैं भये गोतमगोती जान ॥ अग्नि भूत दूजे भये तेऊ गोतम गोत । वायभूत तीजे तेऊ गोतमगोतसजोत ॥ आर्य ब्यक्तचौथे भये भारद्वाज सगोत । थविर सुधरमी पांचवें अग्नि गोत सुभजोत ॥ पांचपांचसै साधकों पांचौंबाचन देइ । द्वादशांग आगम सकल पढ़ैं पढ़ावैं तेइ ॥ छठवें मंडितपुत्र ते गोतम गोती जान । मौरीसुत सप्तमभये कौसक गोतनिधान ॥ येद्वै साढ़े तीन सै साधहि बाचनदेय । थबिर अकंपति आठवें गोतम गोती तेय ॥ थबिर अचलभ्राता भये हारयानि जिहिंगोत । थबिर भये मेतार्य जे कौड़िन गोत सजोत ॥ थबिर ग्यारवैं गोत सुभ कौड़िन नाम प्रभास । तीनतीनसैसाध कै बाचन दैं अनियास॥ अब क्रम करि पट्टावली थबिरन की सुनि लेय।महाबीर के पाट पर गोतम बैठे तेय ॥ महाबीर की मुक्ति तैं बारह बरस बितीत भये गये ते मुक्तिपद जिहिं सब आउ प्रतीत ॥ भई बानबैबरस की तब पायो निरवान । पुनि सुधर्मस्वामी भये तिनके पाट सुजान ॥ चारित बरस पचासवैं लियो बरस पनि तीस । महा

बीर सेवा करीबारह गोतमकीस ॥ आठअरस पद केवली पालि पाय निरवान । शतंजीव ह्वै मुक्तिपद परम लह्यो सुग्यान ॥ शिष्यनही इन दुहुन के रहे तबै तिहिं पाट । जंबूस्वामी तैं तहां रही धरम की बाट ॥ रिषभदत्तबिवहारिया तिया धारिनी तासु । जिन तैं जनमैं नाम सुभ जंबूस्वामी जासु ॥ सुनि सुधर्म बानी लह्यो सब संसार असार । आठ तिया ताके तऊ राग रहित बिवहार ॥ इक दिन ताके सदन में प्रभव नाम इकचोर । आय पांचसै जन सहित चोर बिपुल धन जोर ॥ चल्योगेह चलिनहिं सक्यौ सासन देव प्रभाव । तब जंबूके पग पर्यौ सो तस्कर कौ राव ॥ कह्यो स्वापनी सीखिये हमतैं बिद्या सार । अपनी हमैं सिखाइये थंभन बिद्या चारु ॥ तब जंबू ता चोर कौं सब चोरन के साथ । धरमकथा उपदेश कहि बोधे सब मुनिनाथ ॥ आय आठ तियके सहित अरु उनके पितुमात । सबतस्करमिलि पांचसै सत्ताइस जनजात ॥ इन सब मिलि चारित लियो अति अगिनित धनवान । महाबीर तें साठवें बरस जंबु निरबान ॥ भये तहां तिहिं समयतैं ये दस बोल विछेद । मनपरजाई ग्यान इक परमावधि पुनि बेद ॥ लब्धपुलाकी तीसरो आहारक तन फेर । पुनि चारित त्रय भांति को कह्यो पांचवें हेर ॥ इकपरिहार बिशुद्धता ताकौं पहिलौ भेद । संपराय सूक्षम बहुरयथा ष्यात पुनि बेद ॥ क्षपकस्त्रेन छह पुनिकही उपस्त्रम स्त्रे नोसात । जिन कल्पी कहि आठ नव केवलग्यान बिख्यात ॥ दसवैं मोष पधारनौ ये दसबोलबखान । कहेभयेविच्छेद ये जिनजंबू निरबान ॥ जिनजंबू के पाट पुनि प्रभवस्वामि थिर होय । यौं विचारचित मैं किया पाट जोग नहिं कोय ॥ तब सिय्यंभव विप्र इक राज गृहीके मांह । जग्य करत लखि तासु में साध जोगता छांह ॥ तिहिंपर मोदि प्रबोधिकैं सबदिज कर्म छुड़ाय । दई शांतिजिन नाथकी प्रतिमां ताहि दिखाय ॥ गुरु मुख सुनि उपदेस पुनि

चारित लीनौ जान । प्रभवस्वामिके पाट पर बैठे सो सुख्याल ॥
पाछैं तिनकैं सुत भयो तिय के गर्भाधान । ताहूकों लघु आयु
लखि पितु परबोध्यो जान ॥ महावीर निरवान तें प्रभव मृत्यु
कौ काल। भयो बरस अट्ठानवे जब बीते तिहिं हाल ॥ पुनि सुयं-
भव पाट पर जिन कौंवाछस गोत । जसोभद्र तुंग्यायकौ गोत
सुरवर जोत ॥ पुनितिनकेद्वै शिष्यइक माढर गोतीजोय । आर्य
विजयसंभूति पुनि दूजेकहियेसोय ॥ भद्रबाहुआरजथबिर जासु
गोतप्राचीन । थबिरबिजय संभूतिके थूलभद्र आधीन॥पइटन पुर
द्विज पुत्र द्वै लीनौ चारित चाह । भद्रबाहु तामैं अनुज अग्रज
मिहिरवराह॥ अनुजैलखिकै जोगगुरु दीनोअपनौपाट । अग्रज
अति दुख पाय कैं कियो नृपति पै काट ॥ जोतिस बल जो जो
कह्यो नृपसौं मिहर बराह । गुरुप्रताप तैं सब भई झूठो ताको
चाह॥ लाजपाय,मरि मिहर फिर व्यंतर ह्वै दुखदाय । मरी करी
जिनजननमैं प्रकट निपट अधिकाय। सोगुरु अपनीशक्तिकरिदुख
हरतबन बनाय । संतेबानीजलछिरकिदोनौ दोसमिटाय ॥ थूल
भद्रकी सुभकथा अब सुनिये चितलाय । शिष्य विजय संभूतिके
जिनजनकै सुखदाय ॥ गोतमगोती ते भये कहौं सुनौ ते कौन ।
पाटलपुर मैं नन्द नृप ताकौ मंत्री जौन ॥ नाम कह्यो सिकड़ाल
तिहिं द्वै सुत जाकेजान । थूलभद्रपहिलैं भयोदूजो सिरया आन॥
सात सुता ताके निपुनि श्रुतिधरतिनकरि सोय। जीत्यो पंडित
वररुची राजसभा में कोय ॥ तिन पण्डित सिकड़ाल कौ दीनौ
दोप जगाय । नृप कोप्यो तब मंत्रिपैमंत्रि मरयोविषखाय ॥ तब
सिरयहि बोल्यो नृपति देन मंत्रि पद ताहि । तन अग्रजकों बात
यह जाय सुनाई चाहि॥सो हो गणिका गेह मैं कामकोस जिहिं
नाम ।जाकौं जुग बीतेतहां फस्यौ बिबस बिसधाम ॥ साढ़े
बारह कोटि धन मुहर खरचि करि पाय । बस कीनीही बिवस
ह्वै सुबस बस्यो तहंजाय॥पाय खबरि नृपचहन की पहुंच्यो

राजहजूर। पहुंचिसोचिकछु समझि पुनि भयो बिरति भरपूर॥ लई बिजयसंभूतितैं चारित दिक्षाजान। सिरिया पुनिमंत्री भयो नृप आग्यापरमान॥ बोधन गणिकाकोसकैं थूलभद्रतहं जाय। चतुरमासतिहिंपर रह्यो जल जलजनकेन्याय॥ भाख्योसाढ़ेतीन करहमतें रहि कैं दूरि। मन आवै भावै सुकर सरस भाव रस पूरि॥तैसें ही औरौ तबै तिहिंगुरुभाई तीन। लगेकरन तपतीन थल आप आपने मति लीन॥ सिंघसदन मुखइक बस्यो एककूप मुख आय॥ इक अहिगृह मुख सबन यों बरषा दई बिताय॥ थूल भद्र कीनों कठिन पै सब तें तप जान। खड़गधार तीछन अनी घनी बनी दुषखान॥ इक बरषा रित रस भरी घनघुमड़नि चहुं ओर। सरसनि बरसनि परसपर कल कूकनि पिक मोर॥ झमकनि चमकनि चंचला गरजनि सरजनि काम। महोमहा आकास सब भयो उदीपन धाम॥ अरु युवती नवजोबना भूषन बसन बनाय। हाव भाव दृगभौंहके अरु अनुभावबिभाव॥ न्रत्य नाट्य गुणगान के तान ताल मिति मान। बाजनिबीनप्रवीनकर सुर लैलीन निदान॥ एते सब बाधक अधिक साधकसाधनसार। डिग्यौ न डग भरि अचल मति थूलभद्र निरधार॥ बरषा बीतैं गुरुनिकट निपटबिनयजुत सोय।ल्यायो गनिका बोधि संग क्रपा दीठ गुरु जोय॥ कही अहो दुक्करदुलभ तुव तप यों द्वैबेर। एक बेर तिन सौं कह्यो तीन शिष्य तन हेर॥ तेमन में दुख पाय अति कोप गोप मुख फेर। सिंघ गुफा वासी जती दूजी बर्षा फेर॥ उपकोश्या बेश्या सदन पावस करन निबास।आस धारि मनमें चही आज्ञा वर गुरु पास॥ ज्वाब न दीनो गुरु जबै जती सुतब तिहिं काल। बिनुही गुरु आज्ञा गयो गणिकागेह संभाल॥ धर्मलाभ तासें कह्यो तिन चाह्यो धनलाभ। वसीकरन मोहन भर्‍यो गुनमय गनिका गाभ॥ ब्रितब्रतही तनमन लियो धन बिन सर्‍यो न काम। नृपनेपाल सुदेस तब गयोसाधधनकाम॥

भरि बरषा रितु मेहसैं नेह बिबस बस काम। नदी झीलझेलत चल्यो छल्यो छबीली बाम ॥ तहां जाय जाच्यो नृपति तिन सनमानि बुलाय। दियो रतनकंबल सु लै आयो तिय पै धाय ॥ उपकोश्या बेश्या निकट कियो निबेदन सोय। तिन लै पग सौं पोंछि पुनि फेक्यो कादव मोय ॥ अरुभाख्योतासाधसैं अपनौं कंबल देख। देखि साध दुख पाय अति कहन लग्यो सबिसेख॥ केतो दुखसहि यह लह्यो तुव हित लायो जान। सोतैंयोंत्याग्यो तुरत यह बहु मोल अजान॥ सुनि गणिका लागी कहन सुनरे मूरखमूढ़। यह कंबल बहु मोल तैं मान्यो जान्यो गूढ़ ॥ अति अमोलत्रय रतजे ज्ञान दरस चारित्र। हाथ गवाये आपने क्यों पछिताय नमित्र ॥ सुनि मनकौं धिक्कार करि बिरति भयो सो साध। छांड़ि राग ताकौ तुरति गहि बैराग अबाध॥ वेग जाय गुरुपायपरि दोष खिमायलजाय। गह्योग्यानपथपरमपद लह्यो बढ्यो सुभ भाय। गणिका समकित धारनो कोस नाम अभिराम। थूलभद्र जिहि बोधि दै लाये हे सो बाम ॥ सभा माहिं नृपनंद कै इक दिन इक रथकार।धनुबिद्या कर आंब फल दियो गरब उरधार ॥ नृप परसंस्यौ ताहि सुनि कोश गरब के भार। नाची सूची अग्र पै कनहेरी पर धार ॥ देखि सभा जन तिहिं समय बिस्मैमय सब होय। अति परसंसी नृप सहितहिय हित हेत समोय॥ तब गणिका बोली बिदित यह कछु बड़ीन बात। महा पुरुष ह्वैबो कठिन कामादिक तजि तात ॥ सुनि यह राजा नंदहूं बोध पाय सुख छाय। थूलभद्र के साथ ह्वै भद्रबाहुपैजाय चारितलै पूरब पढ़े दस मुखहीतै सोय। चारि पढ़े पुनि सूत्र तैंपूरब पूरे होय ॥ महाबीर की मुक्तितैं थूलभद्र परलोक। ह्वैसैं पन्द्रहबरस पर लीजे जान असोक ॥ प्रभवरुसिय्यंभवजसोभद्र बिजयसंभूत। भद्रबाहु पुनिथूलयह छहसुतकेवल पूत॥ थूलभद्र के शिष्यद्वै थबिर महा गिरिएक। भये प्रभाबिक गातजिहि एलो

पुत्य बिबेक ॥ हस्तिसूर दूजे घरयौ जिन बासिष्ट सुगोत। तिनकी अब संक्षेप कछु कहौं बिवस्था पोत ॥ इक दिन पुरी उजैन मैं पहुंचि गोचरी हेत। शिष्य गये तिनके तहां जिनजन हेतनिकेत॥ लखि भोजन मिष्टान्न तहं रंक एक लगि साथ। आयो उत्तमजीव तिहिं जान्यौ पुरु लखि हाथ॥ खीर• षाण्ड कौ तिहिं दियो भोजन अति भरपूर। खाय अफरि करि बमन सो मरयो कष्ट लहि भूर॥ मरि फिर जनम्यो नृपतिघर जातिसुमरण सोय। गुरुसौं भाखी बिनय जुत अग्या दीजै जोय॥ सोई हौं मा़थे धरौं इक चारित नहिं होय। सुनि गुरु ताके हेत जिन धर्म बिचार्यो सोय॥ सुनि गुरु श्रावक धर्म सुभ तिहिं कीनौ उपदेस। तिन नृप संप्रत नाम सो मान्यो गुरु आदेश॥ सवा कोटि प्रतमाकरी सवालाख प्रासाद। जीरन उद्धारे सकल तेरह से अबि खाद ॥ करो दान साला बिपुल मिति सत सात सुधार। कर छुड़ायसबं देस के सुखी किये नरनार॥ स्वस्थित और सुवृत्त बुध हस्तिसूर शिष दोय। कोटिक गछ काकंद पुर बासी जानौ सोय॥ तिनके शिष्य सु इन्द्रदिन गोतम गोती जान। तिनहूंके पुनि सिंघगिर गोतम गोत निधान॥ तिनहूं के पुनि शिष भये बइर गोतमी गोत। तिनको कछु बिस्तार करि कहौं बिवस्था पोत॥ धनगिर इक बिवहारिया तासु सुनंदा तीव। तासु गर्भमैं चवि बस्योतिर्यक जृंभक जीव॥ धनगिर साध संजोग तें चारित लीनौ जाय।पाछे तिनकै सुत भयो जननी कौ दुखदाय॥ इक दिन धनगिर निज घरैकरन गोचरी आय। तियसुत दुखतें लखि कह्यो यह आपनी बलाय॥ लेहु मोहि दुख देत अति रोय रोय दिन रात। आंखि लगी न छमास तैं जागत भयो प्रभात॥ जहां गये तुम आप्रतहं याहू को लेजाय। यह कहि झोली मैं दियो सुअन हठीलो लाय॥ लैआये गुरु निकट तिहिं गुरु भाष्यो हो जोय। सचित अचित जोई मिलै जाय बिहरियोसोय॥ आय सामुहैं सिंघगिरि

झोली लीनी हाथ । भारवज सम जानि तिहिं वैरि कह्यो गुरनाथ ॥ पालन लालनहेत तिहिं एक श्राविका हाथ । गुरु दीनों लीनों सुतिन पोस्यो जियकेसाथ ॥ तहां पालने माहिं तिन सुनि सबसूत्र सुअर्थ । कहत साधवी बदन तैं सीख्यौ गयो न व्यर्थ॥ तीन बरस बय जव भई सुमिर सुनन्दा माय । खेलत लखि सुत और के चावन आईधाय ॥ बालक मांग्यो गुर निकट गुर नहिं दीनौ सोय । जाय पुकारी नृपति पैं सोधनगिरि को जोय ॥ नरपति तब गुरु बोलि सुनि सिगरी पिछली बात । कह्यो वस्तु लैतासुकी सुत तौताकी मात ॥ नाना विधि के मात तब धरे खिलौना ल्याय । उन एकौ सोना छुयो आघा लियो उठाय ॥ नृप दीनौ गुरु कौं सुअन माय हारि पछताय । लै चारित गुरु तैंरहो वैर स्वामिढिग जाय॥ आठ बरस कौजबभयो बैर भयो तब साध। इक दिन गुरु तिहिं चेतदै बाहर गये अबाध ॥ पाछैं सब साधन लग्यौ बइर बाचना दैन । आये जब गुरु सुनि चह्यो दैन पाट सुख चैन ॥ जानि जोग दीनौंपरयो सोदसपूरवसूत । बैठिपाटगुरुदेव के सोघन गिरको पूत ॥ श्रावकतन धरि एक सुर तहं आयो छल साधि । लाग्यो विहरावन गुरहिं पेठपाक अबाधि ॥ पै उनग्यान बिचार तिहिं बिहर्यौ नहिं लहि सोय । रीझि होय परतछ दई लबध वइको जोय ॥ लबध महानसहूं दई लई बइर सो ताहि । चतुर संघ दुरभिक्ष तैं लये वचाय निबाहि ॥ अन्त आउ निज जानि पुनि अनसन करन बिचार । बज्रसेननिज शिष्य सौं भाख्यौ गुरुतिहंबार ॥ रह्योसेठ जिनदत्तइक श्रावक पाछै जोय । चढ़ै रसोई तासु कौलाख द्रव्य जब होय ॥ सोया काल अकाल में मिलै न नित इहि काज । मरन चहत तिहिं जाय तुम बरजौ आनौ वाज ॥ बज्रसेन सुनि गुरुवचन चलिपहुंच्यौ तिहिं देस । मिल्यो सेठ जिनदत्त सौं भाख्यौ गुरु उपदेस॥ तिन मन मैं चिंतन कियो जो इहिं काल दुकाल । लहैं भक्ष दुर-

भिक्ष तैं बचै छुटै जंजाल ॥ तो चारित हमलेहिं यह चिंतन आई ज्वार। नाज समाज जहाज बहु भरि भरि आये द्वार ॥ भयो रु भिक्ष सुदेस सब सुखी भये नरनार। सोचि प्रतिग्या आपनी मन मैं करि निरधार ॥ चार्यों पुत्र कलत्र जुत सो श्रावक जिनदत्त। चारित लै संसार तजि साध भयो छदमत्त ॥ तिनकी साखा चारि लैं तीन गई बिच्छेद। एकरही तिन चारिमैं साखा इन्द्रसुबेद ॥ बैरस्वामि बहु साध संग करिकै तप संथार। देह त्यागि गिरमूलतट लह्यो सुर्ग निरधार। ग्रही रहे बहुबर्ष अरु जतो चवालिस बर्ष। छत्तिस गुरु पद पाय पुनि सुर्ग गये जुत हर्ष ॥ मनपरजाई ज्ञानअरु अर्द्धन राच संघेन। गये भयेबिच्छेदये तबहीं तैं जगऐन ॥ चारि शिष्य तिनके भये तागिल पोमिल फेर। तापस और जयंत तैं साखा चारि सुहेर ॥ भद्रबाहु के चारि शिष एक थबिर गोदासु। अग्निदत्त पुनि जन्हदत सोमदत्त पुनि जासु ॥ भये थबिर गोदास के चारि शिष्य बर फेर। चारि साखतिन तैंचली इक तामलसो हेर ॥ दुतिय कोड़बरसी कही पंडबर्धनातीन। दासीपव्वडिका बहुरभूतबिजय गुरुपीन ॥ तिनके बारह शिष्य भये नंदभद्र तहं एक। भद्र कह्यो उपनंद पुनि तीसभद्र सबिबेक ॥ पांडभद्र जसभद्र अरु सुमनिभद्रकहि फेर। पूर्नथूल दोउभद्र जुत सयलमतीपुनि हेर ॥ जंबूदीह सुभद्र पुनि सूरभद्र इहि नाम। भये बारहैं। शिष्य ये इनको संख्यत्तमाम ॥ भई शिष्यनी सात पुनि भूतबिजयकीओर। थूलभद्रकी बहिन हैं ते सातौं इक ठौर ॥ जक्खाजक्ख दिनारु पुनिभूताभूत दिना सु। सेना अरु बेना बहुर रतना सातौं पास ॥ थबिर महा गिरि साधके आठ शिष्य पुनि जान। उत्तर वल सहधनढ पुनि कहिसि रिद्धि मन मान ॥ पुनि कौडिन्नरु नाग कहि नागमित्र पुनि जान। छलुक रोह गुप्ता कहेआठौं शिष्यबखान ॥ अंतरंजिका नगर मैं थबिर महागिरि आय। तहां एक दंडी मिल्यो

अद्भुत भेष बनाय ॥ धरै कमंडलु हाथ मैं दूजे हाथ कुदाल । कांधे अंकुस धरि चहत बाद कियो तिहिं काल ॥ दई महागिरि गुरु तबै रोहगुप्त कौं बोलि । जातैं उपजैं जीव ते बिद्या सात अतोलि ॥ बीछो मोररु सर्प पुनि नौल मूस मंजार । मृग मृगराज बराह अरु सारदूल निरधार ॥ घूघू कागहिं आदिदै जेजे जौनि नवीन । जो चाहै सोई बनै ऐसो बिद्यादीन ॥ राजसभा मैं जाय पुनि रोहगुप्त तिहि काल । जीत्यो दंडी सो तहां करि बिबाद के जाल ॥ बिद्या बाद चुक्यौ तबै कीनैं ग्यान बिचार । दंडीजीव अजीव द्वै कहै भेद बिस्तार ॥ रोहगुप्ततव्र तीसरो तिन भाख्यो नोजीव । दंडी बोलो सो कहां अत्र लैं दरसन कीव । रोहगुप्त तब डोर इक बटिडारी भुव मांह । हिलन लगी सो डोर तत्र बलकेवल तिहिंठांह ॥ जुक्ति उक्तिसौं बादकरि रोहगुप्ततिहिं काल । दंडी दियो हरायकै राजसभामैं हाल ॥ जीति जाय गुरु निकट जब भाख्यो सकलबिबाद । गुरु भाखो भगवन्तके वचन बिरुद्ध सुबाद ॥ जद्यपि समझायो बहुत गुरु कुशिष्य पै सोय । नैकन समझ्यो कोपि गुरु तिरस्कार्यो तिहिं जोय ॥ निकसी साख त्रिरासनी रोहगुप्त तैं जान । उत्तम बलु सह सैं भई चारि साख परमान ॥ कोसत्रिका सुतबतिका कौडंबानी जान । चंद नागरी चारि थे साखा संख्या मान ॥ अब सुनिथविर सुहस्तके बारह शिष्य प्रमान । रोहग अरु जसभद्र पुनि मेहगनित अरु जान ॥ कामर्द्धी सुस्थित सुव्रत बक्करु रक्षत जान । ईशगुप्तश्रीगुप्त तिम रोहिगुप्त परमान ॥ गनितवंभ पुनितिमिर्गनितसोसबारहैं धार । रोहन गच्छ उदेह ते छह कुल साखा चार ॥ उदंबरीका एक अरु मास पूरिका जान । मति पूरन जुतपत्रिका साख चारि परमान ॥ नागभूतिपहिलै कह्यो सोमभूति पुनिजान । उल्लगच्छ तीजो कह्यो हत्थलिज्ज पनिमान ॥ नंदिद्या पुनि पांचवौं परिहारक छह स्वच्छ । हरि गोतीश्रीगुप्त तैं चारन नामा गच्छ ॥

प्रकटे तातैं सात कुल साखा चारि प्रतच्छ। थविर भद्रजस तैं कह्यौ उडुबाडुक सुभ गच्छ॥ साख चारि अरु तीन कुल ताके प्रकटे फेर। एक भद्रजस नाम कुल भद्रगुप्त पुनि हेर॥ तीजौ है जसभद्रपुनि चारयौं साखाजान। चंपद्याभ भ्रजिकाकाकंदिका प्रमान॥ मिहिलजिका चौथी कहा अत्र कामर्द्धका तासु। गच्छ बेस वाटिक कह्यौ चारि चारि पुनि जासु॥ साखा अरु कुल नीपजे सावस्थिक तहं एक। राज पालका दूसरी अंत रंजिका टेक॥ चौथो खेमम लिचका एकगणित कुलफेर। मेहक कामर्द्धरु वहुर इन्द्रमुरग पुनि हेर॥ ईसगुप्त तैं पुनि भयो वरमा नवगन गच्छ। चार साख कुलतीन पुनितिन के भये प्रतच्छ॥ कास वर्तिका गोतमी वासिस्थित एतीन॥ साखा चौथी सोरठी सुनि कुल तीन प्रवीन॥ ऋषिगुप्तरु ऋषि दत्त पुनि अभिजयंत कुल स्वच्छ। सुस्थित सुप्रति बुद्ध तैं भयो कोटि गन गच्छ। चारि साख कुल चारि पुनि तातैंप्रगटेजान। उच्च नागरी एक अरु विद्याधरी बखान। तीजीबच्ची मध्यमा चौथी साखा जान। ब्रह्मन एक वछल्यद्दै वानिज तीजो जान॥ प्रश्न बाहना तासुको चौथो कुल पहिचान। येई चारयों साख अरु चारों कुल परमान॥ अरु सुस्थित प्रतिबद्ध केपांचसुशिष्य सुचाल। इन्द्र दिन्न प्रियग्रंथ अरु विद्याधर गोपाल॥ अर्हदत्त ऋषिदत्तये पांचौ शिष्य सुचाल। विद्याधर तैं साखपुनि विद्याधरी बिसाल॥ इन्द्रदिन्न के शिष्यदिन तिनकेशिषपुनिदोय। संतसेन अरु सीहगिर संतसेनतैं सोय। उच्चनागरी नाम तहं साखा निकसी जान। संतसेन हू तैं भये चारि शिष्य पहिचान॥ आर्ज सेनता पद्म अरु थबिर कुबेर बखान। ऋषिपाली चौथे यहीसाखाचारिप्रमान॥ इनहीचारौंनारहमतैंसाखाचारिबखान थविर सीहगिर के भये धनगिरि शिष्य प्रधान बैरस्वामि दूजे भये सुमतिसूर पुनि जान। और अरहदिन सुमति पुनिगोतम गोती

मान ॥ तिनके शिषतापस भये तिन तैं निकसी साख । ब्रह्मदीप का नाम जिहिं जाकी जग में साख ॥ ब्रह्मदीपबासी तहां तापस आयो एक । पानी पर गति जासु को ऐसो देखि विसेक ॥ नागर लोक श्रावक सकल भए तासु के दास । एकवृद्ध श्रावक रह्यो गयो सुमनि गुरु पास ॥ तापस की करनीकही गुरु सुनि कह्यो सुनाय । नहीं तपस्या शक्तियह लेपशक्ति सुनि भाय ॥ सुनि सो तापस को भयो कपट शिष्य घर ल्याय । चरनोदकता को लियो धोय वारि तैं पाय ॥ पुनि जल पर चालन कह्यो तपसिहिं विनय सुनाय। पैठि बार बूड़न लग्यो करगहि लियो बचाय ॥ तब गुरु हूं तहां आय कै उतरन चाह्यो बार । नदी फाटि मारग दियो गये बार तैं पार ॥ ऐसो अचरज देखिसब भये शिष्य करि प्रीत । तापस सो थल तज भज्यो भयो भूरि भय भीत ॥ वैरस्वामि के और पुनि तीनशिष्य त्रय साख । बज्रसेन अरु पद्म पुनि आरज रथ सुभ साख ॥ आरजरथ के पूसगिर तिनके थबिर न छत्र । तिनके रक्षित शिष्य पुनि तिनके नागल तत्र ॥ तिनहूंके जेहलभये तिनकेबिस्नुबखान । तिनहूंके कालिक भये तिनके द्वै शिषमान ॥ इक संपति तें भद्र पुनितिनकेसेवक वृद्ध । संघपालि तिनके भये तिनके हस्त सुसिद्ध ॥ तिनके धर्मरु धर्मके संडलसूर बखान । फल्गुमित्रतिनकेभये गोतम गोतीजान॥ धनगिरिगोतवशिष्ट है कालिक गोतमगोत । गोतम गोतोसी हगिर बिस्नु माढ़री गोत॥ हस्ति सूर अरु धर्मप्रिय जंबूनंदसुप्रींय । कश्यप गोती ये कहे चार्यों उत्तम जोय ॥ छमा श्रमनगुनि देस गनि माठर गोत बखान । बच्छस गोती थिर गुपत धर्म कुमार सुजान ॥ देबढ़गनि सिद्धांत जिन राख्यो जात बिछेद । इनसबसाधन कों करों बंदन तजि मन खेद ॥ पुनि साखाबिद्या धरीतामैंबादी एक । वृद्ध तासु को शिष्यपुनि सिद्धसेनसबिबेक॥ भयेदिवाकर जिनकियोस्तव मंदिर कल्यान । जिनपर बोधेबोध

दै बिक्रम नृपति सुजान ॥ महाबीर तैं चारसै सत्तर बरसबितो-
ता भये भये ते थविरजिन लहीजनमकी जीत ॥ बरसपांचसै
अरु असी पांच औरहू सोय । विक्रम तैं हरिभद्र मुनि सूर भये
पुनिजोय ॥ फेर शिष्य तिनके भये हंस और परहंस । जैनागम
गुरु तें सबै पढ़ै जोग परसंस ॥ पुनि छल करिके भेष धुरिबोधु
न कौं तिहिंकाल । जाय देस तिनके पढ़ी तिनकी बिद्याहाल॥
सो बोधन जान्यो कपट लहि भाजे तजि देस । मग मैंपाछैआय
उन मारे करि निःसेस ॥ गुरु सुनि कोपे कोपि पुनिकीनी छमा
छमाल । मानतुंग आचार्ज पुनि प्रगटे तेही काल ॥ जिन भक्ता
मर तवन वरकर्यो हर्योअग्यान । बरसआठसैतबगये बिक्रम
नृपतैं जान ॥ पादलिप्त आचार्जहू भये तिही दिन आय ।
पगलेपन करि करत जे तीरथ पंच बनाय ॥ तीन कालकाचार्ज
पुनि भये थविर गन मांह । प्रथक प्रथक तिनकी कथा सुनिये
अति दुति छांह ॥ प्रथम कालिका चार्य के शिष्य प्रमादी होय।
गुरु अग्या मानी नहीं गुरु तजि गये विगोय ॥ आन देस में
शिष्य इक सागर चन्द्र सुजान । तहां गये गुरु तिनहु नहिंजाने
गुरु पहिचान ॥ बाद कियो करि हारि पुनि जान्यो बड़ो प्रभाव।
पाछे तैं सब शिष्य तहं पहुंचे ढूंढ़त पाव । तब उनहूंपहिचानिकै
सब मिलि पकरे पाय । चूक आपनी मानिकै लीनेदोषखिमाय॥
एक समै सुरपति सुन्यो सीमंधर उपदेस । सुनि पूछ्यो ऐसो
कोऊ सुग्य भरत थल देस ॥ दियो कालिकाचार्य तब श्रीमंधर
बतलाय । इन्द्रवृद्ध बपु धरि तहां पहुंच्यो करि चित चाय ॥
आय पूछि संदेह सब पाय यथारथ ज्वाब । मुदित होयआनन्द
अति ओपी आनन आब ॥ पुनि पूछी निज आरबल सुरपति
हाथ दिखाय । द्वैसागर कीजानि कहि सुरपति दियो बताय ॥
तब सुरपति निजरूप धरि प्रगट होय गुरु पास । मांगि सीख
तहं तैं गयो अपने सुर पुर बास ॥ महाबीर जिननाथ तैं सवा-

तीनसै वर्ष । प्रथम कालिकाचार्ज मुनि जग मैं भये सहर्ष ॥ दुतिय कालिका चार्ज अब तिनकौ सुनौ वखान । वैरिसिंघ नरपति निपुन मालव देस निधान ॥ ताकौ सुत कालिककुअरसुता सरसुती जान । कुंअर पधारयौ एक दिन वन खेलन चौगान ॥ श्रमित होय वनतैं कियो उपवनमैं बिश्राम । तरु छाया तर श्रांत ह्वै सकल निवारी घाम ॥ करत वखान तहां सुनै गुनकरसूर सुजान । सुन उपदेस विरक्त ह्वै चारित लियो निदान ॥ बहिन सरसुती हूं लियो तदनंतर चारित्र । कुंअरै जान्यो जोग गुरु दीनौ पाट पवित्र ॥ ले क्रम करि बिहरन गयो पुरी उजैनी मांहि । गर्द भिल्ल राजा जहां राज करै छवि छांहि ॥ गई सुरसुती साधवी विहरन नरपति गेह । रूपवती तिहिं देखनृप मोह्यो बढ्यो सनेह ॥ ताहि घेर घर मांहि नृप बाहर दई न जान । जदपि वहुत उपदेसगुरु समझायो दे ग्यान ॥ गुरु मन मारि बिचारि चित हारि क्रोध संघारि । गच्छ भारदै शिष्य शिर धरि अवधूत सिंगार ॥ सिंधदेस चलि कै गये साखी नृप कै राज । तुरक वादश्याही करै तह राजन सिरताज ॥ साखी नृप सुत खेल कौ मनिमै कंचन दंड । गिरयो कूप मैं गुरु तहां लीनौ कर कोदंड ॥ धनुविद्या करि गुरु तहां वान वान सौ सांधि । काढ़ि दियो ता कूप तैं दंड वानसौ बांधि ॥ नृप सुनि गुन गुरु नाथ के महिमा कीनी भूर । विपुलमान सनमान करि राखे आप हजूर ॥ काहू एक संजोग करि नृप पै कोप्यो साह । परवानौ पढ़ि समझि तिहि अति डरप्यो नरनाह ॥ सोच ग्रस्त लखि नृपहिं गुरु पूछ्यो अंतर भेद । साह लिख्यो सोसब कह्यौ अपने मन कौ खेद ॥ अपनौ सिर दै भेजि कै त्यागिदेहि यह देस । नातौ मारैं जनसहित सुनि गुरु यह संदेस ॥ धीरज दै नृप सौं कह्यौ नेकन करि संकोच । पुरी उजैनी राज तुहि देहुं लेहु तजि सोच ॥ यह कहि जोरि अनीक गुरु चढ़ नृपहि

लैसंग। मारग मैं ग्रीषम बदलि बरखा कीनो रंग॥ घरपरसौंहैं घन भये झर वरसौंहैं मेह। घर दर सौंहैं पथिक द्दग करिसर सौंहैं नेह॥ घिरेघुमड़िघन घोर घर रैन द्योस कौ ग्यान। कुमुदकमल तैं पाइयत कै चकवो चकवान॥ झपकिझपकि झमकै झरी लपकि लपकि लपि बीज। टपकि टपकि ओली करैं छपकि छपकि मग भीज॥ दंपति अंक निसंक भरि लूटत धनज्यौं रंक। माननि तज्यौ अतंक अरु मारग छायो पंक॥ मारग रित अव रोध तैं नृपति रहे तहं छाय। भई छावनी कटक की रितु सुहावनी पाय॥ चतुरमास बीत्यौ जबै सरद आगमन आय। अमल अम्भ आकाश ह्वै मारग दियो बताय॥ तऊ कटक बिन धन नहीं चल्यौ रह्यो तहं छाय। तब कालिक गुरु जान यह कीनो पीन उपाय॥ करि सुद्दष्ट की वृष्ट तैं सब इष्टका पजाय। करि दीने सुबरन भई छई रिद्ध निधि आय॥ साजि बाज गज राज वर संगर साजि निनाद। जुरे जंग दुहुं ओर तैं सुरे न समर बिबाद॥ मचो घुमड़िघमसान अति बचो नएको मार। तोप तीर तरवार के बार भये तनपार॥ रुधिर नदिन के परतैं भरे कूप सर कुंड। जामैं जलचर ज्यौं जगे रुंड झुंडगज सुंड॥ भाज्यौ गर्दभसैन भजि गही कोटकी वोट। परन लगी ता कोट पर सकल कटक की चोट॥ साधी बिद्या गर्दभी गर्दभ सेन बनाय। सो लखिलीनी ग्यानबल गुरुस्वामी सुखदाय॥ बोलि एकसौ आठ भट सबदबेध जिहिं साख। रहो घातकरि सकल मिलि यों तिनसौं गुरु भाख॥ कह्यो जबै सो गर्दभी सबद करै मुख फार। सब मिलि त्यागौ बान तुम सबद रोध अनुसार॥ त्योंही कीनौ सबन मिलि गई गर्दभी भाग। गर्दभनृप मुख पैकियो गधीमूत्र मल त्याग॥ बांधिलियो गर्दभ नृपति दुर्ग तोरि तिहिं काल। जीव दयापुनिपालितिहिंदीनो देशनिकाल॥ गुरु साखो नृप कौ दियो नगर उजैनी राज। सरसुतिबहिनहि

पुनि दई दिक्षा तिन मुनि राज ॥ दुतियकालिका चार्जको कह्यौ
इतौ परभाव । त्रितिय कालिका चार्ज गुनकहिबे कौ अबदाव॥
त्रितिय कालिका चार्ज तें क्रमकरिकरत विहार । आये भरवच
नगर जहं भानु मित्र सिरदार॥ सो गुरु कौ भरनेज अरु बाल
मित्र तिन जान। गुरु आगममहिमा महतकियो मान सनमान॥
अति आग्रह करि गुरु चरन राखे भर चौमास । पै ताकैं बिहरैं
नहीं ते गुरु परम उदास ॥ तातैं नृप दुख पाय निज प्रोहित
लियो बुलाय । तासौं सब मन को कथा दीनी विथा सुनाय ॥
तब प्रोहित नृप सैं। कह्यौ सब श्रावकैं बुलाय । देहु बिबिधि
भोजन जहां मुनि बर बिहरैं जाय ॥ त्योंहीं कीनी नृप सकल
श्रावक लीनेबोल । भोजन नाना भांति के दीने तिनहिं अतोल॥
तिन घर गुर के शिष्य सब नित बिहरैं सब जाय । नानाबिधि
मिष्ठान सब लावें आवें खाय ॥ तब गुरु पूछी नित्य प्रति कौन
देत मिष्ठान । नित कारज घर कौन के शिष्यन कह्यो निदान ॥
हम कछु जानै नांहि प्रभु आज पूछि सब बात । आय निवेदैं
आपके चरन मांहि सो प्रात ॥ दूजे दिन शिष्यन सकल पूछी
समझि वृतान्त । कह्यो आय गुरु सैं। सकल सुन्यो शांत प्रभु
दांत ॥ राज पिंड अनुचित लख्यो बिनुहीं भाखे सोय । थल
तजि कियो बिहार तहं पुर पठान है जोय ॥ जहं सालबाहन
नृपति श्रावक धर्मी बास । भयो पजूसन पर्व सित पंचमि
भादौं मास ॥ इंद्र महोच्छौहू तहां ताही दिन बिवहार । सो
पूछ्यो गुरु सैं। नृपति कीजे कौन बिचार ॥ पोस करैं। तौ
लोकथित रहै न लोक प्रचार । करैं। रहै नहिं पोस बिधि करैं।
कौन आचार ॥ इंद्रमहोछौ पंचमी छठको पोसहि धार । रहैं।
होय जो आपकी अग्या यों निरधार ॥ तब भाखी गुरु होयनहिं
यह क्योंहूं करि जोय। अधिक पंचमी दिवस तैं पर्व पज-
सन सोय ॥ तब नृप भाखी होय जो अग्या प्रभु की आज।

चौथ सुतिथ पोसह करौं कालि महोछौसाज ॥ यह सुनिगुरु राजी भये दीनो अग्या मान। थापी ताही दिवस तैं चौथ पजूसन जान ॥ सात ऊन दस सौ बरस महाबीर तैं जोय। बीते प्रगटे कालिका चारज जग मैं सोय ॥ भई आठवीं बाचना संपूरन यह जान । समाचारिकी बाचना नवमी सुनौं निदान ॥

अथ नवमी बाचना ॥

कहियत नवमी बाचना अब सब सो सुनि येह। साध समा चारी सकल अट्ठाइस गनि लेह ॥ खानपान संचार अरु रहनि चहनि दै आदि । अनुचित उचित विचार सौं जेते बिवहारादि ॥ चतुरमास बरसात मैं क्रिया बिबेक विचार । सदाचार जे साध के समाचार निरधार ॥ बरषा रितु आरंभ मैं छाड़ि सकल आरंभ। चारि मास के नेम गहि साध अलोभ अदंभ ॥ रहै एक थल माहिं कौं मिति अहार विवहार । सो थल तिनके हित सजै ग्रहबासी साचार। स्वच्छ सुद्ध मृदु भूमि करि लीपि पोति धवलाय। छात छौनि त्रिन छान करि छाय बिछौनि बिछाय ॥ नाल प्रनालन की निपट सुचि करि गच ढरवाय। साध साधवी कौं ग्रही ऐसैं थल पधराय॥ रहै साध तिहि स्वच्छ थल भर चौमासा छाय। सुमन सुबच सुभ कर्मकौं स्वच्छ सुसील सुभाय॥ तहां प्रथम इक मास पर जब बीतै दिन बीस। भादौं सुकला पंचमी सकल तिथन मनि सीस ॥ आसाढी पून्यौं हि तैं दिन पचासवौं जोय। बढ़ै न तामैं एक दिन घटै तो घटती होय ॥ ता दिन पर्व पजूसना महावीरजिन कीन। गोतमादि गनधरन हूं त्यौंही कियो प्रबीन ॥ त्यौं शिष्यन आचारजन थविरन हूं मिलि सर्व । उपाध्याय कीनौ करैं त्यौं हमहूं सो पर्व ॥

अथ दूजी समा चारी ॥

औखध अरु आहार हित गमना गमन विचार । सब दिस ढाई कोस मिति साधन कौं संचार ॥ पंनिस अपने ठौरहींआय

रहैं सो साध । आन ठांउ निसिवसि रहन हात साध कोबाध॥

अथ त्रतिय समाचारी ॥

बहैं निरंतर जोनदी जल सब काल प्रवाह । साध गमन आगमन तहं अति अनुचित अवगाह ॥ होय जानु तैं हेठ जल तिहिं सरिता मैं सोय । वगपगडगमग माँहिं जिम अध ऊरध गति जोय ॥ ऐसैं जो जन चलि सकै सूवो पाय उठाय । अलप अंभ मैं साध यौं जाय सकैं तो जाय ॥

अथ चतुर्थ समाचारी ॥

क्रशजड अरुजडवक्रजे दोय भांतिके साध । तिनसौंगुरु जिहिं बिधि कह्यो तिहिंबिधि बाढि उपाध ॥ ग्लान साध आहार अरु ओषध हिततजि बास ॥ अथवा निजआहार हित विहरैग्रहपति पास ॥ गुरु निदेश तैं तनकहूं घटबढ़ चहै न सोय । लैनदैन अनुचित उचित गुरु वचनन तैं होय ॥ ग्लान साध निज हित बिहरि बिहराबन बिवहार । गुरु निदेश तैं तनकहू न्यूनाधिक न बिचार ॥

अथ पंचम समाचारी ॥

तरुन समर्थ अरोग जे साध तिन्हैं इहिं काल । बरषा मैं बरजे इते नबरस गुरु वच पाल ॥ दूधदही नवनीत घृत तिल गुड़ मधु मद मांस । साध खान मैं उचित नहिं जौं लौ तन मैं सांस ॥

अथ छठो समाचारी ॥

ग्लान दुखी हित साधजो ग्रही गेह चलि जाय । लेइतितोई जो कहै रोगी अरु जो खाय ॥ जदपि ग्रही दे अधिक अरु कहै जती तुम लेहु । उबरै तो तुम विहरियो अथवा औरन देहु ॥ तऊ उचित नहिं साध कौं लैनौंअधिक अहार । ग्लान साधहि-तहूं न लै बिना कहै ग्रहधार ॥

अथ सातवीं समाचारी ॥

थबिर कल्पिश्रावक सुखद साध सेव परबीन। चौरासीगच्छ तासमैं भेद न मानै दीन ॥ सब साधन सौंयौं कहै जो चाहौ सो लेहु। तदपि अनलखी बस्तुकौं कहै न तिनसौं देहु ॥ अति उदार दातार घर जो न होय सो बस्त। कष्ट होय दीवौ चहैं जिंहकिंह भांति ग्रहस्त ॥पै जो अनदेखीचहैबस्तु कृपनपैजाय। तौ कछु तैसौ दोष नहिं जैसौ कह्यो सुनाय ॥

अथ आठवीं समाचारी ॥

प्रति दिन लेत अहार जो साध निरन्तर कोय। एकै बार ग्रहस्त घरकरै गोचरी सोय ॥ पाधातपी अचार जरु ग्लानबाल हित जोय। ग्रही गेह द्वै बारहूं जाय न अनुचित होय ॥ ब्रतो इकंतर जो जतीताहिगोचरी हेत। अनुचित नहिं द्वैबार जौजाय ग्रही ग्रह खेत ॥ एकै विहरन मांहिं सोजो जानै संतोष। धोय पोंछि कै पात्र फिर चहै न जाचन दोष ॥ नाहीं तौते पात्र सब अन धोये ही फेर। लैग्रहस्त घर जायकैजाचैदूजीबेर॥ द्वैउपास साधन करैं जे पारन दिन सोय। दोय बेर जाचैं तऊ अनुचित तिन्हैं न होय ॥ साधक तीन उपास के ग्रही गेह त्रय बार। जाचैं तौ अनुचित नही एही क्रम निरधार॥ पांच सात दिन पाख केबास करैं जे कोय। तिन्हैं नेमनहिं जब चहै चहैं ग्रही घरसोय॥ पै मद माया कोप अरु लोभ मान तजि साध। ग्रही गेह मैं गोचरी बिधवत करैं अबाध ॥

अथ नवमीं समाचारी ॥

नित मितभोजी साधकौं सब विधि कौ जो बार। त्रिधवत लै अनुचित नहीं यों भाख्यौ निरधार॥ एकंतर बासी जती त्रय बिधि कौ जल लेय। कर धोवन अरु पात्र कौ भात मांड़ पुनि जेय ॥ तिल तुस जब धोवन सलिल तीन भांति कौजोय। दो-टउपासीसाध कौं उचित कहावै सोय॥तीन उपासी साधकौंतीन

भांति कौबार । कांजी मांडरुउष्नजल पीवैउचित विचार ॥ तीनवासतैं अधिकतप करैजहांलैंसाध । तिनहूंकौं केवलउचित उष्नोदकै अबाध ॥ सीत चिकनई रहित जलतीन उबालि उबालि । तीनबार तिहिं छानि पुनि स्वच्छ पात्र मैं ढालि ॥ अधिक नूनता करि रहित मित जल ऐसोजोय । साध यमी नियमी व्रती इहि विधि साधै सोय ॥

अथ दसमी समाचारी ॥

ग्रही जती के पात्र मैं दे अहार तिहिं काल । कौर गिरैं कौसीत इक दान नाम सो हाल ॥ ऐसे जौलौं पात्र मैं टूटैनहिं जल धार । एक बूंद वा घूंट इक सो जल दात विचार ॥ भोजन जल के दात को नेम करैं नित साध । चार पांचतैं अधिक नहिं अनजल दात अबाध ॥ नेम करै तेतौ चहै न्यून अधिक नहिं होय । भूख रहै तौ साध फिर जाय न जाचन सोय ॥

अथ ग्यारहवीं समाचारी ॥

बिवाहादि सुभ काज मैं जहां मिलैं नरनारि । भीडहोय तासौं कहैं संखडनाम विचारि ॥ सोसंखडपोसाल तैं सातसदन के मांहि । होय जहां तौ तिहि सदन उचित नसाधैजांहि ॥

अथ बारहवीं समाचारी ॥

जिन कल्पी कर पातरी साध मेह के मांहि । उचित नहीं आहार हित ग्रही गेह तैं जांहि ॥ गम नांतर अथवा तहां विहरनसमैं अहार । जौ वरसै बरसात मैं हानी बड़ो फुहार ॥ कांख कुख तर हाथ सौं ढापि अहार छिपाय । छानि छात छित रुहतरैं जाय बचाय सुखाय ॥ थविर कल्पि जे पात्र धर तै बरखा रितु मांहिं ॥ कामरि चादर ओटि ते अल्प वृष्टि मैं जांहिं ॥ ग्रही गेह मैं पहुंचि जौंवरसत खुलै न मेह । तहां नर हनौ साधकौ उचित बिना संदेह ॥ आनथान वावृक्ष तरवा अपने थल आय । रहै रहैं नहिं पै तहां साध ग्रही ग्रह छाय ॥

जो कदाचि थित थान में करै रसोई कोय। अरु बिहरावै साध कौं प्रीत पूरवक सोय॥ साध पहुंचि पहिलैं जितौ जो अन सोझ्यौ होय। सोई बिहरे अरु न ले पाछैं सोझ्यौ सोय॥ अरु जो बिहरनकाल मैं खुलैन क्यौंहूं मेह। पहर पाछलैं जाय कै खाय तहां पुनि तेह॥ धोय पोंछिकै पात्र तब रबि रहतैंघर आय। रहे रहै नहिं रात तहं ग्रही गेह मैं छाय॥

अथ तेरहवीं समाचारी॥

मेह अछेह न देह जो जान साध को आय। ग्रहीगेह तंतौ तहां ठाढ़ौ रहै सुभाय॥ एक साध इक साधवी कै द्वै कै इक दोय। त्योंहीं साधरु श्राविका मिलि नहिं ठाढ़े होय॥ संगबाल वा बालिका जऊ पांचवौं होय। तऊ एक थल मिलि रहन अनुचित जानौ सोय॥ जो वा घर के दर बहुत अरु बहु नरकी दीठ। निकट वृद्ध वृद्धा किधौं तौ नहिं अनुचित डीठ॥ पै तिहि घर निसि नहिं बसै उठआवै निज गेह। सांझ समय लौं राह लखि बरसैं मेह अछेह॥

अथ चौदहवीं समाचारी॥

खान पान स्वादिम असन चारि भांति आहार। आन साध हित हेतजो साधै साध बिहार॥ ताकी रुचि पहिचानि कै पूछि सुभाव बिचार। तातैं अधिक न ऊन सो बिहरै साध अहार॥

अथ पन्द्रहीं समाचारी॥

तनकौं तनके अंग सब जौ जल भीजे होय। भोजन चार्‌यो भांति कौ साधन कल्पे कोय॥ तिन मैं तन मैं सातये अंगप्राय जहं बार। चिर थिर रहि नहिं सूकई ताकौ अधिक बिचार॥ कर कररेखा दोय ये नख नख सिखा सुचार। भौंह अधर अरु वोठ ये सातौं जल आधार॥

अथ सोलहीं समाचरी॥

आननील बीजरु हरित फूल अण्डजये नेह। उबरंतेऊबारिये

आठौंसूछम देह ॥ श्रान जीव सूछम जिते बिंद्री तिंद्री देह। पांचरंगके जिन कहे ते अब सबसुनिलेह ॥ नील पीत सित श्याम अरु अरुन बरन बपु जोय।तिनमैंसूछम कन्थुआउबरेजायनसोय चालन हालनतासुको नजरनआवे कोय। ग्यानदीठउहि नजर लखि साध उधारै सोय॥ पात्र आदि उपगरन सब यातैं बारंबार। झारि पोंछि पडलेह हरि राखे साध बिचार॥ नीलसूछमी जीव सब त्योंही पचरंग जान। पडलेहै उपगरन सब जैनो धरम निधान॥ त्यौं अन्नादिक बीजमैंसबरंग सूछमजीय।जानि ग्यान द्रग साध तिहि लहि पडलेहनकीय॥ हरित जीवसूछम जिते पचरंग भुवरंग होय। तिनहूं तैं उगरन सबन पडलेहन सुभ सोय॥ फूल जीव सूछम सकल पचरंग हूं तिहि रीत। उपगरनादिक थल सकल पडलेहो करि प्रीत॥ पुनिपिपीलिका आदिके सूछमअंड जितेक।तिनहूं तैं पडलेहिये उपगरनादि तिते क॥ लैंन्न सूछमी जीव जे भवमैंकरैं निवास। तिनहूं तैं पडलेहिये पात्रबास अरुबास॥ नेह जीवसूछम कहे हिमकर काहलओस इनतैं पडलेहन विना लगत जैन मत दोस॥ सुमत पांच जे जिन कही तामें इर्षा एक। मगपग धरिबे मांहि जो रच्छाजीव बिबेक॥ साध एक बरदत्त तिहिं इर्या सुमति पिछानि। लेन परिच्छा सुरग तें सुर आयो इक जानि॥ है उपजाई मेडकीपग मग अगमन आय। पाछैं है गज होय कैं प्रेरन कीनो धाय॥ करिन पकरि कर सौं लयो साध उठाय अकास। फिर भुव पटक्यो तउ न सो भूल्यो जीव बिनास॥ तब मन के परनाम लहिसो सुर सिर पगनाय। गयो आपने सदनकौंसबअपराध खिमाय॥ सुमत दूसरी जिन कही भाखा सुमति बखान। वाक बिबेक बिचार जिहिं भाषत सुमति सुजान॥ तहां एक द्रष्टांत न्रप पुर घेरयो रिपु आय। साध एक तिहिं नगर तैं बाहर निकस्यो धाय॥ कटक लोग तासौं लगे पूछन सुनो सुजान।

या पुर मैं केतिक कटक हमसौं कहो बखान ॥ सुनि मन अनु-चित जानकै बोलनि बोल्यो सोय । कटक सुभट पूछ्यो जिनन तिनके सनमुख होय ॥ सुननहार देखत नहीं लखैं सुनैं नहिं तेह । सुनैं लखैं बोलैं नते कहि गुप कियो अछेह ॥ जानिबावरौ ताहि तब लोगन तज्यो निदान । वाक बिबेकी साध की भाषा सुमति पिछान ॥ तीजी कहिये ईषणा साध भक्ति चितधार । धिनजिनकै मन सहि रहै सुमतिईषणासार ॥ नंदषेन द्विज सु-वन तिन साध समागम पाय । चारित लै तप आदरचौ अमर एक तहं आय ॥ लैन परिच्छा साधकी मन मैं कपट बढाय । साध रूप अनुरूप तिन धरे देह द्वै चाय ॥ इक रोगी वनि रहि तहां दूजहिं प्रेर्यो जाय । कहीं बात नंदषेनसौंताकी बिथा सु-नाय ॥ सो सुनि संगअहार लै वन मैं पहुच्यो जाय । धरिसन-मुख मो साध कैं बोल्यौ विनयसुनाय ॥ पूज नगर मैं आइयै सेवा नीकैं होय । उन भाखी मो पग न मग सकैं चलन गति खोय ॥ नंदषेन सो साध तब लीनौं कंध चढाय । मारग मैं मल मूत करि दीनौ ताहि न्हवाय ॥ नंदषेन मनतनकहूं मान्यौ नाहि सुखेद । तनमैंचन्दन लेप तैं जान्यौ आन न भेद ॥ धन्य भाग्यनिज जानि अरु तन पवित्र अनुमान । अमर ग्यान करि जानि धरि दिव्य रूप सुखदान ॥ नंदषेन के पायपरि सबअपराध खिमाय । जस गावत भावत चल्यो सुर पुर पहुच्यो जाय ॥ चौथी सुमति नि-खेवनी बधन सहत प्रतिकूल । करी साध पडलेह पै गयो समय तहां भूल ॥ जब घन तैं निकर्‌यो लर्‌यो रवि तव जानो चूक । फिरि पडलेहन शिष्य कौं कह्यौ पूजनै कूक ॥ शिष्यबक्र बोल्यौ कहा झोली मैं हैं सांपि । सुनि सहि चुप रहि मौन गहि रहे ओठ मुख ढांपि ॥ शिष्य गोचरी हेत जब झोली लई उठाय । दोय सांप तामैं लखेरह्यौ चकित मैं पाय ॥ करन गुरन के बचन कौं सांचौ सासन देव । झोली मैं द्वैअहि असित उपजाये तब

खेव ॥ पर्‌यो पाय गुरुराय कैं बार बार पछुताय । अति दीनता दिखायकैं लीने दोष खिमाय ॥ अब उच्चार सुपासवन सुमति पांचवीं जोय । भेद न चौथी सुमति तैं होय तुकिंचित होय॥सुव्रत नाम गुरु शिष्य सौं पात्र मारजन हेत । कह्यौ सह्यौ नहिं तिन कह्यौ उलटि निपट अनुचेत ॥ नित प्रति कैसौं मारजन कहा ऊंट ढवजोय । गुरु गुरुता करि सुनि रहे सासन सुर लहि सोय ॥ ऊंट बुलायो पात्र मैं गुरु बच सत्य निमित्त । शिष्य देखि भय पायकै गुरु महिमां धरि चित्त ॥ पांचसुमति येई कहीं साध साधवी जोय । तिन्हें उचित ऐसी रहनिसहनिचहनि बरसोय ॥

अथ सत्तरहीं समाचारी ॥

साध गोचरी कै लिये ग्रहो गेह जौ जाय । विन अग्या गुरु जनन के क्योहूं जायन आय ॥ दिक्षा गुरुबय गुरु बहुर विद्या गुरु जे होय । तिनको बिधि सौं जाय अरु नहिं तौ जाय न सोय ॥ उचितरु अनुचित साधके सबजानैंगुरुदेव । यातैं तिनके बिनु कहैं चहै न एकौ टेव ॥ खानपानजपतपसकल मलमूत्रादिककर्म । जैसौ जिहिं थल काल जो तितो कहै गुरु मर्म ॥

अथ अठारहीं समाचारी ॥

खानपान मलमत्र कै तप दरसन के हेत । अनत गमन चाहै कियो साध तजै निज खेत ॥ आन साध थल माहिं जो पाछे रहै निदान । ताहि सौंपि उपगरन सब पाछैं करै पयान ॥ जो पूजी पट पात्र दै आदि अनेरी वस्त । कहै अनेरे साध सौं रहियो लखत समस्त ॥ जब वह भाखै बैन करि हम लखिहैं तुम जाउ । तब अपनै थल तजि कहूं जाय न आन उपाउ ॥

अथ उन्नीसवीं समाचारी ॥

चौकी पीढातखत जे आसनादितिहिं साध । ग्रहीसाधअग्या बिना बर्तै नही अबाध ॥ बर्तैतासौं पूछिकैं जाकी है सो बस्त ॥ झाडै पोछै धूपदै राखै ताहि समस्त ॥ बिन पडलेहैं जो पडै

खटमल आदिक जीव । त्यौंत्यौं संजम नहिं पलै लागै दोष अतीव ॥ यातैं नाहींअतिवड़े नहिं अति छोटे लेय । तखतआदि पडलेहि यै सहजे मांही जेय ॥

अथ बीसवीं समाचारी ॥

मल मूत्रादिक त्याग कौं चतुर मासमैं साध । नेमकरै थल कौं तहां निसदिन मांहि अबाध । तीनतीन मंडल करै स्वच्छभूमि दिन देखि । तहं त्यागै मल मूत्र कफ साध साधवी लेखि ॥

अथ इकीसवीं समाचारी ॥

साध साधवी मूत्रमलकफत्यागन कै काज । तीन पात्रराखै निकट अपने अपने साज ॥

अथ बाईसवीं समाचारी ॥

साध शीस गोलोम के मान नराखैं केस । रहैं लोचकीनें सदा यहीजती कौ भेस ॥ जोन सकैंतोमास प्रतिकतरैं प्रति द्वै मास । मुंडन करि छहमास प्रति करैं लोच आयास ॥ छठैं मास हूं जो जती सकैं न करने लोच । करैं अवश्य पजूसना माहिं लोच तजि सोच ॥

अथ तेईसवीं समाचारी ॥

रोस न राखै साध मन भखै न बोल कुबोल । क्रोध विरोध करै न कछु काहू सैं अनबोल ॥ जो कौनहु संजोग करि काहू सों दुख पाय । रोस आन उपजै तऊ तातैं लेइ खिमाय ॥ बारहमासरु दुगुन पख दिवस तीन सै साठ । कह्यौसुन्यौ कीन्यौ जु कछु होय दोष कौ ठाठ ॥ सो सब अपनी चूक कहि सबसैं द्वै कर जोरि । करि निहोर सिर ढोरि कैं लेखिमाय निज षोर॥ भादौं सुकला पंचमी तदनंतर जो कोय । साध साधवीश्राविका श्रावक जिन मतहोय ॥ तजे न मनबचकाय तैं क्रोध बिरोध बिचार । अनाचारि तासैं कहैं तजि तासैंबिवहार ॥ जैसैं चंड प्रद्योत तैं उद्दायन नरराय । खिमत खामना रीति करि लीने

दोष खिमाय ॥ सो अब कछु संक्षेप करि बरनो सुनिये सोय।
श्वर्ननंदि सोनार इक चंपापुर मैं होय॥ तिय ताकैं सौ पांच सो
अति तियलोलपजान। हास प्रहासरंवि तिहिं दई दिखाई आन॥
सो मोह्योलखि ताहि तिन कह्यौ चहै जो मोहि। द्वीप पंचसैलो
तहां ऐहो मिलिहैं तोहि॥ यह कहि चहि हगकोर तैं निजपुर
गई सुनार। बढ्यो बिरह ताकैं बिपुल सुवरननंदि सुनार॥ बहु
धनदे बहु बिनय करि वृद्ध मलाहिक पाय। चल्यौ नावचढ़िचाव
सौं बिरहघाव हियछाय॥ पधिजलनिधिबट वृच्छटटतटन लगी
सुनाव। चढ्योसाखगहिवृच्छपर स्वर्नकार लहि दाव॥ पंछीएक
लख्योतहां जिहिभारंडव नाम। ताके पग गहि रहिगयो सो लै
उड्योउदाम॥ द्वीप पंच सैलीतहां उतर्‌यौचोगाहेत। स्वर्ननंदि
तबताहितजि ढूंढ्यो तिया निकेत॥ हास प्रहासा तहं लखीतिन
भाख्यौसुन मूढ। हैं देवी तूं मनुज यहबनै संजोग न गूढ॥ जो
तूंजरि मरि फिरि इहां होयदेवतारूप। तौ तोसौं मोसौं बनैजोग
भोगगुन भूप॥ तब उन भाख्यो हे प्रिये सकौंन निज थल जाय।
देवी तब ताकौं दियो चंपापुर पहुंचाय॥ तहां जाय तिन बिर-
हबस चही जरावन देह। नागल नासा मित्र तब तिहिं वरज्यो
करि नेह॥ तऊन कामी काम बस नैकौंमानी सीख। बिरहभाल
उरसाल ह्वै मन मैं लागी तीख॥ सब तन वस्त्र लपेटि अरु
तामैं भिजै सनेह। पंचसैलि मैं सुर भयोमर्‌यौ जारि सब देह॥
नागल श्रावक हूं मर्‌यो मन सुभध्यान लगाय। भयो देव सुर
लोक मैं सिगरे सोक मिटाय॥ इंद्रसभा मैं एक दिन नृत्यनाट्य
की डौल। श्वर्न कार सुर कै गरैं देवन डार्‌यो ढोल॥ जदपि
तज्यो उन वाद्य सो गलतैं जानि अरिद्धि। फिरफिरलै डार्‌यो गरैं
परैं बजाये सिद्धि॥ यह कहि नागल देव तब सब पिछली सुधि
ध्याय। महावीर प्रतिमा दई चंदन की बनवाय॥ तीनकालतिहिं
पूजि पुनि अंतकाल निज जान। नाव चढ़ायपठायसोदई तहां सुनि

कान॥सिंध देस सौबीर में नगर बीतिभय नाम । नृपति उदायन निकटसो प्रतिमा गई ललाम ॥ प्रभावती नृप तियतहां तबसो प्रतिमा पाय । लहि देवाधिप देव सों लीनी सीस चढाय ॥ तीनकाल बिध तबसकल पूजन अरचन साज । साजिभक्ति सुभ भावकरि पजैजिनवरराज ॥ रानी मांग्यौ एकदिनदासीसौंसितबास । तिन देख्यौ भ्रमदृष्टि करि पचरंग बसन सुपास ॥ तबरानीनिजआउ कौंजानिअंत अनिथास । चारितलैबौधारि चितगईनृपतिकैपास ॥ नृपति कही तेरौ तहां ह्वैहै देवीरूप । मम सहाय कीजौ सु-कहि आज्ञा दीनी भूप ॥ तब तिन चारित पालपुनि मरिधरि देबीरूप । नृपन जतिन तपसीन कौं बोधन लगीअनूप ॥ कुबजा दासी पुनि करै ता प्रतिमा कौ सेव । तहां देस गंधार तैंश्रावक आयोएव॥ दुखी परयौसो आइकैकीन्हीं कुबजासेव । ह्वै अरोग गुटिका दए ह्वै दासी कोएव ॥ एक भखे तौ नारि कौहोयकुरूप सरूप । दूजै इष्टअभिष्ट तिहिं मिलै अदोष अनूप ॥ यह कहिसौ श्रावक गयो दै गुटिका निज देस । तामैं दासी खाय इक भई कनकरंग भेस ॥ ता दिन तैं ताकौपर्‌यौ सुवरन गुटिका नाम । नृपति चण्डप्रद्योतपुनि चितमैं चिन्ति सुबाम । दूजौ गुटिकाहूं भख्यौ मन मैं होय सकाम । आयो चढ़ि गज अनल गिर सोनृप ललित ललाम ॥ दासी कौं प्रतिमा सहित गयो लेय निजदेस । दूजी प्रतिमा धरि तहां चण्डप्रद्योत नरेस ॥ नृपति उदायन जानि सो कोपि सेनलै संग । चल्यौ कल्यौ पुर तैं बल्यौ रल्यौ क्रोधअंग अंग ॥ उत तैं चण्डप्रद्योत नृप चढि धरि धायो आय । मारग मैं सन्मुख दुहूं मिले परस्पर धाय ॥ मच्यो जुद्ध अति घोर करि सोर सुभट दुहुं ओर । लरे मरे पै नहिं मुरे जुरे जंग करि जोर ॥ अंत उदायन जै लही सही पराजय आनि । जीवत लीनौ बांधि नृप चंडद्योत बलवान ॥ प्रतिमा लोप भई तहां फिरे आप नेदेस । मगमैं बरषा काल के रितु कौ भयोप्रवेस ॥ छौनि छाव-

नीसौ ह्वई कटकि अटकि तिहिं ठौर । जसकर लकसरपरिगयो जाय कयो छतिछौर ॥ तहां पजूसन पर्व नृपचाहो करन उपास । असन हेत बोलन गयो लोगचण्डनृपपास ॥ उन बिचसंकाभीतिकरि कही जनन सौं बात । मैंहूं कीनौं आज व्रतभूलैं भखौंन भात ॥ नृप उदायनसुनिसुबच तिहिं साधर्मीजान । खिमतखामना सुद्धमन करि कीनी तजि मान ॥ पगतैं निगड़ छुड़ायतिहिं भूखन वसन पिन्हाय । नव निधि रिधि सिधिसंगद दीनो देस पठाय ॥ ऐसैंश्रावक श्राविका साधसाधवी जोय छांडिकपटमिल परसपर दोखखिमावैं सोय ॥ गुरुजन हूंतैं शिष्यप्रति दोष खिमावैं जान । ताहूंकौं दृष्टांत अब सुनिलीजे दै कान ॥ सोकौ संबीनगरि जहं समोसरे भगवान ।चन्दसूर आये तहां चढिनिज मूलबिमान ॥ मृगावती अरु चन्दना सुभग साधवी सार । जे जिनवानी सुनि तहां चलिआई पगधार ॥ चंदसूर निज थलगये प्रथम सांझ तैं सोय ।मृगावती जिनबचन करि मेहिरही तहं जोय ॥ गईगेहनिज चंदना रही जाय तहं सोय । मृगावती हूं चेति पुनि गई तहां तिहि जोय ॥ कह्यो भली कीनी नतैं रही तहां चितलाय । सुनिसो सहि निजचूक कहि लीनी खोरि खिमाय ॥ तातैंतत छिन तासुकौं उपज्यौ केवलग्यान । लख्यो चन्दनानिकट अहि तिमिर मांहि तिहिं थान ॥ लगी निवारन ताहि तब पूछ्योचंदन बाल । काहि बिडारत को निकट कह्यौ भयानक व्याल ॥ ऐसैं निबिडत मिश्र मैं पर्यो कौन विधि दीठ । भाख्यो केवल ग्यान करि क्यों पायो सो ईठ ॥ दोषारोपन तुम कियो बिना दोष हूं मोहि । यों सहि कहि निज चूक कर जोरि खिमायो तोहि ॥ ताही तें पायो परम पदयह केवलग्यान । सुनि चन्दना खिमाय पुनि तिन हूंलह्यो निदान ॥ ऐसैं कीजे सुद्ध मन खिमत खामना सार । कपट कूड नहिं राखिये ज्यों गुरुशिष्य कुमार कुम्भकारढिग साध कौं बालशिष्य इक जाय । नित फोडे घट

तासुकेकुंभकार दुखपाय॥बरजै तरजै तासुकौंपैनहिंहारै सोय। नित्त खिमावै दोष पुनि नित अपराधीहोय॥ ऐसो कपटखिमायवो कौन कामको होय। सासु जमाई ज्यों कियो त्यों मिलि कीजे सोय॥ इक तिय बिधवा लोभिनी कृपनि बडीधनवंत।तिहिं संतत एकैसुता व्याही सुंदरकंत॥ जबीजमाई निधिनसो कृपन जमाई हेत। तनक लेसहू देयनहिं बडीप्रकतकीप्रेत ॥लोगन बहु दोषो सवे एक दिना घरिधीर। आमंत्र्योजमआयहै जानि जमाई बीर। षीर खांड तिहिं परसि पुनिघीउ तनकसोडारि। आप गई कछु काजकों तिन लीनौसबढारि॥ आयसासदुखपाय लखि बैठी जैवन संग। आपअपने मनमेंदुहूंभरेकपट रसरंग॥ सासकहे जामात सौं बलिमो वेटी हेत। कबहुंबसनभूषनन तुम लायेकरि हितहेत ॥ कहत जात यों बात अरु खैंचे घृतनिज ओर। वहुऊ ऐसी बातकहि निज दिस लेय वहोर॥ तुम काहू तिहिवार में मोहितन्योतो माय। यौं कहि खैंचैं दुऊ घृतनिज निज कहि दिस चाय ॥ जामाता तव समझिकैं लीनैं दोष खिमाय। अलियागलियाकहि दयो सिगरो घीव मिलाय॥खीर खांड घृत एक करि थाली सुकर उठाय।गयो पीय मुंह तकिरही सास हिये पछिताय॥ ऐसैं जिहिकिहि भांति करि कपट छांडि तजि क्रोध। अलियागलिया करि तजे कै तव कूढ बिरोध॥

चौवीसवीं समाचारी

तैसेंही गुरुदेव तें शिष्य खिमावै दोष । थविर साध तैं साध लघु त्यों हीं लेय सतोष॥ पिमै पिमावै और सौं करै न क्रोध विरोध।सहै उपसर्ग सवन सौं जिनबरवचन प्रबोध॥

पचीसवीं समाचारी॥

तीन काल पोसाल निज पूजै करि पडलेह । दोयबार पूजै वहां जाय साध के गेह॥

छवीसवीं समाचारी ॥

दिसविदिसन को जान जौसाधहिंहोयजरूर । आनजातीहिं जताय तब जायनिकट कै दूर ॥ क्यौंकि कदाचित साधसोतप करि निरबल देह । कै रुजकर मग मैं गिरै सोधि साधसोलेह॥

सत्ताइसवीं समाचारी ॥

काहूकाज विशेष करि वेदहोत जोसाध । जाय थानतजिअवधि तिहिं जोजन पांच अवाध ॥ तहां जाय आवै बहुर अपने हीथल फेर । जौन सकैं मगमैं रहैं ह्वांनरहैं निसबेर ॥

अठाईसवीं समाचारी ॥

समाचारि येजेकहीं सत्ताइसतिनमांह । जे विचार आचारसब कहेधरम की छांह ॥ सूत्र अर्थ जिनबर बचन जिहिं बिधि कियो वखान । आप आचरै औरजे तिनहिं करावै जान । दुहूं लोक सोभा लहै महिमा बढै अपार । अंतमुक्ति तदभव लहै करैसुद्ध बिवहार ॥ दूजेवातीजै सुभव अधिक साततैं नांह ।करम बंध सब तजि लहै परम मुक्तिकी छांह ॥ ऐसैं जिनबरश्रीश्रमनमहा-बीर भगवंत । राजग्रही नगरी जहां सिगरी सभा सुसंत ॥ साध साधवी श्राविका श्रावक देबी देव । साध सभा सुभ सजितहां बैठे जिनबर एव ॥ धर्म पजूसन पर्व के अरुताके आचार। महा-वीर भगवंत जिन यौं भाखै बिस्तार ॥

अथ कल्पसूत्र रचना ॥

बीतराग जिननाथ जे चरमतिर्थंकर सार । महाबीर भगवंत जिन तिनको यह अधिकार ॥ तिन पायो निरबान पद तब तैं कालप्रमान । नवसै अस्सी वरसजबभये वितीत निदान ॥ भयो पुस्तकारूढ यह कल्पसूत्र सो जान । बरस पांचसै दश तबै बिक्रमनृपके मान॥ जो संवत अबआज लौंविक्रमनृप अवनीस। भये अठारहसै बरस अरु तापरअड़तीस ॥ दोयसहस अरुतीन सै आठ बरस परमान। महाबीरनिरबान तैंभयो आजलौंजान॥

कल्पसूत्र कौ मूल यह प्राकृत वानी मांह । लोक असंस्कृत ताहिपढ़ि क्योंहूं समझैंनांह ॥ तैसोटीका संस्कृतभई नसमझन जोग । अरु अनेकतापर करे टब्बा जिनजन लोग ॥ एकदेस की भाष सो गुरजर देसी जान । आनदेसके जनतिन्हैं समझि न सकैं निदान ॥ यातैं यह भाषा करी जिहिं सब देसीलोग सुखसौं सब समझैं पढ़ैं बढ़ैं पुन्य सुख भोग ॥ ऐसी मतिउर आनि श्री जिनजन कुल परसंस । गोत गोखरू जैनमत ओस बंस अवतंस ॥ सभाचंद नरनाय कै अमरचंद वरराय । तिन के सुत कुलचंदनृप डालचंद सुखदाय ॥ सुघराईके सुघर अरु सौहृद सुहृद सुवान । सुभसौभाग्य सुभाग्य अरु सुठ सौजन्य सुजान ॥ गुनगाहक गुनवान पै निर्गुनग्याननिधान । समीदमी नियमी यमी हमी तमी भ्रमभान ॥ दान दसनमानद सुखदआन दयानद पीन । नरमानद मैं मगन मन परमानंद लयलीन ॥ तिन जिनजन सुखहेत अरु धर्म उद्योत विचार । कह्यो रायचंदहि चतुर उपकारी मत धार ॥ कल्पसूत्र कलिकल्पतरु भाषा टीका हेत । सो अनुसरि जिनयशबचन सिर धरलई सहेत ॥ निज मति अनुमति करि रच्यौ वच्यौ नएकप्रकार । जैसौ कछु समझौ सुन्यौ पढ्यौ चढ्यौ चितसार । जिनआगम मरमग्य जे सद्गुन सुहृद सुजान । करत बीनती दीनह्वै तिनसौं हौं अनजान ॥ न्यूनाधिकगुनदोषजो पड़ै पढ़तकहुं दीठ । लीजे चूक सुधारि धरि हियै न हसियै ईठ ॥ हौं न हौं हुंकवि और मुहि कविता कौ नहिंजोम । यह लहिकै कीजे कृपा जे जन्मन सम सोम ॥ संवत ठारह सै वरस सरस और अड़तीस । बिक्रमनृप बीतैंभई टीकाप्रशटवुधीश ॥ चैतचांदने पाखकी सुभ नौमी अभिराम । पुण्य नखत धृत जोगवर मंगलवारललाम ॥ जनम सुपारसपरसथल पुरीवनारस नाम । जनमभूमियाग्रंथ की भई छई सुख धाम ॥ पढ़ैं सुनैं नरनारि जे परब पजूसन

माँह । पापताप संताप तजि लहैं मुकतपद छांह ॥ कल्पसूत्र कलिकल्पतरु आदिनाथ जिहिं मूल । जाके जिन बाईसवर कंध साख दलफूल ॥ महाबीर बर जस जहां सुफल फल्यो फलरूप । जामें माधुरता सरस सुरस शांत रसभूप ॥ भाषा टीका सुगम यह कल्पभाष्य जिहिं नाम । ता तरु की छाया सुखद जिनजन मन बिश्राम ॥ भवतापातप दुसह दुख चह्यौ निवारन जोय । सो जन ऐसी छांह के मांहि रहै सुख सोय ॥

इति ॥

मुंशी नवलकिशोरके छापेखाने मुकाम लखनऊ में छपी
दिसम्बर सन १८८७ ई०